अरुन्धती देवी

मिथिलाक
विदुषी महिला



सम्पादन : डा. रमानन्द झा 'रमण'





मिथिलाक

विदुषी महिला

(मैथिली गद्यमय काव्य)

लेखिका
अरुन्धतीदेवी

सम्पादन :

डा. रमानन्द झा 'रमण'

अखियासल प्रकाशन

मिथिलाक विदुषी महिला : अरुन्धतीदेवी,
सम्पादन : डा. रमानन्द झा 'रमण'
Mithilak Bidushi Mahila : Arundhati Devi,
ed. by Dr. Ramanand Jha 'Raman', 2013, Rs.100/-

प्रकाशक : अखियासल प्रकाशन,
लालगंज, लोहना, सरिसब-पाही,
मधुबनी . 847424

संस्करण : पहिल संवत् 1993/1936 ई.
द्वितीय संवत् 2070/2013 ई.

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
1. प्रो. भैरवेश्वर झा, (मो. 08757408896)
लालगंज, लोहना, सरिसब-पाही, मधुबनी 847324
2. रेलवे बुक स्टॉल, जनकपुरधाम, नेपाल
3. प्रकाशक/सम्पादक : email- rnjharaman@gmail.com

मूल्य : सए टाका

मुद्रक :
कुशल कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स
लंगरटोली गली, पटना – 4
मोबाइल : 9304429215

प्राक्कथन

'आजुक मैथिल ई कहैत छथि,
स्त्री पढ़थि से पापे थिक
अधिकारहीन कर्त्तव्यहीन,
हम मूक, पंगु भऽ बैसल छी
आब चलू कोना, से कहू अहाँ,
तेँ अहीक शरणमे आएल छी।'[1]

जयन्ती देवीक कविताक उद्धृत पंक्तिमे मिथिलाक नारी-हृदयक व्यक्त व्यथा भौतिक सुखोपभोगक अभावजन्य नहि, अपितु नारी-समाजकेँ शिक्षाक अधिकारसँ वंचित करबाक पुरुष-पातक मानसिकताक विरुद्ध आक्रोशक अभिव्यक्ति थिक। मिथिलामे नारी शिक्षाक एहन दुर्गति कोना भए गेल, तथा ओहिसँ कतेक प्रकारक कुप्रथाक आखेट ओलोकनि होइत गेलीह, से बूझबा लेल मिथिलामे नारी-शिक्षाक स्थितिकेँ चारि कालखण्डमे विभाजित कए, देखि सकैत छी। ओ कालखण्ड थिक - 1. वैदिककाल, 2. बौद्धकाल, 3. मुस्लिमकाल आ' 4. उपनिवेशकाल। एहिमे प्रथम दू खण्डक चर्च स्वल्पहिमे अछि।

1. **वैदिक काल**

वैदिक कालमे[2] स्त्री एवं पुरुषकेँ समान सामाजिक प्रतिष्ठा छलनि। बाल-विवाहक प्रथा नहि छल। विधवा विवाह अमान्य नहि छल। एकसँ बढ़ि एक महान विदुषी छलीह।[3] हुनकालोकनि द्वारा निर्मित अनेक ऋचा उपलब्ध अछि। पुरुषे जकाँ स्त्री-समाजकेँ सेहो यज्ञक अधिकार प्राप्त छलनि।

2. **बौद्धकाल**

बौद्धधर्म राज्यसम्पोषित धर्म छल। ओकर उत्तरकालमे अनेकहु विकृति आबि गेलैक। छोट-छोट बालिका सभक अपहरण कए योगिनी बनाओल जाए लागल। कुमारि लोकनिक शरीर बौद्ध साधकक लेल परमानन्द प्राप्तिक एक सहज माध्यम बनि गेल। सुरक्षात्मक उपायक रूपमे समाजक समक्ष बाल-विवाह एक मात्र विकल्प छल। तत्कालीन समाजमे आठ वर्षक बालिकाकेँ गौरी आ' नओ वर्षक कन्याकेँ रोहिणीक मान्यता भेटल।[4] रजस्वला बेटीक विवाह माता-पिताक लेल महापापक कारण मानि लेल गेल। एक समयक ई सुरक्षात्मक उपाय परवर्तीकालमे सामाजिक कुरीतिक कारण बनल। कुमारिल भट्ट एवं

उदयनाचार्य सन मिथिलाक दार्शनिक बौद्धमतक दर्शनक स्तरपर खण्डन कएल। आदिशङ्कराचार्यक एहि क्षेत्रमे महती भूमिका छलनि। सनातनीक निरन्तर प्रयाससँ बौद्धमठ पुनः शिवमन्दिर भेल। बौद्ध संन्यासी शैव बनैत गेलाह।[5] शिव-परिवारक परिकल्पनासँ बौद्धधर्मक प्रति विकर्षण भेलैक तथा पारिवारिक जीवनक प्रति आस्था जागल। बौद्धकालमे स्त्रीशिक्षाक भेल ह्रासक प्रसङ्ग अरुन्धती देवी लिखने छथि - 'सनातन धर्मावलम्बीक हृदय काँपि उठल, धार्मिकताक अढ़मे बौद्धधर्मावलम्बिनीक व्यभिचार प्रारम्भ भेल, तकर कारण स्त्री-शिक्षैकेँ लोक बुझय लागल, स्त्री-शिक्षामे क्रमिक शिथिलता अभिव्याप्त भेल।'

3. **मुस्लिम-काल**

तुर्क-अफगान-मोगलक आक्रमण एवं शासनकालमे लूट-पाट आ' बलात धर्मान्तरणसँ सामाजिक जीवन अत्यन्त असुरक्षित भए गेल। विद्यापतिक पाँती 'छोटओ तुरुका भभकी मार' तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितिक द्योतक थिक। एकर सबसँ बेसी प्रभाव महिला-समाजपर पड़ल। एहि प्रसङ्ग बड़ौदाक महारानीक निष्कर्ष[6] ऐतिहासिक रूपसँ मिथिलाक महिला-समाजक लेल सेहो ओहिना सत्य अछि। आक्रान्ता शासक भए गेल। ऐतिहासिक कारणसँ ओहि वर्गमे पर्दाप्रथा छल। एहि सन्दर्भमे एम.जी. कोवन[7] विस्तारसँ लिखने छथि। शासक वर्गक रहन-सहन, आचार-विचार शासितक आदर्श भए जाएब अस्वाभाविक नहि अछि। अतएव, शासकक निकटस्थ लोकमे, जे निश्चित रूपसँ सुखी-सम्पन्न रहल होएताह, पर्दाक प्रचलन भेल। बादमे ई प्रतिष्ठाक सूचक बनल। एहि प्रसङ्ग अरुन्धतीदेवीक कहब अछि -'आततायी बलवान् मोगल-पैठानक द्वारा हिन्दूक आदर्श-पुस्तक-माला अग्निक प्रबल ज्वालामे स्वाहा होमय लागल, शिक्षाक बदला प्राण-भिक्षा प्रारम्भ भेल, सतीत्व-रक्षाक हेतु ''पर्दा'' प्रथा आओर प्रबल भय गेल, स्त्रीगणकेँ ककरहुसँ भरिमुह बजबौक सौभाग्य अकस्माते प्राप्त होइत छल। एहन संकटापन्न स्थितिमे उच्चकोटिक शिक्षालाभ अति दुर्लभ नहि तँ सुलभो नहि छल।' पर्दाप्रथाक दोसर कारण राजकीयोत्पातसँ सुरक्षित रहब छल। बादशाहक स्त्री-गुप्तचर एवं सिपाही कन्याक अपहरण करए लागल। एहन राजकीयोत्पातक वर्णन मैथिलीक ऐतिहासिक उपन्यास 'चामुण्डा'[8] मे भेटैत अछि। मिथिलाक महान दाशनिक वर्द्धमान उपाध्यायकेँ अपमानित कए शास्त्र-चिन्तनसँ विरत करबा लेल हुनक तीनू कन्याकेँ बादशाहक सेनापति द्वारा बन्दी बनेबाक प्रयास भेल। निर्भीक चामुण्डा द्वारा कारण पुछलापर सेनापति हँसिकेँ कहैत छनि - 'अपराध-तपराध की? सिर्फ़ अहाँ तीनूक वेहद खूबसुरती! देखू, खुद शाहंशाह अहाँ तीनूक ख्वावेइश्कमे अपन जान तक कुरवान करबा लै तैआर छथि। तब, फेर बाते की? चलै ने चलू, ई तँ तकदीरक खूबी.......' मिथिलाक लोकक जिह्वापर ओ घटना अद्यावधि विराजमान अछि। आ' जाहि स्थलसँ अपहरणक प्रयास भेल छल, ततय सैकड़हु वर्षसँ चामुण्डा मन्दिर अछि। लोक पूर्ण आस्था एवं भक्ति-भावसँ पूजा-चर्चा करैत अछि।

साहित्यक आधारपर मिथिलाक समाजमे नारीक स्थिति

साहित्यमे चित्रित जीवनक आधारपर तात्कालिक समाजक चित्र सहजतापूर्वक ज्ञात भए जाइत छैक। मिथिलामे नारीक स्थिति केहन छल, मैथिलीक शिष्ट एवं लोक साहित्यक आधारपर संक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत अछि।

शिष्ट-साहित्य

मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध सिद्ध साहित्यमे स्त्री-शरीरक महत्त्व अछि। ओ हुनका लोकनिक साधना-भूमि थिक। ज्योतिरीश्वर कालीन मिथिलामे नारी घोर अन्धकारक पर्याय छथि(*वर्णरत्नाकर,* तृतीय कल्लोल -'पाताल अइसन दुःप्रवेश. स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य. कालिन्दीक कल्लोल अइसन मांसल. आतङ्कक नगर अइसन भयानक'।[9]) धूर्तसमागममे जखन गुरु(विश्वनगर) एवं शिष्य (स्नातक)मे अनङ्गसेना(तरुणी वेश्या)पर अधिकारक हेतु विवाद भए जाइछ तँ ओ पञ्चैतीक लेल असज्जात मिश्रक ओतय पहुँचैत छथि। असज्जात मिश्र अनङ्गसेनाकेँ पाञ्जरमे बैसाय निर्णय करैत छथि - 'हमरिए हमरा लग अछ बैसलि, परतष हलिअ विचारी'। हमरा लग बैसलि अछि तेँ अनङ्गसेनापर हमर अधिकार अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि, ओहिकालमे नारीक अपन कोनो व्यक्तित्व नहि छलैक। ओ एक मात्र बिकाउ सामान छल। हस्तान्तरणीय समान जकाँ उपयोग होइत छलैक। विद्यापतिक गीतक अनुसार तत्कालीन मिथिलामे तीन प्रकारक वैवाहिक कुप्रथा छलैक - बहुविवाह, वृद्धविवाह एवं अनमेल विवाह। विद्यापतिक 'गोरक्षविजय नाटक'मे राजाक सङ्ग अनेक स्त्रीक रङ्ग-रभसक क्रममे गाओल जाइत गीत 'बहुल कामिनि एकल कन्त' समाजमे व्याप्त बहुपत्नीत्वक द्योतक थिक।[10] विद्यापतिक एक गीतमे मैना कहैत छथिन जे जँ बूढ़ जमाय भेल तँ आङनमे नहि रहब ('हम नहि आजु रहब एहि आङन जँ बूढ़ होएत जमाय'।) आ' दोसरठाम बूढ़क विवाहिता अपनाकेँ 'पापिन-धोछी' कहि दुख प्रकट करैत अछि।[11] आ' फेर अन्यत्र अछि 'पियामोर बालक हम तरुणी गे, कोन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी गे'।[12] ई केवल कवि कल्पना नहि भए सकैत अछि। जेना कहल जाइत अछि, धुआँ अछि तँ आगि अवश्य होएत। निश्चित रूपसँ विद्यापतिक समयमे अनमेल विवाहक प्रचलन एहू रूपमे छल होएत। कालान्तरमे एहन उदाहरण नहि भेटैत अछि। मुदा सबसँ पैघ बात अछि समाज अपन गलतीकेँ नुकेबा लेल एक ठाम राजाकेँ भगवानक रूप आ' बूढ़ वर केँ शिवक रूपमे कहि बोल-भरोस दैत अछि। अन्ततः इएह सिद्ध होइछ जे समाजमे स्त्रीक स्थान सम्माननीय नहि, भोग्येक छल।

लोक साहित्य

क. लोकगीत

लोकगीतमे लोक मानसक छवि अंकित रहैत अछि। लोक परम्परा एवं सामाजिक धारणा अभिव्यञ्जित रहैत अछि। ओहि आधारपर समाजक स्थिति की छैक, व्यक्ति-व्यक्तिक

बीचक सम्बन्धक स्तर एवं ओहिमे आत्मीयता कतेक छैक, माइ-बापक अपनहि सन्तानक लेल भावात्मक सम्बन्ध एक समान किएक नहि होइत छैक, आदि सामाजिक वा पारिवारिक स्थितिक अन्तःसाक्ष्य स्वतः लोकगीतक माध्यमेँ भेटि जाइत अछि। उदाहरणस्वरूप, बेटा आ' बेटीक जन्मपर घरक वातावरणमे होइत अन्तरकेँ देखि सकैत छी। एको सोहरमे सीता, लक्ष्मी, राधा, गौरीक जन्मक उल्लास नहि अछि, सभठाम कृष्ण भेटताह, राम भेटताह। जेना 'अवतरु नन्दकिशोर, विभूषितकुण्डल, हे ललना'। छठिआरोमे साठि गोसाउनिक आवाहन पुत्रेक सुरक्षाक लेल होइत अछि ('छठम दिन छठिआर, नगर हकारल हे, ललना, होरिला विविध प्रकार, ननदो ओङरल हे, साठि गोसाउनि आबि, सौरि भय बैसथु, हे ललना'- श्यामानन्द झा, 'व्यावहारिक गीतचन्द्रिका', 1932 ई.) पुत्रक जन्मपर भेल उल्लासक ई सभ अभिव्यक्ति थिक। साठि जे स्वयं नारीस्वरूपा छथि कन्याक सुरक्षाक लेल प्रायः नहि छथि। स्पष्ट अछि जे कन्याक अपेक्षा माइ पुत्रक प्रति बेसी स्नेहशील छथि। दोसर दिस कन्याक जन्मपर परिवारमे ओहिना अप्रसन्नता व्याप्त भए जाइछ, जेना एकटा छिन्ना लता मौला जाइत अछि। मैथिली लोकगीतमे समाजक एहि अन्तर्विरोधक उद्घाटन पूर्ण मार्मिकताक सङ्ग भेटैत अछि। जेना, कन्याक जन्मपर सासु-ननदिक कोन कथा पतिओक मुह लटकि जाएब ('सासु ननदी गे बेटी मुखहुँ न बोलए, स्वामी जी के जियरा उदास हे'[13])। कन्या नवजातक नार काटबा लेल छूरी नहि भेटब, अन्ततः खुरचनसँ नार काटल जाएब ('हँसुआ खोजइते गे बेटी छुरियो न भेटल, सितुआसँ नार कटाओल हे') एवं कन्याक जन्मसँ परिवारमे माइक जे उपेक्षा होइत छैक एवं मानसिक यातना भेटैक रहैत छैक ओहिसँ मुक्तिक लेल भ्रूणहत्याक भाव मनमे आएब ('पहिले जे जनितउँ धिया रे जनम लेत, खएतउँ मरिच पचास हे। मरिचक झाँससँ धिया दुरि जाइत, छुटितइ धियाक संताप हे')[14]। समाजमे नारीक प्रति एही उपेक्षाभावक परिणति सम्प्रति सोनोग्राफी द्वारा भ्रूणपरीक्षण आ' फेर हत्या थिक। 'पुत्रा ऽर्थे कृयते भार्या' ओही मानसिकताक अभिव्यक्ति थिक।

ख. लोकगाथा

लोकगीतहि जकाँ लोकगाथामे सेहो नारी उपेक्षित एवं अपमानित छथि। एकर उदाहरण अछि 'राजा सलहेस'क[15] नायिका दौना मालिन। दौना मालिनिकेँ जखन ज्ञात होइत छनि जे राजा सलहेसक पहरेदारीमे राजमहलमे भेल चोरिक कारणेँ मुसुक बान्ह बान्हि यातना देल जाइत छनि तँ ओ तत्काल उपस्थित भए राजासँ राजा सलहेसकेँ छोड़ि देबाक निहोरा करैत छथिन आ' कहैत छथिन जे आठ दिनक भीतर चोरि गेल माल उपरा देब। राजाक दिवानकेँ तँ सहजहिं राजाकेँ सेहो, दौना मालिनिपर विश्वास नहि होइत छनि। राजा लिखित करार कराए लैत छथि, अन्यथा नओमा दिन ओकरा राजासँ विवाह करए पड़तैक। ई शर्त किछु नहि, समाजमे नारीक क्षमताक प्रति अविश्वास एवं बलपूर्वक यौन-शोषणक उपक्रम थिक। एही लोकगाथाक चूहड़मलकेँ अनेक रानी छनि जे अन्यो जातिमे प्रचलित बहुविवाहक परिचायक थिक।

लोक साहित्य रहौक कि शिष्ट साहित्य, लेखक अथवा गाथा गायकक कल्पनाशीलता अवश्य रहैत अछि, मात्रा कम बेसी भए सकैछ। किन्तु सर्वथा निराधार रहैछ, से नहि कहि सकैत छी। ओ आधार थिक सामाजिक जीवनक हृदयक स्पन्दन। एहि स्पन्दनके ँ W.R.Gourlay[16] इतिहासक किछु व्यक्तिक शुष्क हड्डीक अपेक्षा समाजक फरिच्छ दर्पण कहल अछि।

एहि विवृत्तिसँ स्पष्ट अछि जे मिथिलाक समाजमे स्त्रीक स्थिति सम्मानजनक नहि छल। ओ शोषित आ' प्रताड़ित छलीह। हुनक बाट कण्टकाकीर्ण छल। ओ डेग-डेगपर उपेक्षाक लेल अभिशप्त छलीह। अनेक प्रकारक सामाजिक वर्जना आ' कुरीतिसँ हुनक जीवनग्रस्त छल। जतय नारीक पूजा होइत अछि, ततय देवताक वास छनि, एक आकर्षक नारा जकाँ छल।

उपनिवेश काल : मिथिलामे नारीक स्थिति

स्त्री-शिक्षाक अभाव

मुसलमानी शासनक समाप्तिपर उपनिवेशवादी शासक द्वारा आरम्भ पाश्चात्य शिक्षाक प्रसङ्ग अरुन्धती देवीक मन्तव्य अछि - 'मुसलमान-साम्राज्य-भास्कर कौटिल्यावाद रूप अस्ताचलमे सदाक हेतु लीन भय गेल, समय आयल विदेशी शासकक। एहि समयमे पुरातत्त्वान्वेष्टा सुधारवादी, नेतालोकनि ''स्त्री-शिक्षा''क घोर आन्दोलन कयल, आन-आन देशमे आन्दोलन सफल भेल, पूर्वक जकाँ दुर्द्धर्ष विद्वानक समकक्षामे पाश्चात्य विद्याक विशिष्ट विदुषी उपस्थित भेलीहि। किन्तु मिथिलामे स्त्री-शिक्षाक आन्दोलन युक्तियुक्त नहि बुझल गेल। फल ई भेल जे उन्नैसम शताब्दी मध्य स्त्री-शिक्षामे मिथिला पछुआ गेलि।'

पछुअएबाक कारण छलैक जे यवन आक्रमण एवं आधिपत्यक बाद शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलावासीक दृष्टि आत्मरक्षात्मक भए गेलनि। एकर सबसँ बेसी प्रभाव स्त्री-शिक्षा एवं हुनक सामाजिक सक्रियता पर पड़ल। शिक्षाक अर्थ स्वादिष्ट व्यञ्जन बनाएब, बच्चाक लेल वस्त्र आ' आङी-टोपी सीअब, नेना-भुटकाक लेल उपयोगी औषधिक जनतब राखब भए गेल।[17] विलियम क्रूक्स[18] सेहो लिखल अछि जे स्त्रीक लेल शिक्षाक अर्थ भए गेल गृहकार्यमे पटुता अर्जित करब। एहिना 'स्त्री-शिक्षा'[19] शीर्षक एक लेखमे कहल गेल अछि जे विश्वविद्यालयसँ डिग्री लए एम्हर-ओम्हर घूमब स्त्री-शिक्षाक उद्देश्य नहि थिक। बीसम शताब्दीक चारिम दशक धरि अबैत-अबैत अधिकांश विचारक स्त्री-शिक्षाक पक्षमे तँ भए गेल छलाह, किन्तु एहि पक्षमे नहि छलाह जे बालक जकाँ कन्यहुके ँपाठशाला पठाए शिक्षित कएल जाए।

भारतमे उपनिवेशी शासन-व्यवस्था जेना-जेना स्थिर होइत गेल, भारतवासीपर ओ अपन भाषा लादैत गेल। एहि क्रममे 1837 ई. मे कोट-कचहरीसँ पहिने फारसी हटाए अङरेजी रखलक। एहि लेल अङरेजी जानकार अमलाक काज पड़लैक। Education

Charter (1854)क अन्तर्गत अङरेजी माध्यमक स्कूल खोलबा लेल प्रोत्साहित कएल जाए लागल। 1860 मे राजदरभंगा 'कोर्ट आफ वार्ड्स'क अन्तर्गत आबि गेत तँ पूर्णतः मालिक भए गेल। ओ बालके जकाँ बालिकाक हेतु अङरेजी माध्यमक स्कूल खोलेबाक प्रयास कएल। मुदा, तकर घोर विरोध भेलैक। कारण स्पष्ट छल, मिथिलाक छनकल प्रबुद्ध लोक अङरेजक नियति गमि गेल छल एवं शंकाक दृष्टिसँ देखैत छलनि।[20] ओ शंका निराधारो नहि छलैक, किएक तँ अङरेजक नियति स्त्री-शिक्षाक प्रसार नहि, ओहि बाटे अपन धर्मक प्रचार-प्रसार छल। Minna G. Cowan स्पष्टतः लिखने छथि जे क्रिश्चयन आन्दोलनक सफलताक लेल महिलाक समस्याक समाधान प्राथमिकताक स्तरपर करबाक चाही।[21] ओ इहो लिखैत छथि जे भारतीय चर्च प्रबल सामाजिक परिवर्तनक घटक होएत एवं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपसँ गैर-इसाइपर इसाइयतक प्रभाव बढ़तैक।[22]

अङरेजी माध्यमसँ शिक्षाक प्रति मैथिलक धारणाक जनतब सरकारक स्थानीय प्रशासनके ँछलैक। ओ अपन रिपोर्टमे लिखने छल जे मिथिलाक सामाजिक स्थिति अङरेजी शिक्षाक अनुकूल नहि अछि आ' एहि दिशामे सरकारी प्रयासके ँसामाजिक क्षेत्रमे हस्तक्षेप बुझल जाएत।[23] ओ इहो लिखने छल जे कन्याके ँशिक्षित करब भाए अथवा पिताक दायित्व थिकैक आ' विवाहक बाद ई दायित्व पतिक भए जाइत छनि।[24]

विद्यावती देवी[25] मिथिलामे स्त्री-शिक्षाक स्थितिक मूल्यांकन शिक्षा विभागक वर्ष 1936 ई.क रिपोर्टक आधारपर करैत मत व्यक्त कएल अछि जे दरभंगा, भागलपुर, पूर्णिया जे मैथिली भाषा-भाषी प्रान्त कहल जाए सकैछ, तीनियों प्रतिशत बालिका शिक्षा नहि पबैत छथि। ओ मानैत छथि जे ओहि अंकमे दरभंगा, भागलपुर, तथा पूर्णियाक सब जाति सम्मिलित अछि। वास्तविक मैथिलानी तँ बहुत कम्मे होएतीह। ताहूमे 90 प्रतिशत प्राइमरीए कक्षामे होएतीह तथा 10 प्रतिशत मिडिलमे होथि तँ होथि, ताहि सँ उपरक तँ प्रायः चर्चे व्यर्थ। एहूमे एक बात विचारणीय अछि अर्थात् दरभंगा जिला जे मध्य मिथिला कहल जाइछ सबसँ अधिक पछुआएल अछि, ताहिसँ किछु कम भागलपुर, तदुत्तर पूर्णियाक नम्बर अछि। मानू स्त्री-शिक्षा मिथिलाक हेतु खास कए वर्जित अछि। ई पुरुष समाजक स्त्री-शिक्षाक अवहेलनाक फल थिक। ई सरकारी रिपोर्ट अरुन्धतीदेवीक अभिमतके ँसेहो पुष्ट करैत अछि।

उपनिवेशवादी सरकार आ' ओकर शिक्षा-व्यवस्थापर मैथिल समाजक शंका भलहि निराधार नहि रहल हो, किन्तु इहो ऐतिहासिक सत्य अछि जे आधुनिक शिक्षामे पछुअएबाक कारण सेहो इएह भेल। जेना अरुन्धती देवी अपन व्यथा व्यक्त कएने छथि ओहिना मैथिलीक अनेकहु लेखिकाक एहि प्रकारक व्यथा अछि। मुदा स्त्री-शिक्षाक प्रति पुरुषवर्गक ई दृष्टिकोण क्रमशः शिथिल होइत गेल। विशेषतः स्वाधीनताक बाद जखन पारम्परिक सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था टूटल, आजीविकाक साधन कम भेलैक एवं शहरापन्न नवयुवकके ँअन्य क्षेत्रक शिक्षित स्त्री-समाजके ँदेखि ग्लानिक बोध होअए लगलनि।

पर्दाप्रथा

मिथिलामे पर्दा नहि, लज्जाक महत्त्व सर्वोपरि छलैक। भगवती दुर्गाकेँ हम सब 'लज्जा रूपेण संस्थिता' कहि पूजैत-जपैत छी। किन्तु जखन यवन आक्रमण, आधिपत्य, सम्पर्क एवं राजकीयोत्पातक कारण मिथिलामे पर्दाप्रथा अपरिहार्य भए गेलैक तँ तकर सबसँ बेसी प्रभाव स्त्री-समाजपर पड़ल। अरुन्धती देवी लिखैत छथि - 'पर्दाप्रथा आओर प्रबल भय गेल, स्त्रीगणकेँ ककरहुसँ भरिमुह बजबौक सौभाग्य अकस्माते प्राप्त होइत छल।' एहिसँ स्त्री-समाजक सामाजिक सक्रियता कोनटा धरि समटा गेल। बीसम शताब्दीक पहिल दशकमे संयुक्त प्रान्त आ' बङ्गालमे 'भारत स्त्री मण्डल'क स्थापना भेलैक, 1909 ई. बम्बइ मे 'गुजराती स्त्री मण्डल' एवं 'द सेवासदन' अथवा The Sisters Ministrant क स्थापना भेल। देश-काल एवं ज्ञान-विज्ञानक शिक्षाक हेतु ओतय 'पर्दा लेक्चर'क व्यवस्था कएल जाइत छल। बड़ौदाक महारानी देश-विदेश भ्रमण कए ओहिठामक स्त्री-समाजक अध्ययन कएल। किन्तु मिथिलामे विभिन्न पुराणक वाचन द्वारा धार्मिक एवं स्त्री-धर्मक शिक्षा देल जाइत छल। गोपाल कृष्ण गोखलेक कहब मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो सत्य अछि जे एहि प्रकारक कथावाचनसँ स्त्री-समाजमे नवोन्मषक प्रतिभा कम भए गेलैक।[26]

मिथिला मिहिर[27] मे प्रकाशित समाचारक अनुसार 22 जून, 1928 ई. केँ मुजफ्फरपुरमे एक स्त्री-सम्मेलन भेल छल। ओहि सम्मेलनमे अनेक प्रस्ताव पारित भेलैक। तीन सएसँ बेसी महिला भाग लेलनि। सम्मेलनक समस्त व्यवस्था महिलालोकनिक हाथमे छलनि। बी.बी.कालेजक हॉलमे रातिमे 'शकुन्तला नाटक' भेलैक। ओहिमे सभटा महिले कलाकार छलीह। दर्शकमे किछु आमन्त्रित पुरुषलोकनि सेहो छलाह। 'मिहिर' आयोजनक स्वागत कएने अछि। किन्तु मिथिलाक तात्कलिक सामाजिक एवं स्त्री-शिक्षाक स्थिति देखि एहि बातक सम्भावना कमे अछि जे उच्चवर्गक महिला-समाजक सहभागिता रहल होएत। संगठन-आयोजनक मार्गमे सबसँ बेसी जे बाधक अछि, से थिक अशिक्षा एवं पर्दाप्रथा। मिथिलामे ई दूनू प्रबल बाधक रहल अछि।

पर्दाविरोधी आन्दोलन - 'मिथिला'[28]क सम्पादकीय टिप्पणीक अनुसार दरभंगा जिलाक पतौर ग्राम निवासी जमिन्दार पं. रामनन्दन मिश्र 'सावरमती आश्रम'मे महात्मा गाँधीसँ सपत्नीक भेट कए घुमलाह तँ पर्दाप्रथाक उन्मूलनक हेतु आन्दोलन आरम्भ कएल। महात्मा गाँधीक आदेश पर मगन गान्धीक पुत्री सेहो सङ्ग आएल छलथिन। रामनन्दन मिश्र अपन गामक निकट मझौलियामे 'मगन आश्रम' स्थापित कएलनि। ओहि आश्रममे हुनक पत्नीक अतिरिक्त अन्यो स्त्रीगण रहैत छलीह। गाम-गाममे पर्दा विरोधी सभा होअए लागल। पर्दाप्रथाक विरोध क्रमशः बढ़ैत गेलैक। आश्रममे चर्खाक शिक्षाक सङ्गहि, पर्दाप्रथाक बहिष्कार कोना कएल जाए, तकरहु व्यावहारिक शिक्षा देल जाइत छलैक। यद्यपि, आधुनिक शिक्षाक विरोधी एवं पर्दाप्रथाक समर्थक द्वारा एहि आन्दोलनक विरोध

भेल, तथापि पर्दाप्रथाक विरोधमे मिथिलामे उठल स्वरक 'मगन आश्रम' प्रतीक भए गेल अछि।

शिक्षाक विकास, सामाजिक स्थितिमे परिवर्तन एवं शहर-पलायनसँ जतय पहिने बेटी-जमाय अथवा बेटा-पुतहु परिवारक श्रेष्ठ सदस्यक समक्ष गप्प नहि करैत छलीह, से आब नहि रहल। सिनेमाक प्रभावसँ कट्टर परिवारहुमे 'रिंग सेरोमनी' एवं 'जयमाल' होइत देखल जाइछ। आब किनसाइते कोनो आङनमे सिरकी देखबामे आओत, तथापि ग्रामीण मिथिला विशेषतः तथाकथित उच्चवर्गमे पहिने जकाँ तँ नहि, मुदा पर्दाप्रथाक अवशेष औखन देखबामे आओत। एहि कारणसँ ने तँ ओ अपन स्वास्थ्यक रक्षा कए पबैत छथि आ' ने सम्पत्तिहिक रक्षामे समर्थ छथि।

सतीप्रथा

सतीप्रथा कहिआ आ' कोना आरम्भ भेल तकर जड़िमे जाएब हमर सम्प्रति अभीष्ट नहि, मुदा अठारहम शताब्दीक अन्त होइत-होइत ई विकराल रूप धारण कए हृदय विदारक भए गेल छल, से अवश्य। ई दू प्रकारक छल - सहमरण एवं सहजलन। सहमरणक घटना विरल छल। सहजलन सामान्य बात छल। उच्चवर्गमे ई एक धार्मिक प्रथा बनि गेल छलैक। सतीकेँ लोक श्रद्धाक दृष्टिसँ देखैत छल। ओ पूज्य भए जाइत छलीह। सहजलन सदिखन स्वेच्छासँ नहि होइत छलैक। सम्पत्ति-लोभ एवं असुरक्षाक भाव सामान्य कारण छल। फ्रांसिस बुकानकेँ तिरहुतमे एकहुटा सतीक घटना नहि भेटल छलनि।[29] जखन कि शाहाबादमे सतीक हेतु गाम-गाममे चबूतरा बनल देखल। परन्तु म.म. परमेश्वर झा[30] लिखने छथि जे राजा राघव सिंह (1701-1739 ई.)क पत्नी राघवप्रिया सती भेल छलीह। भौरागढ़ीमे (मधुबनी शहरसँ दक्षिण) हुनक चितापर सतीमठ अछि। तिरहुतमे सतीक घटनामे कमीक कारण लोकक सहनशीलता, अल्पहिसँ सन्तोष, लड़ाइ-भिराइक काजमे विशेष अभिरुचिक अभाव तथा स्त्री-समाजमे असुरक्षाक कमी रहल होएत।

एहन अमानुषी प्रथाकेँ रोकबाक कानूनी अधिकार इस्ट इंडिया कम्पनीक सरकार केँ नहि छलैक। एहि सन्दर्भमे जखन शाहाबादक तत्कालीन जिलाधिकारी एम.एच.ब्रूक 28 जनबरी, 1789 ई.क अपन पत्र द्वारा लार्ड कॉर्नवालिससँ आदेश माङ्गल तँ कहल गेलनि जे बूझा-सूझाकेँ काज कएल जाए।[31] तथापि, इस्ट इंडिया कम्पनीक पदाधिकारी सतीप्रथाकेँ रोकबाक प्रयास अपना स्तरसँ करैत रहलाह। आ' जखन लार्ड बेंटिकक समयमे सतीप्रथापर प्रतिबन्ध लागल तँ परम्परावादी सभ, तकर घोर विरोध कएल।

सामाजिक कुप्रथा : सुधारक प्रयास

कन्यादान एक एहन समस्या अछि जाहिसँ ने कोनो काल आ' ने कोनो समाज अप्रभावित रहल अछि। राजा जनककेँ सेहो कन्यादानक समस्या भेल छलनि। मुदा, पहिने वरणक सुविधा छल जे सामाजिक, राजनैतिक आ' ऐतिहासिक कारण सभसँ समाप्त भए गेल। समयक सङ्ग नव-नव समस्या उत्पन्न होअए लागल। ओहि समस्या सभमे प्रमुख

अछि - बहुविवाह, अनमेल विवाह, बाल-विवाह एवं विवाहमे दहेज वा लेन-देन। दहेज एवं लेन-देनक समस्याक गर्भसँ एक और समस्या आधुनिक कालमे जनमल जे पकडुआ विवाह थिक।

बहुविवाह

मिथिलामे बहुविवाहक कारण पञ्जीप्रथाकेँ मानल जाइत अछि। एहि प्रथाक प्रारम्भक प्रसङ्ग मातान्तर अछि। किछु गोटे मिथिलाक महान दार्शनिक कुमारिल भट्टकृत 'तन्त्रवार्तिक'मे उल्लिखित 'समलेख्य'क विकसित रूप मानैत छथि। जखन अपन-अपन वंश-अभिलेखक रखबाक क्षमताक अभाव होअए लगलैक, एक सुयोग्य एवं सक्षम व्यक्तिकेँ तकर दायित्व देल गेलनि, ओएह व्यक्ति पञ्जीकार भेलाह। कारण जे हो, मुदा सम्प्रति पञ्ची-प्रबन्ध केँ मिथिलाक कर्णाटवंशी राजा हरिसिंह देवक (1307-1324 ई.) सङ्ग जोड़ि ओहिना देखल जाइछ, जेना बङ्गालमे कुलीन प्रथाकेँ बल्लाल सेनक सङ्ग जोड़ि देखल जाइत अछि। समाजक प्रमुख राजा होइत छलाह, तेँ पञ्जी प्रबन्धपर सेहो हुनक रुचि आ' शासकीय प्रयोजनक प्रभाव पड़ैत रहल। मैथिल ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थमे सांस्कृतिक समानता छल, एहि दूनू जातिक वैवाहिक सम्बन्ध अन्य क्षेत्रीय ब्राह्मण वा कायस्थक सङ्ग नहि होइत छलैक, तेँ एही दू जातिक पञ्जी-व्यवस्था विकसित भेल एवं अद्यावधि प्रभावी अछि।

उपनिवेशवादी शासक अपन वर्चस्वक लेल 'डिवाइड एवं रूल पालिसी' अपनौलक। देशकेँ बंटलक। मिथिलाक परवर्ती राजालोकनि अपन वर्चस्वक लेल सामाजिक समरसताक सूतकेँ खींचि ब्राह्मण-समाजक विभाजन कएल। विभेदमूलक ई विभाजन सामाजिक असन्तोषक कारण बनल आ' अद्यावधि ओहिसँ मुक्त नहि भेल अछि। कविवर सीताराम झा प्रायः ओही सामाजिक विकृतिकेँ देखि लिखने छल होएताह - 'पाँजिक गर्वपर माँजी जनौ, न पुनि आँजी-सिधी न सिखलौं।'[31क]

तथाकथित निम्नश्रेणीक बहुसंख्यक ब्राह्मण-समाजमे कतेको गोटे विद्यावन्त एवं श्रीसम्पन्न छलाह, तथापि सामाजिक जीवनमे ओ प्रतिष्ठा नहि छलनि, जे उच्चवर्गक अपाटहुकेँ प्राप्त छल। किन्तु आर्थिक सम्पन्नता अपन बाट ताकि लेलक। कहि सकैत छी जेना आइ-काल्हि श्रीसम्पन्न आ' प्रभावशाली बापक बेटा पर्याप्त 'डोनेशन'क बलपर नीकसँ नीक शिक्षण-संस्थानमे नामांकनमे सफल भए जाइछ, ओहिना उच्चश्रेणीक ब्राह्मणक सङ्ग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भेलापर सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित कए लेबाक बाट प्रशस्त भए गेलैक। एहिसँ आर्थिक जगतक माङ्ग आ' आपूर्ति सिद्धान्त सामाजिक जीवनमे फलित होअए लागल। ओसब दोसर, तेसर चारिमसँ पचास-साठि टा धरि विवाह कए अपन जातिकेँ भजबैत रहलाह। विवाह नहि बिकाए लगलाह। एहिसँ मैथिल ब्राह्मण समाजमे एक नब वर्गक जन्म भेल। नामकरण भेलनि 'बिकौआ'।[32] बिकौआकेँ ने पत्नीक प्रति प्रेमभाव रहैत छलनि आ' ने सन्तानक प्रति दायित्वबोघ। राजस्व कर्मचारी जकाँ सालमे एक बेर जाए ससुर अथवा पत्नीसँ कर ओसूलि अनैत छलाह। काज पड़लनि तँ

ओहिमेसँ ककरो राखिओ लैत छलाह। अन्यथा, ओ आजीवन नैहरेमे रहैत छलथिन। एहनहि स्थितिमे लोक कहय लागल छल होएत, 'जकरे सैं मानै, सेहे सोहागिनि।'

अपना सबहक ओहिठाम एकटा कहबी छैक, 'अगहनमे मूसोकेँ सात टा बौह'। ई सम्पन्नताक द्योतक थिक। ब्राह्मण सबहक सम्पर्क सामान्यतः राजकुलसँ भए जाइत छलनि। ओ अपन आश्रयदाताकेँ एकसँ बेसी पत्नीक सङ्गे सुखोपभोग करैत देखैत छलाह। रानीक सहचरीक रूपमे सैकड़हु ललित-लवङ्गी सब हुनक रनिवासमे रहैत छलथिन। सहज-जीवन आ' उच्चविचारक मन्त्री अथवा राजपुरोतिकेँ आर्थिक सम्पन्नता तँ भइए जाइत छलनि, कतेक दिन अपन जीहकेँ जँतने रहितथि।

बिकौआ प्रथाक मिथिलाक समाजपर प्रलयंकारी प्रभाव पड़लैक। एहि प्रभावक विस्तृत वर्णन जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक रिपोर्टमे अछि।[33] एक बिकौआक मृत्युपर पचास धरि विभिन्न आयुवर्गक हुनक पत्नी विधवा भए जाइत छलथिन। आ' हुनक जेठपुत्र केँ विमाताक श्राद्धसँ स्वाच्छन्न नहि भेटैत छलनि।

मनुस्मृतिमे बहुविवाह अनुचित मानल गेल अछि। एतेक धरि जे कोन-कोन परिस्थितिमे दोसर विवाह करबाक चाही तकरो विधान अछि। ओ कहैत अछि जे जाहि कुलमे नवविवाहिता कन्या अथवा पुतहु शोचमे हो, ओहि कुलक विनाश सुनिश्चित अछि, विनाशक कारण धनक्षय - राजकृत अथवा दैवकृत भए सकैत अछि। आ' जतय ओ सुखी रहैत छथि, सभ क्षेत्रमे संवृद्धि होइत छैक।[34] याज्ञवल्क्यस्मृति सेहो बहुविवाहक सर्वथा प्रतिकूल अछि। किन्तु मिथिलाक पण्डित आ' शास्त्रकार ब्राह्मण समाज बहुविवाह करैत-करबैत रहलाह। मिथिलाक समाजकेँ गर्तमे धकेलैत रहलाह।

बहुविवाह : उन्मूलनक प्रयास

मिथिलामे प्रचलित बहुविवाह कुप्रथाक उन्मूलनक प्रयासकेँ चारि चरणमे बाँटि देखि सकैत छी -

1. राजा माधव सिंहक प्रयास,
2. मुंशी प्यारेलालक प्रयास,
3. अखिल भारतीय मैथिल महासभाक प्रयास, एवं
4. आधुनिक शिक्षाक प्रभाव।

1. राजा माधव सिंहक प्रयास

सामाजिक कुप्रथाक उन्मूलनक क्षेत्रमे आजीवन प्रयत्नशील राजा माधव सिंह (1775-1807 ई.) बहुविवाहपर कानूनी प्रतिबन्धक हेतु दिवानी अदालत, सरकार तिरहुतसँ अनुरोध कएल जे चारिसँ बेसी विवाहपर रोक लगा देल जाए।[35] हुनक तर्क छल जे एहिसँ समाजमे कुप्रथाजन्य विकृति पसरैत अछि। दिवानी जिला तिरहुत द्वारा 26 अगस्त 1795 ई. (5 भादो 1200 एफ.) केँ बहुविवाहक विरुद्ध आदेश पारित कए कहल गेल जे एहि आदेशक उल्लंघनकर्ताकेँ दण्डित कएल जाएत। किन्तु बिकौआ प्रथाक समर्थक अदालतक

एहि आदेशपर कान-बात नहि देलनि। पुनः राजा माधव सिंह अदालतक समक्ष एहि समस्याकेँ आनल। सरकार तिरहुतक दिवानी अदालत 9 जुलाइ, 1798 ई. केँ पुनः आदेश कएलक।[36] ओहिमे कहल गेल अछि जे एहि आदेशक उल्लंघन करताह एवं सिद्ध भए जाएत तँ कठोर दण्ड भेटतनि।

बहुविवाहक रोकबाक सम्बन्धमे राजा माधव सिंहक एहि प्रयासक प्रशंसा राजा राममोहन राय सेहो कएने छथि।[37] एहिसँ ई सिद्ध होइछ जे राजा राममोहन रायसँ पहिने विवाह सम्बन्धी सामाजिक कुप्रथाक उन्मूलनक प्रयास राजा माधव सिंह कएने छलाह।

अठारहम शताब्दीक मिथिलामे सामाजिक सुधारक क्षेत्रमे एक और महत्त्वपूर्ण प्रयास भेल छल। मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे बसल सोति समाजक लोककेँ दरभंगाकेँ केन्द्रमे राखि बीस मीलक परिधिमे बसाएब। जे पछाति 'सोतिपुरा'क नामसँ ख्यात भेल। सोति लोकनि अपन जातीय प्रधान दरभंगाक राजा-महराजाकेँ मानि लेल आ' ओहो सोति समाजक खिआल राखय लगलाह। वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबामे राजाक अनुमति आवश्यक कए देल गेलैक।[38] ई अनुमति पञ्जीकारक प्रमाणपत्रपर देल जाइत छल जे दरभंगाक अन्तिम महाराज कामेश्वर सिंहक जीवन-काल (1907-1962 ई.) धरि प्रभावी रहल। एहि अनुमतिक नामकरण भेल 'परमानगी'। एहि व्यवस्थासँ एकपत्नीव्रती तँ नहि, मुदा अनुमत सीमाक उल्लंघन अवश्य थम्हि गेलैक। 'बिकाएब'क अर्थ बहुविवाह नहि रहल, अर्थलाभसँ प्रेरित भए तथाकथित निम्न श्रेणीक लक्ष्मीपुत्रक सङ्ग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कए घरजमाय बनब भए गेल। सोतिपुराक आन-आन गामक की स्थिति छल से तँ अनुसन्धान सापेक्ष अछि, मुदा बीसम शताब्दीमे हमरहि गामक अयाचीक दू वंशजक वैवाहिक सम्बन्ध पूर्णियाक राजपरिवारमे भेल छलनि। ओहिमे एकक सन्तानमे मैथिलीक सुविख्यात लेखिका श्रीमती लिली रे छथि।

एहि व्यवस्थाक गर्भसँ किछु एहन विकृति एवं समस्या सभ जनमल जे समाज केँ ग्रसित कएने रहल। ओहिमे प्रमुख अछि -

1. सोतिपुरा बसौल गेलापर अधिकांश लोक कोशीक पूबसँ आनल गेल छलाह। एहि हेतु सम्भवतः सोतिसभक लेल 'पूबारिपार' आ' शेष मैथिल ब्राह्मणक लेल 'पछबारिपार' सन विभेदक वर्गीकरण कएल गेल। ई विभाजन सामाजिक दूरत्व बढ़ेबामे सहायक भेल।

2. जेना सम्प्रति मन्त्री/अधिकारीक सम्बन्धी/समीपी लोक अपनाकेँ असामान्य श्रेणीक नागरिक मानय लगैछ, ओहिना राजदरभंगाक समीपी होएबाक अहंभावमे ओङठल सोतिसमाज ब्रह्मोत्तर भोगैत 'आलस्यदेव'क उपासक बनि गेल।

3. एहि व्यवस्थाक शीर्षपर राजदरभंगा छल, तेँ 'बारब' एवं 'उठाएब' अथवा अपन विरोधीकेँ मानसिक यातनाक लेल, एक सामाजिक अस्त्रक रूपमे 'परमानगी'क प्रयोग, एक सामान्य बात भए गेल छलैक।

मुंशी प्यारे लालक प्रयास

शाहाबाद निवासी मुंशी प्यारेलाल सरकारी नोकरी छोड़ि पहिने अपन समाजमे व्याप्त वैवाहिक कुप्रथाक निराकरणक हेतु आन्दोलन आरम्भ कएल। हुनक ई आन्दोलन ततेक

लोकप्रिय भेलैक जे अङरेज सरकारक सहयोग पाबि अर्द्धसरकारी भए गेल। बिहारक विभिन्न जिलामे शाखा खोलल गेलैक। दरभंगामे स्थापित शाखाकेँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक पूर्ण सहयोग भेटल। हुनक दूनू काकाजी महाराज कुमार गुणेश्वर सिंह एवं महाराज कुमार गोपेश्वर सिंह ओहि समितिक सदस्य बनौल गेलाह। 'मधुबनी विवाह समिति'क नामसँ ख्यात मुंशी प्यारे लालक सुधार आन्दोलनक मुख्य दू टा बिन्दु छलैक -

1. विवाहमे खर्च कम करब, तथा
2. मैथिल ब्राह्मणमे बहुविवाहकेँ रोकब।

मधुबनीक तात्कालिक एस.डी.ओ. जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक अध्यक्षतामे 15 दिसम्बर, 1878 ई. केँ भेल बैसारक रिपोर्टक[39] अनुसार निम्नलिखित बिन्दुपर चर्चा भेल-

1. कन्याक विवाहमे टाकाक माङ,
2. विवाहक हेतु कन्याक बिक्रय,
3. एक बिकौआक मृत्युपर हुनक अनेक पत्नीक आजीवन दारुण वैधव्य,
4. माता-पिताक विपन्नताक कारण छोट कन्याक वृद्ध अथवा अपङ्गक सङ्ग विवाह,
5. कन्या भ्रूणहत्या,
6. कन्याक विवाहमे विलम्बसँ अनाचारक सम्भावना, एवं
7. विवाहमे कर्ज।

व्यापक दृष्टिक 'मधुबनी विवाह समिति'क सदस्य सभाक समय सौराठ जाए पूर्ण जाँचक उपरान्त विवाहक अनुमति प्रदान करैत छलाह। पञ्जीकारकेँ स्पष्ट आदेश छल जे बहुविवाहीकेँ अनुमति प्रदान नहि करथि। किछुकेँ दण्डित सेहो कएल गेल। कन्यागत एवं वरागत द्वारा कएल गेल खर्चक जाँच समितिक सदस्य करब आरम्भ कएल तँ खर्चकेँ नुकेबाक यत्न होअए लागल। किछु गोटे मुंशी प्यारे लालक नेतृत्वपर हुनक सामाजिक स्तरक दृष्टिसँ शंका कएल। मुंशी प्यारेलाल एवं महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक देहावसानक उपरान्त एहि आन्दोलनक प्रभाव क्रमशः शिथिल होइत गेल।

राजा माधव सिंह अथवा मुंशी प्यारेलालक प्रयासकेँ पूर्ण सफलता नहि भेटबाक इहो कारण भेल होएत जे मिथिलाक राजा/महाराजा अथवा हुनकर कुल वा सम्बन्धीवर्गक लोक अपन व्यक्तिगत जीवनमे एकपत्नीव्रती नहि छलाह। प्रायः अधिकांशकेँ दू विवाह अवश्य छलनि। अबू फजल[40] लिखने छथि जे राजाकेँ छोड़ि, पहिल स्त्रीक जीवित रहैत दोसर विवाह नहि करबाक चाही, से प्रायः मिथिलाक सभ सुखी-सम्पन्न लोक अपना केँ राजा मानि लेने छलाह। तथापि, जेना जॉन बिम्स[41] अपन संस्मरणमे लिखने छथि जे उत्कलक एक राजा प्रत्येक वर्ष एक विशेष अवसर पर विवाह करैत छलाह, एवं साठिक उपर विभिन्न आयुवर्गक रानी छलथिन, से स्थिति तँ मिथिलामे नहि छल।

अखिल भारतीय मैथिल महासभाक प्रयास

मिथिलामे जातीय संगठनक महत्त्व नहि छल। उनैसम शताब्दीक अन्तिम पहरमे जखन राष्ट्रीय क्षितिजपर सुधारवादी आन्दोलनक सङ्ग जातिवादी संगठन बनय लागल आ'

1909 ई. मे महाराज रमेश्वर सिंह लाहौरमे आयोजित अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभाक सभापतित्वक बाद देश आपस अएलाह तँ अखिल भारतीय मैथिल महासभाक स्थापनाक विचार भेलनि। एहि प्रसङ्ग मन्त्रणा कएल। आ' निर्णय भेल जे मैथिल ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थ जे भिन्न जातिक (जेना कान्यकुब्ज, शाकद्विपीय वा गौड़ ब्राह्मण अथवा अम्बष्ठ, श्रीवास्तव आदि कायस्थ) ब्राह्मण एवं कायस्थक सङ्ग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहि करैत छलाह, तेँ सांस्कृतिक समानाताकेँ देखैत एहि दूनू जातिक एक अखिल भारतीय संस्थाक गठन कएल जाए। एकर लक्ष्य निर्धारित करबाक हेतु गाम-गाममे जे सभा कएल गेल, तकर मूल विषय सामाजिक दुर्गुण निवारण रहैत छल। ओहूमे वैवाहिक समस्या मुख्य छलैक। महासभाक पहिल अधिवेशन महाराज रमेश्वर सिंहक अध्यक्षतामे 26 मार्च, 1910 ई. केँ मधुबनीमे भेल। सामाजिक दुर्गुण-निवारणक हेतु 'नओ सूत्री'[42] मार्गदर्शन पारित भेल। ताधरि मुद्रणक सुविधा भए गेल छलैक एवं मैथिलीमे अनेक पत्रिका प्रकाशित होअए लागल छल। लेखक लोकनिसँ अनुरोध कएल गेल जे तदनुकूल साहित्यक सर्जना करथि। एहिसँ बहुविवाहक विरुद्ध मानसिकताक निर्माणमे अनुकूल प्रभाव पड़ए लागल। उदाहरण अछि 'मिथिला मिहिर'मे प्रकाशित एक रिपोर्ट जकर शीर्षक छैक 'गत सौराठ सभा'।[43] एहि रिपोर्टमे उल्लंघनकर्ता पर कोन तरहेँ प्रहार कएल गेल, जे द्रष्टव्य अछि -

1. एहि सङ्ग एक लज्जाक विषय जे बहुतो लोक हमरा सबहिकेँ उपालम्भ ओ हास्य करैत छलाह - जे परोपदेशेपाण्डित्य..- अहाँ सभैक नेता बाबू बदरीनारायण उपाध्याय स्त्री, पुत्र, जमाय, दौहित्र, दौहित्रीपुत्र रहैत पुनः भरामक श्रीकारी ठाकुरक कन्यासँ विवाह कयलन्हि अछि - इत्यादि वास्तव ई निन्दास्पद विषय सूनि ग्लानि होइ छल - साध्य की? अस्तु उपाध्यायक एहि आचरणसँ हुनक जमाय श्री चन्द्रभूषण बाबू वकीलक गत वर्षक विवाहजन्य अपयश परिमार्जित भए गेल।

2. एक अभिनव विषय पश्चात ज्ञात भेल जे मानेचौकक प्रसिद्ध पण्डित श्रीमधुसूदन झाक बालक अपन सारिसँ पाली गाँवमे विवाह कयलन्हि, जखन पहिल स्त्री जीविता छथिन्ह। एकर आन्दोलन ओहि प्रान्तमे अछि। पण्डित लोकनि एहि गम्भीर विषयपर समुचित विचार-प्रकाश करथि।

3. खेदक विषय जे भागलपुर तथा पूर्णिया जिलाक कतोक व्यापक वंशावतंश आबहु बिकौआसँ सम्बन्ध करब नहि छाड़ल अछि। ताहू सँ भयावह तँ अङरेजी शिक्षित ओ अर्द्धशिक्षित नवयुवक सभैक हजार दू हजार दाबी।

आधुनिक शिक्षाक प्रभाव

बहुविवाहकेँ रोकबामे आधुनिक शिक्षाक महत्त्वपूर्ण हाथ छैक। मिथिलाक युवावर्गक परिचय आन-आनक समाजक लोकसँ भेल। एहिसँ दृष्टि व्यापक भेलनि। मिथिलाक एहन सामाजिक दुर्गुणक चर्चापर ग्लानिबोध होनि। बहुविवाहीकेँ लोक घृणाक दृष्टिसँ देखए लागल।

बालविवाह

मैथिल ब्राह्मणमे बालविवाह सामान्य बात छल।[44] विवाहक लेल कन्याक आदर्श आयु दश वर्ष छल। ओहिसँ बेसी होइतहि 'अज्जगि'क उपाधि भेटि जाइत छलनि। बेटाक विवाहक बन्धन उपनयन छल। से होइतहिं माइ-बापकेँ पुतहुक मनोरथ तीव्र भए जाइत छलनि। विवाह की होइत अछि? ओकर कोन सामाजिक प्रयोजन छैक, ने शारीरिक रूपसँ आ' ने मानसिक रूपसँ भिज्ञ रहैत छल। मुदा, माइ-बापक मनोरथ पूरा भए जाइत छल। एकर दुष्परिणाम भोगैत छलीह कन्या लोकनि। जँ दुर्भाग्यवश विधवा भए गेलीह तँ पूरा जीवन दुखोदधिमे आकण्ठ डूबल रहि जाइत छलनि। आनक कोन कथा अपनहु भाए-बहिनिक माङ्गलिक काजक अवसरपर हुनक उपस्थिति अशुभ भए जाइत छल। पण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्र[45] लिखने छथि - 'एहिठाम विद्या, शारीरिक स्वास्थ्य, आ' वयसक गणना नहि कएल जाइत अछि। एहिठाम महादेव झा आ' श्रीकान्त झाक चलती अछि, भलहि वर दश वर्षक होथि वा कन्या पाँच वर्षक तकर कोनो चिन्ता नहि, भलहि वरक शरीर रोग जर्जर हो, वा मूर्खाधिराज रहथि, एहिसँ कोनो मतलब नहि, किछु हो पञ्जीक विचार जरूरी, परमावश्यक। चौदह-चौदह वर्षक बालकक दू-दू टा विवाह भेटि जाएत। फ्रांसिस बुकानन[46] सेहो अपन रिपोर्टमे लिखने छथि जे दन्तहीन, आ' मरणासन्न व्यक्ति सेहो कम आयुक कन्यासँ विवाह कए लैत छथि।

मिथिलामे बालविवाहक सम्बन्धमे दू टा घटनाक उल्लेख करए चाहब। ई दूनू घटना मैथिलीक लेखिकासँ सम्बन्धित अछि। पहिल छथि मिथिलाक विदुषी महिला हरिलता (मोदवती, देखू पृ.सं. 70) आ' दोसर छथि 'मिथिलाक विदुषी महिला'क लेखिका अरुन्धती देवी स्वयं। एहिमे पहिल घटना हमर घरक थिक आ' दोसर घटना हमर गामक। हमर पितामह अपन कन्याक विवाह सात वर्षक अवस्थामे मिथिलाक राजकुल, खण्डवला कुलमे कएल। राजकुलक परम्पराक अनुसार ओ बेदीएपरसँ सासुर चलि गेलीह। विवाहक वाद विशेष अवसरहिपर बेसीसँ बेसी भरि दिनक लेल नैहरमे रहि सकैत छलीह। आगमनसँ पहिने डेउढ़ीसँ लाम-लस्कर राजसी व्यवस्थाक हेतु अबैत छल। सामाजिक प्रथाक अनुसार हमर पितामही बेटीक सासुर माङ्गलिक अवसरक बादहि जाए सकैत छलीह। सात वर्षक बालिका-बधूक माइसँ भेंट दुर्लभ छल। अन्ततः सकरी स्टेशनक उत्तर सड़कक पूब आवश्यक सुविधासँ युक्त एक परिसरक निर्माण कराओल गेल। जतय समय-समयपर माइ-धीक भेंट होइत छल। एक पुत्रक जन्मक बाद मात्र सोलह वर्षक अवस्थामे मोदवती विधवा भए गेलीह। हुनकामे पढ़बाक अदम्य आकांक्षा छल। किन्तु तकर अनुमति नहि छलैक। तथापि, ओ विश्वस्त लोकक माध्यमेँ मुंशीजीसँ वर्णमाला लिखाए, डेओढ़ीक बाड़ीक गाछतर बनल चबूतरापर चोराकेँ माटिसँ अक्षर सीखय लगलीह। जखने कोनो खबासिनि देखि लेनि आ' सासुकेँ कहि देबाक धमकी देनि तँ वर्णमाला फाड़ि फेकि देथि। ई क्रम चलैत रहल। पछाति ओ स्वाध्यायसँ शास्त्रज्ञ भए गेलीह। शास्त्र-पुराण बांचथि। पतरा

देखथि। गणना कए दिन ताकथि। ससुरक देहान्त आ' पुत्रक बालिग होएबा धरि जमिन्दारीक प्रबन्ध स्वयं देखैत रहलीह। ओ 66 वर्ष धरि वैधव्य जीवन व्यतीत कए 1985 ई. मे शिवत्वकेँ प्राप्त कएल। मिथिलाक राजकुल आ' अपन पाण्डित्य परम्पराक लेल ख्यात उच्च ब्राह्मण कुलक ई त्रासद उदाहरण थिक।

मोदवती प्राचीन परिपाटीक संस्कृत विद्वानक कन्या छलीह। किन्तु बालविवाहक दुष्परिणाकेँ भोगनिहारि अरुन्धती देवीक लालन-पालन पाश्चात्य शिक्षा-प्रणालीक अधीत विद्वानक परिवारमे भेल छलनि। म.म. डा. सर गङ्गानाथ झाक दौहित्री एवं शिक्षाविद डा. अमरनाथ झाक भगिनी अरुन्धती देवीक लालन-पालन इलाहाबादमे भेलनि तथापि, ओ कहिओ स्कूल नहि पठाओल गेलीह। नओ वर्षक अवस्थामे विवाह, बारह वर्षक अवस्थामे द्विरागमन एवं बीस वर्षक अवस्थामे तीन सन्तानकेँ मातृहीन कए, पञ्चत्वमे विलीन भए गेलीह।

मिथिलाक ब्राह्मणेतर, तथाकथित निम्नवर्गहुमे बालविवाहक प्रथा छल, मुदा विधवा विवाह अथवा एककेँ छोड़ि दोसरसँ सम्बन्ध कए लेब सामाजिक रूपसँ वर्जित नहि छलैक। बालविवाहक प्रथा स्वतन्त्रताक पछातिओ लगभग दू दशक धरि जीवित छल।

कन्यादान सामान्यतः सातसँ बारह वर्षक अपरिवक्व अवस्थामे भए जाइत छलैक। एहि हेतु एक रस्ता ताकल गेल जाहिसँ सासुर जएबासँ पहिने किछु प्रौढ़ता आबि जाइनि। एहि हेतु द्विरागमनक समय पहिने विवाहसँ पाँच वर्ष छल। ई अवधि घटय लागल। तीन वर्ष, एक वर्षसँ घटैत-घटैत, जेना-जेना कन्यादानक लेल कन्याक आयु बढ़ैत गेल, द्विरागमनक अवधि कमैत गेल अछि। सम्प्रति बेसीठाम मण्डपहिपरसँ कन्या बिदा भए जाइत छथि। एहिसँ दूनू पक्षकेँ सुविधा होअए लगलैक अछि। तथापि, किछु एहन लोक औखन छथि जे कन्याक चतुर्थी अपनहि ओहिठाम सम्पन्न कराबए चाहैत छथि। एहिसँ प्रवासीकेँ अथवा जे उपटिकेँ कन्यादान करैत छथि, बेसी असुविधा एवं व्यय-वहन करए पड़ैत छनि।

बालविवाहकेँ रोकबाक प्रयास

जखन कालपूर्व सहवास (Premature consumation)क कारणेँ बंगालमे दशवर्षीय फूलमणि देवीक देहान्त भए गेलैक आ' ओकर पतिकेँ दण्डित करबा लेल सरकारक समक्ष कोनो कानूनी अधिकार नहि छल, तखन 1890 ई. मे Supreme Legislative Council मे The Age of Consent Bill आनल गेल। प्रस्तावित बिलक अनुसार बारह वर्षसँ कम आयुक पत्नीक सङ्ग सहवास दण्डनीय अपराध छल। बिलमे इहो प्रावधान कएल गेल जे बालिग भेलापर ओ विवाह-विच्छेद कए सकैत अछि। सदनक भीतर एवं बाहर एकर घोर विरोध भेलैक। बिलक विरोधीक तर्क छलनि जे एहिसँ पुलिसक हस्तक्षेप बढ़त एवं डाक्टरी जाँचसँ सामाजिक प्रतिष्ठापर आघात होएतैक। बिलक विरोधमे बालगङ्गाधर तिलक, एवं

अन्य काँग्रेसी नेता तथा पक्षमे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, दुर्गाचरण लॉ, पी. सी. मजुमदार, डा. रासबिहारी बोस आदि छलाह। बिल यद्यपि पारित भए गेल मुदा विरोध होइत रहल। एहि सन्दर्भमे जखन शारदा एक्ट पास भेलैक, The Age of Consent Billक प्रावधान केँ बल भेटल।[47] सङ्गहि, ताधरि आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसाक सङ्ग लोकक मानसिकतामे सेहो परिवर्तन आबए लागल छल।

विधवा विवाह

राजा राममोहन राय एवं ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक प्रयाससँ जखन विधवा विवाह कानून बनेबाक प्रस्ताव आएल तँ एकर घोर विरोध भेलैक। पटनासँ प्रकाशित एक पत्र पहिल मइ, 1855 ई.क संस्करणमे ओ लिखलक -'हिन्दू औरतों का दूसरा निकाह।' एहि प्रस्तावक विरोधमे प्रबुद्ध नागरिकलोकनि ज्ञापन देलथिन। तथापि, Widow Remarriage Act XV of 1856 पारित भए गेल। बङ्गाल जकाँ मिथिलामे ब्रह्मसमाजक कोनो प्रभाव नहि छल। मिथिलाक उच्चवर्गमे विधवा विवाह मान्य नहि छल। फ्रांसिस बुकाननक अनुसार तीन चौथाइ विधवा पुनर्विवाहक आयुमे छलीह। हुनक रिपोर्टक अनुसार उच्च वर्गक विधवाकेँ अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत करए पड़ैत छलनि। विधवाक समस्या देशक अन्यो प्रान्तमे छल। किन्तु ओहिठामक समाज संवेदनशील छल, मिथिलामे विधवाक प्रति समाज संवेदनशील नहि छल। पूनामे विधवालोकनिक लेल 'शरदा सदनक स्थापना 1892 ई. मे भए गेल छलैक। ओतय हुनकालोकनिकेँ आत्मनिर्भर बनबाक शिक्षा देल जाइत छलनि[48]। मिथिलामे एहन कोनो संस्था वा सदन नहि छल। आश्रयहीन विधवा विश्वनाथक शरणमे काशी चल जाइत छलीह। हँ, जखन महात्मा गाँधीक नेतृत्वमे स्वदेशी आन्दोलनक सङ्ग चर्खाक प्रचार-प्रसार होअए लागल तँ विधवा ब्राह्मणी लोकनिकेँ आर्थिक लाभ जे किछु भेल होनि, अनमनाक अवसर अवश्य किछु भेटि गेलनि।

अनमेल विवाह

अनमेल विवाहक मूल कारण माइ-बापक आर्थिक विपन्नता छल। सामाजिक मान्यता एवं शास्त्रीय मर्यादामे आवद्ध कन्याक पिता अपन तुरिआक जमाय अनबामे ग्लानिक अनुभव नहि करैत छलाह। ओ ई नहि सोचैत छलाह जे वृद्ध एवं रुग्णपतिक मृत्यूपरान्त हुनक अबोध कन्याक कोन हाल भए जएतनि! शास्त्र कहैत छलनि जे पहिने वरक स्वास्थ्य आ' सुन्दरता देखी, कुल-शील बादमे देखबाक चाही(आदौतात वरं पश्य, पश्चात् कुल शीलयोः)। मुदा, अपन स्वार्थक समक्ष सबटा बिसरा जाइत छलनि। मैथिली लोकगीतमे पिताक लोभग्रस्ता देखि बेटी उलहन दैत छैक जे ओ लोभवश हमरा अपन घरसँ बाहर करए चाहैत छथि -

कओन गामक सिनुरहारा, सिन्दुर बेचय आएल हे।
आहे, कओन गामक नबे कामिनि, सिन्दुर बेसाहल हे।

केहन निरदय भेल बाबा, धनहिं लोभायल हे।
एक रे सिन्दुरवा के कारण घरसँ निकालल हे।[49]

बहुविवाहक सम्बन्धमे जेना विस्तृत विवरण महाराज माधव सिंहक अनुरोधपर निर्गत अदालती आदेश अथवा जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक रिपोर्टमे अछि, ओहने अनमेल विवाहक प्रसङ्ग एक विस्तृत विवरण 'मिथिला'[50]मे प्रकाशित अछि। ओ राँटी-मंगरौनीक मदन उपाध्यायक वंशज परम वयोवृद्ध सत्तरि वर्षीय पण्डित मोहन मिश्र दशवर्षीय कन्यासँ विवाहक प्रसङ्ग अछि। स्वयं पण्डित मोहन मिश्र सामान्य व्यक्ति नहि, हजारहु लोकक कनफुक्का गुरु छथि। एहिमे वृद्धविवाहक तीव्र भर्त्सना अछि, विधवा विवाह एवं तलाकक आवश्यकतापर बल देल गेल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे बीसम शताब्दीक मध्य धरि मिथिलामे अनमेल विवाह होइत छल। सम्प्रति देश-देशान्तरमे होइत अनमेल विवाहक समाचार कहिओ काल छपैत रहैत अछि, किन्तु मिथिलामे एहन दुर्घटना किनसाइते आब सुनबामे अबैत अछि।

पकड़ुआ विवाह

वरक अपहरण कए बलपूर्वक सिन्दूरदान करा देब पकडुआ विवाह थिक। ई विवाह सामान्यतः दू स्थितिमे होइछ - वर सहमत एवं अभिभावक असहमत तथा वर एवं अभिभावक दूनू असहमत। पहिल स्थितिमे वरके ँनीक कनिञा देखाएके ँएवं अन्य प्रकारक प्रलोभन दए फँसा लेल जाइछ। ठकल जएबाक भान वरके ँ सिन्दूरदानक बाद होइत छनि। एहि विवाहक मुख्यतः दू करण अछि - वरक बापक दहेज-लोभ तथा उच्चब्राह्मण कुलमे कन्या-विवाहक उत्कट लालसा। पहिने एहि लालसासँ बेस पकडुआ विवाह होइत छल। गत शताब्दीक उत्तरार्द्धमे एकहि राति हमर गामक तीन नवयुवकक विवाहक निमित्त अपहरण भए गेल छलनि। विवाहक बाद बिखिआके ँआदर-सत्कार कए मनाओल जाइत अछि, हिन-छिन कएलापर धमकी आ' यातना सामान्य बात होइत छैक। नवविवाहिताक सङ्ग कोठलीमे बन्द कए देल जाइछ, जँ वर-कनिञामे गप-सप भए गेल तँ बुझल जाइछ जे समस्याक समाधान भए गेल। कतेको ठाम केसा-केसी सेहो होइत अछि, तथापि एहि विवाहक मुख्य कारण दहेज-लोभहि थिक।

विजातीय विवाह

मिथिलामे विजातीय विवाहक सामाजिक अनुमति नहि छैक। एतेक धरि जे विभिन्न श्रेणीक मैथिल ब्राह्मणमे सेहो विवाहक अनुमति नहि अछि। ई प्रथा ततेक कठोर छल जे जँ उच्चश्रेणीक वरक विवाह निम्नश्रेणीक ब्राह्मण कन्यामे भए गेल तँ जाति वहिष्कृत कए देल जाइत छलनि। परम्परया लोकके ँ ज्ञात छैक जे डा. अमरनाथ झा दोसर जातीय ब्राह्मण (जेना कान्यकुब्ज, शाकद्वीपीय, गौड़, कश्मिरी आदि) कन्यामे विवाहक

इच्छा प्रकट कएल तँ पिता अनुमति नहि देलथिन। ओहिना जखन लक्ष्मीकान्त झा, आइ. सी. एस., इलाहाबाद विश्वविद्यालयक प्रो.आचार्य (बङ्गाली ब्राह्मण)क कन्या मेखला कुमारी देवीसँ, जे पूर्व परिचिता छलथिन एवं बिलेंतमे सेहो रहथि, विवाह कएल तँ हुनक समाजमे भूचाल उठि गेल। घोर जातीय विरोधक सामना करए पड़लनि। से तेहन विरोध जे हुनक सामाजिक एवं पारिवारिक परिचय सदाक लेल हेराए गेलनि। किन्तु ताधरि मैथिल समाजमे किछु युवावर्ग एहन अवश्य भए गेल छल जे एहन सामाजिक-जातीय बन्धनक विरोधी छल। मैथिली पत्रिका 'मिथिला मोद'[51] एल.के.झाक अभूतपूर्व साहसक स्वागत कएने छल। एहिना कर्ण कायस्थहुमे विजातीय विवाह वर्जित छल आ' जखन कायस्थक दू जातिमे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भेलैक तँ मैथिली पत्रिका 'मिथिला'[52]ओहि विवाहक स्वागत कएने छल। किन्तु ओहि अवसरपर अपव्यय भेल, तकरहु विरोध कएल। एहिसँ ई प्रतीत होइत अछि जे गत शताब्दीक तेसर दशकमे जातीय कट्टरता कमल आ' सामाजिक बन्धन शिथिल होअए लागल छलैक। किन्तु सम्प्रति विजातीयक कोन कथा, अन्तर्जातीय विवाह एवं आन्तरदेशीय विवाह सेहो होइत अछि। से केवल बेटे नहि, बेटीक डेग सेहो उठैत अछि। जेना-जेना शिक्षाक विकास होएत, माइ-बापपर आर्थिक निर्भरता कमतैक एवं अप्रवासनक गतिमे तीव्रता आओत, जातीय सीमा, सांस्कृतिक सीमा एवं राष्ट्रीयताक सीमा मेटाइत रहत। तखन ने पूबारिपार रहत आ' पछबारिपार, ग्लोबल विलेज भए जाएत।

विवाह आदिक अवसरपर अपव्यय

समाजके ँसबसँ बेसी प्रदर्शन-प्रभाव (Demonstration effect) प्रभावित करैत अछि। ई देखौंस सदा साधन-सीमाके ँअतिक्रमित करबा लेल प्रेरित करैत छैक। आ' तकरा लोक अपन प्रतिष्ठा मानि मोनेमोन गुड़-चाउर खाइत रहैत अछि। जकरा अरजल भेटल रहैत छैक, अथवा अर्जनक अज्ञात-स्रोत छैक, तकरा लेल तँ सामान्य बात, मुदा समाजक ओ सदस्य जे साधनहीन अछि, तकर प्राण सङ्कटमे पड़ि जाइत छैक। समाजक साधन-सम्पन्न लोक ई नहि चिन्ता करैत छथि हुनक वैभव-प्रदर्शनक समाजक शेष सदस्यपर की प्रभाव पड़तैक। फल होइछ जे साधनहीन वा अल्पसाधनक लोक सामाजिक कुचेष्टासँ अथवा वरपक्षक माङ्गपर आकण्ठ कर्जमे डूबि जाइत अछि, औंठा बोरि वा जमीन-जत्था बेचि, हकन्न कनैत छथि।

म.म.परमेश्वर झा 'सीमन्तिनी आख्यायिका'मे जाहि कोटिक बरिआती एवं ठाठ-बाटक वर्णन कएने छथि, निश्चिते ओ कपोल-कल्पना नहि रहल होएतनि। राजा-महाराजा तँ साधन-सम्पन्न छलाहे, प्रजाक साधन सेहो हुनके लोकनिक मनोरथपूर्तिक हेतु रहैत छल। सम्पूर्ण देश प्रथम स्वाधीनता संग्रामक जाहि योद्धा (बाबू कुंवर सिंह) पर गर्वोन्नत अछि, से अपन पौत्रक विवाहमे कतेक खर्च कएने छल होएताह, तकर अनुमान इतिहासकार डा. के. के. दत्ता[53] द्वारा भेल उद्घाटनसँ अनुमान कए सकैत छी। रास बिहारी लालदासक उपन्यास 'सुमति' देखौंसक कुपरिणामपर केन्द्रित अछि।

विवाह आदिक अवसरपर अपव्ययकेँ रोकबामे सामाजिक मर्यादाबोध सबसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि। जाहि कोनो जाति वा वर्गमे किछुओ सामाजिक मर्यादाबोध शेष छैक, प्रदर्शन-प्रभावपर नियन्त्रण अछि। जेना विवाहक अवसरपर अपव्ययकेँ रोकबा लेल मैथिल ब्राह्मण विशेषमे सामान्यतः दिनमे कन्यादान होइत अछि, बरिआतीकेँ एकहि बेर, सेहो अनोन भोज्यपदार्थ परसल जाइत छनि, बरिआती भोजनोपरान्त प्रस्थान कए जाइत छथि आ' कन्याक द्विरागमन मण्डपहि परसँ भए जाइत अछि। ई सब बात सुनि लोक केँ अजगुत लगैत छैक। किन्तु ई अपव्यय पर आँकुश लगबैत अछि। जेना - दिवालग्नमे कन्यादानसँ प्रकाश व्यवस्था अल्पतम होइत अछि, अनोन व्यञ्जनक कारणेँ माछ वा मांसक फरमाइश वरागत नहि करैत छथि, बरिआती लेल रात्रि-विश्रामक व्यवस्था नहि करए पड़ैछ आ' मण्डपपरसँ द्विरागमन भए गेलासँ दूनू पक्ष एवं अतिथिक समय तथा अर्थक बचत होइत छनि। प्रायः इएह अलिखित सामाजिक मर्यादाबोध थिकैक जे जखन समस्त मैथिल समाज लेन-देन आ' दहेजक रोगसँ ग्रस्त अछि, पूबारिपारकेँ ई छूतहा रोग अद्यावधि नहि लागल छैक।

आदर्श विवाह : नव परिभाषा

एक नब वैवाहिक समस्यासँ मिथिलावासी आक्रान्त होअए लगलाह अछि। ओ थिक शिक्षाक विकासक सङ्ग बालक एवं बालकक अभिभावकमे अर्थलोलुपता एवं भौतिक सुखोपभोगक अमित आकाङ्क्षा। व्यक्ति केन्द्रित आचरणसँ सामाजिकतामे ह्रास भेल अछि। पहिने मिथिलाक समाजमे दहेज नहि छल। जेना अन्य संस्कार पूर्ण नियम-निष्ठासँ अनुष्ठित होइत छलैक, ओहिना पाणिग्रहण संस्कार सेहो। कन्या पक्षक किछु लोक वर पक्षक ओतय, हुनक समाजक समक्ष कथा प्रस्तुत करैत छलाह। वरक अभिभावक अपन निकट सम्बन्धीसँ विचार-विमर्शक उपरान्त समाजक समक्ष 'वाक्‌दान' दैत छलाह। समाजे गवाह रहैत छलाह। मुदा आब वरक पिता कन्याक पितासँ एकान्तमे भेंट करैत छथि। मोल-जोल करैत छथि जाहिमे गर्भादानसँ आश्रम बसेबा धरिक खर्चक हिसाब रहैत अछि। वधूक आगमन पर जे स्वागत समारोह (रिसेप्शन) करैत छथि तकरहु खर्चक बिल कन्यागतहिकेँ चुकाबए पड़ैत छनि। आ' प्रचारित होइछ - 'आदर्श विवाह'। आदर्शक एहि परिभाषाकेँ गढ़बामे वरक माइक महत्त्वपूर्ण योगदान रहैत छनि। ओ बिसरि जाइत छथि जे हुनक अपन विवाहमे हुनक पिताजीकेँ कतेक कष्ट भेल छलनि। एहन आदर्श विवाहसँ भ्रष्टाचार एवं घूसखोरीकेँ प्रश्रय भेटैत छैक। कुमार्ग एवं अनैतिक ढङ्गसँ सम्पत्ति अर्जित करबाक लालसा बढ़ैत छैक। एहन आदर्श विवाहमे मैथिल ब्राह्मणक ओएह वर्ग बेसी सक्रिय अछि जिनकर पूर्वज 'बिकौआ प्रथा'क सम्पोषक छलाह अथवा पाइक बलपर सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करए चाहैत छथि। मुदा, एकर दुष्प्रभाव मिथिलाक अन्यो वर्गक लोकमे पसरि रहल अछि। ओहो सब ब्राह्मण समाजमे व्याप्त सामाजिक एवं वैवाहिक कुरीतिकेँ सामाजिक प्रतिष्ठावर्द्धक मानि लेल अछि।

लोक की कहत?

मैथिली पत्रिका 'मिथिला'[54] अपन सम्पादकीयमे लिखैत अछि जे मैथिल ब्राह्मणमे वृद्धविवाह एवं बहुविवाहक प्रथा जतबा कम भेल अछि ततबा बालविवाह एवं तिलक प्रथाक वृद्धि भेल अछि। किछु दिनसँ जात्यांशक अनादर एवं धनांश तथा अङरेजी विद्याक आदर बढ़ि गेल अछि। जाहि वरमे एहि दूनू गुणक सम्भावना वा अस्तित्व छन्हि तनिक तँ चर्चे नहि।' 1909 ई. मे मिथिलामे महादेव झा एवं श्रीकान्तझाक चलती (पाँजिक महत्त्व) छल। मुदा 1929 ई. मे धन एवं अङरेजी विद्याक आदर बढ़ि गेल। पहिने वरक मूल्यक निर्धारण जातीय श्रेष्ठताक आधारपर होइत छल, आब सेवा एवं आय-स्रोतक आधारपर होइत अछि। जेना - आइ.ए.एस, आइ.पी.एस., डाक्टर, इंजीनियर, बैंक अथवा अन्य सेवाक अधिकारी, लिपिक संवर्ग आदि। हालहिक घटना थिक, सुखी-सम्पन्न परिवारक एक बैंक अधिकारी, दोसर बैंक अधिकारीक स्नातकोत्तर कक्षामे सम्पूर्ण संकायमे प्रथम एवं स्वर्णपदक प्राप्त कन्यामे सरकारी सेवामे कार्यरत अपन पुत्रक विवाह एहि शर्तपर स्वीकार कएल जे जखन हुनक बालक विवाहक हेतु छुट्टीपर आबथि, स्टेशनपर नबका गाड़ी तैआर रहनि। ई शर्त नगद आ' गहना-गुड़िआक अतिरिक्त छल। वरक बापक तर्क छलनि जे लोक की कहत? एहि प्रकारेँ ओ अपन बेटाक मूल्य समाजकेँ देखाबए चाहैत छलाह। समाजक एहन-एहन लोकक लेल नैतिकता आ' सामाजिक मर्यादाक कोनो महत्त्व नहि छैक। दहेज-निरोधक कानून कोनो अर्थ नहि रखैत अछि।

एकटा आर उदाहरण प्रस्तुत अछि। कन्याक पिता एवं पितामह मैथिलीक ख्यातलब्ध साहित्यकार छथि। सङ्गहि, सामाजिक रूपसँ तथाकथित उच्च बाह्मण कुलक सेहो छथि। हुनक डाक्टर कन्या पिताक कुलसँ तथाकथित निम्न ब्राह्मण कुलसम्भूत सहपाठीकेँ वरण कए लेल। कन्याक पिता डाक्टर जमाय पाबि प्रसन्न छलाह तँ वरक पिता डाक्टर पुतहु पाबि प्रसन्न। एहि प्रेम-विवाहमे कोनो लेन-देन वा शर्त नहि छल। विवाहक समस्त तैआरी भए गेल। अन्तिम समयमे वरक माइ कहलथिन, 'एहनो कोनो विवाह भेलैक अछि जाहिमे कोनो चीज-वस्तु नहि देल जाइक! कमसँ कम एकटा गाड़ी तँ दिअए चाहिअनि।' कन्यागत धरि वरक माइक माङ पहुँचल। कन्यागतक लेल कोनो विकल्प नहि छल।

ई दूनू उदाहरण सिद्ध करैछ जे मिथिलाक सुशिक्षित कन्यामे वैवाहिक कुरीतिक विरुद्ध ठाढ़ होएबाक साहस नहि भेल छनि। दूनू घटनामे कन्या उच्चशिक्षा पाबि सुशिक्षिताक श्रेणीमे अछि। किन्तु जीवनक आरम्भहिसँ तेना चपाएल रहल छथि जे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ होएबाक लेल अपेक्षित आत्मबलक अभावकेँ हुनक किताबी ज्ञान पाटि नहि सकल अछि। कहि सकैत छी सांस्कृतिक रूपसँ अविकसित अछि। शास्त्रीय शब्दावलीमे इएह थिक Cultural lag.

एक आर समस्या गत किछु वर्षमे जनमल अछि। ओ थिक प्रेम-विवाह। प्रेम-विवाहक स्थितिमे वधू तँ स्वीकार कए लेल जाइछ, मुदा माङ्गक तह क्रमशः जखन खुजए लगैत छैक तखन दाम्पत्य जीवनमे तनाओ बढ़ैत अछि। फेर गृहहिंसा, उत्पीड़न, तलाक, हत्या आ' आत्महत्याक क्रम शुरू भए जाइछ।

समुद्रयात्रा

बौद्धकालीन भारतमे वणिक समुदायक प्रभुत्व छल। ओ व्यवसायक हेतु समुद्र यात्रा करैत छलाह। देश घुमलापर पाइ-कौड़ी तँ रहिते छलनि सङ्गमे समुद्रपार देशक आचार-व्यवहार सेहो आबि जाइत छल। एहि आयातित आचार-व्यवहारक भारतीय संस्कृति पर जखन प्रतिकूल प्रभाव पड़ए लागल तँ ब्राह्मण एवं पुनरुत्थानवादी हिन्दू समाज ओकरा रोकबाक लेल एहन सामाजिक व्यवस्था बनौल जाहिसँ समुद्र यात्रा धर्मविरुद्ध मानि लेल गेल।[55]

समुद्रसँ कोसो दूर मिथिलामे समुद्र यात्रा हाल-हाल धरि अधार्मिक काज छल। प्रथम स्वाधीनता आन्दोलनक असफलताक उपरान्त जखन भारतक शासन कम्पनी सरकारक हाथसँ बृटिश साम्राज्ञीक हाथसे आएल तँ एहन-एहन बाट ताकल जाए लागल जाहिसँ भारतक तरुणवर्ग अङरेजी रङ्गमे पूर्णतः रङ्गि जाथि आ' हुनक शासन दिन प्रति दिन आर सुदृढ़ होइत जाए। मुदा, उपनिवेशवादी सरकारक एहि तरघट्टीकेँ स्वाधीनताकामी भारतीय चेतना बूझि गेलनि। ओ अपन उपनिवेशवादी शासकक भाषा, हुनक शिक्षा-प्रणाली, विज्ञानक क्षेत्रमे होइत नित्य नवीन आविष्कार, हुनकर अन्तर्विरोध एवं द्वैध चरित्रकेँ सेहो यथाशीघ्र बूझि लेबय चाहैत छलाह। एहि हेतु बिलेंत जाए शिक्षा प्राप्त करब आवश्यक छलैक आ' से बिना समुद्र यात्राक सम्भव नहि छल। मिथिलामे एहि तथ्यकेँ बुझबामे समय लगलैक। मिथिला मिहिर 'अङरेजी शिक्षा' शीर्षक लेख (मिथिला मिहिर, अगस्त,1914 ई.) मे कहैत अछि जे प्रजाक हेतु राजाक भाषा जानब आवश्यक होइछैक किएक तँ राजाक आदेश राजाहिक भाषामे रहैत अछि। जे मनुष्य राजभाषा नहि जनै छथि ओ सांसारिक बहुतो विषयसँ अनभिज्ञ रहै छथि। बहुतो बेरि एहि अज्ञानताक कारण बड़े कष्टमे पड़ै छथि। बेबकूफ बनै छथि, और बहुत हानि उठबै छथि।

1882 ई. मे पूना सार्वजनिक सभाक[56] एक निर्णय भेलैक जे प्रत्येक वर्ष मेधावी छात्र केँ उच्चशिक्षाक हेतु बिलेंत पठाओल जाए। ओहि निर्णयक जनतब महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह (1858-1898 ई)केँ समाचारपत्रक माध्यमसँ भेटलनि। स्वयं कट्टरवादी परिवार आ' सामाजिक परिवेशक होइतो ओ पत्र द्वारा निर्णयक स्वागत कएल। किछु सुझाओ सेहो देलथिन। ओ अपन उपचारकर्ता चिकित्सकक कहलापर बिलेंत जएबाक पूरा तैआरी कए लेने छलाह किन्तु समाज-भयसँ समुद्र-यात्रा स्थगित करए पड़लनि। यात्राक स्थगन हुनका लेल घातक भेल। मिथिलाक समाजक लेल सेहो ओ नीक नहि भेलैक, ओ पछुआ गेल। समुद्र यात्राक नामपर हुनक भातिज महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहकेँ स्वजातीय बारि देलथिन। दोसर दिस बड़ौदाक महारानी 1912 ई सँ पूर्बहि विश्वभ्रमण कए भारतीय महिला समाजक उत्थानक लेल अपन अनुभवकेँ लिपिबद्ध कए लेने छलीह।[57]

यदि समुद्रयात्रा धर्मविरुद्ध घोषित नहि भेल रहैत तँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक अमलदरीएसँ मिथिलावासी समुद्र यात्रा कए नव-नव ज्ञान अर्जित करैत रहितथि। कालान्तरमे हुनका सङ्गे हुनक पत्नी एवं बेटी सेहो देश-देशान्तरमे रहि उच्चशिक्षा प्राप्त करितथि आ' मिथिलाक महिला समाजक सशक्तिकरणक गति, ओहि स्थिति सबहक

कारणेँ जकर उल्लेख Amie GAYE and Shreyasi Jha [58] यूनेस्कोक अपन रिपोर्टमे कएने छथि, कमसँ कम सए वर्ष पाछू नहि रहि गेल रहैत।

सम्प्रति बहुविवाह नहि होइछ, बालविवाह नहि होइछ, अनमेल विवाह नहि होइछ, वृद्ध विवाह नहि होइछ, विधवा विवाहकेँ आब घृणाक दृष्टिसँ नहि देखल जाइछ, तलाक आ' फेर विवाह होअए लागल अछि, जातीय बन्धन शिथिल भए गेलैक अछि, कन्या अपन रुचि-अरुचि अपन अभिभावकके ँकहए लागल छथि, माइ-बाप द्वारा ठीक कएल विवाह-प्रस्तावकेँ तोड़ि प्रेमीक सङ्ग भागए लागल अछि, सहजीवन (co-habitation/ live-in relationship) सेहो जिबैत छथि। ई सब शिक्षा आ' आत्मनिर्भरताक परिणाम थिक। जेना-जेला शिक्षाक विकास होएत, देश-विदेशमे शिक्षा एवं जीविकापन्न होएबाक अवसर भेटतैक, एवं नव-नव सामाजिक यथार्थसँ संघर्ष करए पड़तैक, ई स्थिति बढ़त। कतहुसँ एकरा सभकेँ सामाजिक कुरीति नहि कहि सकैत छी। किन्तु स्त्रीगण समाजमे शिक्षाक विकास एवं आर्थिक आत्मनिर्भतासँ स्वतन्त्र व्यक्तित्व स्थापनाक जे चेतना क्रमशः वेगवती भेल जाइछ, से पुरुष वर्चस्वक पारम्परिक समाजकेँ पचि नहि रहल छैक। ओ समाज नारी सशक्तिकरणकेँ पुरुष वर्चस्व पर आघात मानय लागल अछि। औना गेल अछि। ओही खौंझ आ' औनैनीक अभिव्यक्ति बलात्कार सदृश घृणित आचरणक रूपमे हमरा लोकनि देखैत छी। कन्याभ्रूण हत्या सेहो ओकरहि परिणाम थिकैक।

जेना ऐतिहासिक अभिलेखक आधारपर स्पष्ट कएने छी, मिथिलामे अङरेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार एवं विकास पर्याप्त विलम्बसँ भेलैक। स्वाधीनताक बाद जखन ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था बिगड़ए लागल तँ पहिने नवयुवक वर्ग आ' फेर हुनक परिवारक सदस्य नगरवासी होअए लगलथिन। मिथिलामे जीविकाक साधन नहि छल, औद्योगिक प्रतिष्ठान नहि छल, औखन नहि अछि, पड़ैनी लागल छैक, अतएव, अपन माटिपर रहि स्त्रीगण द्वारा समाजक समस्याक समाधानक हेतु जे सामूहिक प्रयास सम्भव छैक आ' ओहि लेल जेहन सांगठनिक क्षमता अपेक्षित अछि, से मिथिलाक नारी-समाजमे विकसित नहि भए सकल अछि।

देशक विभिन्न क्षेत्रमे सांस्कृति मिथिला अछि, ओ लोकनि सङ्गठन बनौने छथि, कोनो-कोनो शहरमे मैथिल महिलाक पृथक सङ्गठन सेहो अछि, मुदा हुनका लोकनिक कार्य-कलाप सांस्कृतिक गतिविधिए धरि सीमित अछि। सामाजिक जीवनमे जे नव-नव विकृति जनमि रहल अछि अथवा जकर रूप विकराल भए गेल छैक, तकरा पराभूत करबा लेल अपेक्षित सामूहिक साङ्गठनिक प्रयासक ओहि संस्था सभमे सम्प्रति घोर अभाव अछि।

तैओ, सामाजिक स्तरपर एहन संकेत आबए लागल अछि जे स्त्री-शिक्षाक विकास, एवं आत्मनिर्भताक बढ़ैत अवसरसँ कन्यामे वरण एवं अस्वीकार करबाक क्षमता विकसित भए रहल अछि। मिथिलाक स्त्रीगण समाजमे एहि क्षमताक विकास जतेक क्षिप्रतासँ होएत, 'आदर्श विवाह'क गढ़ल वर्तमान परिभाषा बदलत। अथवा 'लोक की कहत'सदृश असामाजिक एवं निराधार गौरवबोधपर ओतेक शीघ्रतासँ विराम लागत।

....

पचास वर्षसँ बेसी भेल होएतैक। 'मिथिलाक विदुषी महिला'क खण्डित प्रति हाथमे आएल। पछाति श्यामानन्द झाक सङ्कलनमे एकर पूर्ण प्रति सेहो भेटल। पढ़ि उत्सुकता जागल। पोथीमे वर्णित एकटा विदुषी हरिलता (मोदवती)क सन्निकट छलहुँ। खोधि-खोधि पुछैत रहलिअनि। ओ जे किछु कहलनि, एक भुक्तभोगीक व्यथा छल। ओहिसँ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक सामाजिक स्थितिकेँ जनबाक अवसर भेटल। एहि अवसरपर ओ स्मरण भए रहल छथि।

एहि पोथीक प्रसङ्ग किछु अद्‌भुत संयोग सब अछि। लालगंजमे गामक उत्तर मैथिलीक सुकवि एवं आन्दोलनी गणेश्वर झा 'गणेश' छलाह तँ दक्षिणमे श्यामानन्द झा। गणेश्वर झा 'गणेश'क पत्नी अरुन्धती देवी पोथी लिखि मिथिलाक विदुषीक अवदान केँ सुरक्षित कएल तँ श्यामानन्द झाक पत्नी पतिक साहित्य एवं सङ्कलनक संरक्षण आजीवन कएल। एकटा आर अद्‌भुत संयोग अछि, कवीश्वरी हरिलता 'मिथिलातीर्थ प्रकाश' एवं मैथिलीक पहिल कथा संग्रह 'चन्द्रप्रभा'क यशस्वी लेखक पण्डित श्रीकृष्ण ठाकुर(सर्वसीमा)क दौहित्री छलीह तँ अरुन्धती देवीक माइक मातृमातृक ओहिठाम।

'विदुषी महिला'क लेखनक लक्ष्य महत्त सांस्कृतिक अछि। ओ उद्देश्य थिक मिथिलाक सुदीर्घ विदुषी परम्पराकेँ मातृभाषाक माध्यमेँ मातृजनक सम्मुख आनब जाहिसँ लोक उत्प्रेरित होअए। मैथिलीमे एहन लेखनक परम्परा नहि छल, अरुन्धती देवी मैथिलीमे श्रीगणेश कएल। एहि लेल ओ स्तुत्य छथि। हुनक प्रयास स्तुत्य अछि। एहि पोथी केँ मिथिलाक विदुषी द्वारा मैथिलीमे लिखित पहिल पोथी होएबाक गौरव प्राप्त छैक। एहिमे छओ एहन विदुषी छथि जे लेखिकाक समकालीन छलथिन। एहिसँ स्पष्ट अछि जे हुनक दृष्टि केवल मिथिलाक प्राचीन विदुषीलोकनिक उपलब्ध परिचय एवं अवदानकेँ लिखब मात्र नहि छल, अपितु समकालीन विदुषी लोकनिक कृतित्वकेँ लिपिबद्ध कए भविष्यक अनुसन्धानकर्ताक लेल सेहो बाट प्रशस्त करब छल। संस्कृतमे वा आन भाषामे एहन परम्परा रहल होएत मुदा मैथिलीमे एहन लेखनक सूत्रपात अरुन्धती देवीसँ होइत अछि।

एहि पोथीक पुनर्मुद्रण हो, से इच्छा कतेको वर्षसँ छल। एहि वर्षक पूर्वार्द्धमे जखन गाम गेलहुँ, एकर फोटो प्रति सङ्गमे छल। परम सामाजिक लोक श्री मिथिलेश देखलनि। ओ अपन उत्सुकता एवं प्रसन्नताक प्रदर्शन लेखिकाक घरक लोकक समक्ष कए देल। पोथी देखि गौरवक बोध भेलनि। लेखिका एही हेतु पोथी लिखने छलीह, जे पोथी पढ़ि समाज गौरवक बोध करए। ओहिसँ ऊर्जा पाबि भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक संरक्षणक प्रति साकांक्ष होअए। हुनक परिश्रमक ई सफलता थिक।

एहि पुनीत काजमे प्रो. भैरवेश्वर झा सङ्ग भेलाह अछि। ओएह लेखिकाक दुर्लभ फोटो हुनक कन्या श्रीमती ललिता देवी (श्रीमती हीरा देवी, रामपुर, सम्प्रति बनारस)सँ उपरौलनि

आ' तर्पणक भार उठाए लेल। हम तँ अपनाकेँ धन्य मानैत छी मैथिलीक एक अप्राप्य कृतिकेँ समाजक समक्ष अनबाक एकटा आर अवसर भेटल। पण्डित श्रीभवनाथ झा 'भवन' विदुषी विश्वास देवीक प्रसङ्ग महत्त्वपूर्ण सूचना देलनि अछि। एहि सारस्वत काजमे सहयोगक लेल सभ केओ धन्यवादक पात्र छथि।

ठीक सए वर्ष पहिने (1912 ई.) बड़ौदाक महारानी चिम्ना बाइ द्वितीय भविष्यवाणी[59] कएने छलीह जे जखन बीसम शताब्दीक समाप्तिपर ओकर इतिहास लिखल जाएत तँ ओ महिलाक विकासक इतिहास होएत। बीसम शताब्दी तँ नहि भए सकल, किन्तु मिथिलाक स्त्री-समाजमे जाहि प्रकारसँ चेतना आबि रहल अछि, ई आशा सहजहि कए सकैत छी जे एकैसम शताब्दीक मिथिलाक इतिहास, मिथिलाक स्त्री-समाजक विकासक इतिहास होएत। ओहि दिशामे 'मिथिलाक विदुषी महिला'क पुनर्प्रकाशन एक शुभसङ्केत थिक।

हम ने इतिहासज्ञ छी आ ने समाजशास्त्री तेँ जँ विज्ञजनकेँ एहिमे कोनो त्रुटि भेटनि तँ एक अल्पज्ञक दुस्साहस मानि कृपया क्षमा कए देथि।

डा. रमानन्द झा 'रमण'

श्यामानन्द झाक पैंसठिम पुण्य तिथि
30 अगस्त, 2013
पटना

सन्दर्भ-सङ्केत

1. जयन्ती देवी, *मिथिला मिहिर*, 8 अगस्त, 1965 ई.
2. Minna G. Cowan, *The Education of the Women of India*, 1912, New York, Page No. 29. - 'In the early Vedic times women apparently enjoyed an equal status with men. There was no child marriage, no seclusion in the zenana, no sati, no prohibition of the remarriage of widows. Ladies of culture composed hymns and performed sacrifices as men did. Some even remained unmarried and had their share of the paternal property. There are many passages in the *Brahmanas* which show the high esteem in which women were held.'
3. Dr. Jata Shankar Jha, *Education in Bihar*, K.P.Jayaswal Research Institute, Patna, 1979. P. No. 23 - 'The education of women is not a new thing in India. We have a brilliant tradition of educated women. Gargi, Maitreyi, Bharti, Lakhima and Bishwas Devi are some of the most illustrious names in this respect.'

4. अष्ट वर्षा भवेद् गौरी, नव वर्षा च रोहिणी। दश वर्षा भवेत् कन्या, अत उर्ध्व रजस्वला।

5. E.T.Atkinson, *Notes on the history of Religion in the Himalaya of the N.W. Provinces, Journal of the Asiatic Society of Bengal,* 1884 - 'Buddhism was originally a protest against sacerdotalism, not necessarily against the Brahmanical caste, but it too succumbed to daemonistic influences, and degraded and corrupted, fell an easy prey to its rival Brahmanism. Both sought the popular favour by pandering to the vulger love of mystery, magical mummeries, superhuman power and the like, and Brahmanism absorbed Buddhism rather than destroyed. The Buddhist fanes became Shaiva temples and the Buddhist priets became Shaiva ascetics or served the Shaiva temples.'

6. Her Highness the Maharani of Baroda, *The Position of Women in Indian Life*, 1912- " Our land became a prey to external invasion and internal strife, and in the ceaseless struggle that was waged , the cause of learning, and with it that of woman, was forced to the wall. The arts of peace had no room to expand, and with the constant warfare that devasted India in the seventeenth and eithteenth centuries, woman's interest and education fell into depth of miserable neglect and supression, from which they are only now recovering. "

7. Minna G. Cowan, *The Education of the Women of India*, 1912, New York, Page No. 33.- 'With the Moslem conquests came parda system with its withering influence. Devised by Mohammed, according to modern Moslem historians, for the protection of women in wild and lawless times, it has inculcuted distrust of their character and capacities. In spite of the fact that many Indian women today look upon the parda as a sign of prestige and their value in their husband's eyes, the thoughtful observer must reckon it, in its ultimate social influence, as a symbol of distrust.

8. लक्ष्मीपतिसिंह रचना सञ्चयन, सं. डा. रमानन्दझा 'रमण', साहित्य अकादेमी, 2012 ई.

9. डा. सुनीति कुमार चटर्जी/ बबुआजी मिश्र (सं.), ज्योतिरीश्वरकृत *वर्णरत्नाकर,* तृतीय कल्लोल,

10. उमेश मिश्र/जयकान्त मिश्र (सं.) विद्यापतिकृत *गोरक्षविजय,* पृष्ठ सं. *7ख,* 1961 ई.

खेल नरपति युवती सङ्गे, काहु आलिङ्गए, काहु निहार
काहु लिलोपन मलाञे मार, काहु बुझाव विसेषि सिनेहि
पुलके मुकुल मण्डित देह, बहुल कामिनि एकल कन्त
कृष्णपति आएल सयन तन्त।

11. विद्यापति गीत समग्र, सम्पा. गोविन्द झा, CIIL, Mysore

पेट पचकल गाल चोटकल पाकल भौंहेरि गोछी

ताहि बुढ़ा हाथ ई विधि देलहुँ, ते मोञे पापिन धोछी
माए न सोचल बाप न खोजल खोजल देव अपने
विहिक लिखल मेटि न पाबिअ भाखिअ मनहि मने
भन विद्यापति सुन पारवति ई वर त्रिलोक देवा/ जगत इसर सामि तोहि मिलु कर जोरि करू सेवा।'

12 विद्यापति गीत समग्र, पृ.सं. 505, सं. गोविन्दझा, CIIL, Mysore

पिया मोर बालक हम तरुणी। कोन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी।
पहिरि लेल सखि दछिनक चीर। पिआकें देखैत मोर दगध सरीर।
पिआ लैली गोद कए चलली बजार। हटिआक लोग पूछे के लागु तोहर।
नहि मोर दिओर कि नहि छोट भाए। करम लिखल छल तोहर जमाइ।
बाट रे बटोहिआ कि तोंहु मोरा भाइ। हमर समाद नैहर लेने जाइ।
कहिअनु बाबा कें किनए धेनु गाए। दुधबा पिआइकें पोसता जमाए।
नहि मोरा टाका अछि नहि धेनु गाए। कोन बिधि पोसब बालक जमाए।
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।'

13. जाहि दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल, धरती उठल झझकाइ हे।
हँसुआ खोजइते गे बेटी छुरियो न भेटल, सितुआसँ नार कटाओल हे।
सासु ननदी गे बेटी मुखहुँ न बोलए, स्वामी जीके ँजियरा उदास हे।

14. पहिले जे जनितउँ धिया रे जनम लेत, खएतउँ मरिच पचास हे।
मरिचक झाँस सँ धिया दुरि जाइत, छुट्तिइ धियाक संताप हे।

15. G. A. Grierson, Maithili Crestomathy and Vocabulary, 1881, गीत राजा सलहेस- 'तखन राजा भीमसैन कहैत छथीन्ह जे बन्धन खोलाए देबौक, एक एकरार हमरा पास लिखि दह जे आठम दिन चोर माल हाजिर करी, नहिं करी तौं नौम दिन तोहरा सौं विवाह करी, तकर अकरार लिखि दाखिल कर, ओ लिखाए लेल।' *Then said king Bhim Sain, 'I will have him released, but write a bond in my favour. 'I will bring the thief and his booty on the eighth day from this. If I do not bring him within that time then,O king, I will marry thee.'Write a bond to that effect.And so he made her to do'.*

16. R.Gourlay -Forward, *The Folk Literature of Bengal* - Dr. D.C.Sen, University of Calcutta, 1920. "The attempts to trace the source of the tales have brought to light hidden knowledge. The history of the Indian people in those ancient days is but imperfectly known, but the tales are a mirror of the customs and thoughts of the poeple and , as such are of for greater value to us than the dates and the names of a few individuals - the dry bones of history."

17. मिथिलामोद, उदगार-37, वर्ष 1910 ई.

18. W. Crooke, *The Natives of the British Empire Nothern India*, 1907, P. No.183 - "In the same way, the little girl is trained in household work. She is taught the peculiar knack, not easy to acquire, by which, with a dexterous turn of her wrist, she can sift the grain free of seeds and dirt in the winnowing-fan. She learns the art of milking a cow, and the making of butter and curds, which last forms such a large part of the daily diet; how to boil rice and pulse, how to make a barley or wheaten bannock; how to use the spinning-wheel."

19. मिथिला मिहिर, मिथिलांक, दरभंगा, 1935 ई.

20. Minna G. Cowan, *Education of Women of India*, P.No. 39, 1912 - "As a rule, the natives look with suspicion on everything which comes from a foreigner, for which reason the great efforts made by the English have not produced corresponding results."

21. Minna G. Cowan, *Education of Women of India*, 1912, P.N. 243 - "It is only thus a part of one great Christian movement that the feminist problems receives its right emphasis and value."

22. Minna G. Cowan, *Education of Women of India*, 1912, P. .No.116.

23. Dr. Jata Shankar Jha, *Education in Bihar*, Page No. 250 - "The education of female was left entirely to the fostering care of individuals and society. The authorities both here and in England, believed that any direct measure taken in this direction, unless there was a demand for it, would be regarded by the people as an interference on the part of Govt. in their social customs."

24. Dr. Jata Shankar Jha, *Beginnings of Modern Education in Mithila*, Page No.. xxiii - "As a matter of fact education of males or females was more a private concern in this country. An educated father or brother personally looked after the education of his unmarried daughters or sisters and charge developed on educated husbands after their marriage."

25. श्रीमती विद्यावती देवी, स्त्री शिक्षा, भारती, वर्ष 1, अंक 7, अगस्त 1937 ई.

26. G. K.Gokhale, *Speech at the Education Congress*, 1897, " A combination of enforced ignorance and overdone religion have not only made women in India willing victims of customs unjust and hurtful in the highest degree, but it has also made them the most formidable because the most effective opponents of all change or innovation."

27. मिथिला मिहिर, 7 जुलाइ,1928 ई.

28. मिथिला, वर्ष 1, अंक 1, चैत्र (रामनवमी) संवत् 1986

29. Francis Buchanan- An Account of the District of Purnea,1809-10, P. No. 262.

30. म.म.परमेश्वरझा, *मिथिला तत्त्वविमर्श*

31. 'Confined to dissuation and must not extend to coercive measures or to any exertion of official power. (Quoted in Dr. K.K.Datta's Selections from Unpublished Correspodeces of the Judge, Magistrate and the Judge of Patna (1790 -1857) - Quoted in *Aspect of the History of Modern Bihar*, by Dr. Jata Shankar Jha, 1988.

31क. सीताराम झा, *उपदेशमाला* (शान्तरस), पृ. सं. 6, द्वितीय आवृत्ति,1954 ई.

32. Dr. Jata Shankar Jha, ed. *K.P. Jayaswal Commemoration Volume*, - 'An early attempt at Marriage Reform in Mithila, 1981, P. No. 534 - "At that time the Srotriyas and Yogas commanded great prestige. Even otherwise influencial, zamindars of the lower order of brahamans could not hope for such prestige. But money showed its power and gragually a way out was found. Now a brahaman of low order could also improve his position by matrimonial relationship with the members of the superior order. The affluent among them began to avail themselves of this facility for upgradation. But it soon created a somewhat competitive situation. Because of the great esteem in which the brahmans of high rank were held there were really very few of them who could be pursuaded to degrade themselves by contracting matrimonial relationship with low brahamans for the sake of such an undue prominence to those brahmans that they made marriage a profession. They came to be known as Bikauas, that is purchasable. But they differed from the purchasable commodity in one respect. Even after receiving their price in full they were never under disposal of the purchasers. They sold themselves only for the marriage."

33. 15th December,1878 George Abraham Grierson, Sub-divisional Officer of Madhubani recorded about poligamy among the Maithil Brahmans - "Among Maithil Kulin Brahmans, those who go by the name of Bikaua marry 25 or 30 wives of a low family simply as a monetary speculations. They bring the first wife home and leave the others at their own house. Once a year or when convient they go on

tour to their father-in-law's houses and demand money from their wives or their (wives) parents, which they consider a laudable means of livelihood.

The most serious aspect of the system was that by the death of one Bikaua a large number of women became widows. An enquiry conducted by the Madhubani Sub-Anjuman in 1876, revealed that by the death of only 54 Bikauas as many as 665 women, some of tender age and others in the prime of life, has become widows. Since remarriage was prohibited they passed their lives ' cursing their husbands as well as their living parents. The case of two Bikauas has been specially mentioned in the proceedings - one of village Koilakh, aged about 50 years, who had married 35 wives the other of Ramnagar aged about 40 years, who had married 14 wives. "

34. शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तादृसर्वदा। *मनुस्मृति,* अध्याय 3, श्लोक 57

35. Seal of Qazi Mozaffar Ali

Goshwara	Seal of Adalat
No. 10436	Diwani Zila Tirhut

(Notification under the seal of Adalat Diwani, signed by the Judge in English character, Dist. Tirhut)

Issued that the Vakil on behalf of Raja Madho Singh filed a petition to the Judge which revealed that Brahmans individually marry some fifty or sixty ladies and give them up at their respective native places. On account of excess in marriage they (brahamans) cannot manage for their maintenance. The ladies concerned, due to negligence and carelessness of their husbands, suffer a great of trouble and distress in their prestige and honour, and do not file their grievances in Adalat for redressals, it is proper in every respect for the court to inflict condign penalty or punishment on them.

Hence, it is hereby notified to all the Brahamans and Panjiars of Sarkar Tirhut that they are prohibated to have more than four ladies in their matrimony. If it is known to the Government that the aforesaid Brahamans have done otherwise and get more than four ladies in marriage, they will be (penalized) for such heinous crimes.

Dated the 26th August 1795 (5th Bhado 1200 f.)

36. Seal of Qazi Mozaffar Ali 1198 H

Goshwara	Seal of Adalat Diwani
No. 10437	Zila Tirhut

A copy of promulgation sealed with Adalat Diwani under the signature of Judge, Zila Tirhut, in English character runs as follows:

That Dular Chand, Vakil on behalf of Raja Madho Singh, applied stating that the Brahamans of Sarkar Tirhut married individually some forty, fifty and sixty ladies formerly and left their wives to their respective places and could not care for their maintenance due to excess in their marriage, so much so that they never took notice of their well-being and the ladies in question on account of inattention of their husbands suffered untold difficulties for subsistenance and led their lives in great miseries and that in order to maintain their honour and chastity, they did not put forth grievances against them in the court.

Consequently, since the time of the council, it had been decided that none should marry more than four ladies and the Panjiars who have been previously employed had already given their solemn engagement for the same, and it had remained sound and vital. In 1200 f. some of the Brahamans desired to have more than four ladies in their marriage. Thus order was issued by the Judge Mr. John Niff, on the petition filed by the Vakil of my client directing the Brahamans to abide by the order previously passed by the council.

Now, on the other hand although Kirti Nath Jha, resident of village Koilakh Pargana Bhaur, Chandradeva Jha, resident of village Singion Pargana Jarail and Dharmdhar Mishra of the said village Koilakh, Brahamans of Sarkar Tirhut have ....already been forbidden by Adalat, they have not been moralized and turned to shameful remorse rather they have been defiant to do against the court. They are simply bent upon wedding more than the usaual custom and never abstain from it.

Hence, it is hereby notified that since the date of issue of this notification, the Brahamans or the Panjiars of Sarkar Tirhut are warned not to get more than four wives as being permissible. In case of ignoring this mandate, if any one would be found to have more than four wives and the court will be aware of this with genuine evidence, the life and property of the accused will be put into hazard and there will be no way to have rescue.

Dated 9th July,1798 AD.

Quoted in *K.P. Jayaswal Commemoration Volume*,1981, P.No.536

37. *Selected Works of Raja Ram Mohun Roy*, Publication Division, Govt. of India, 1977 - "The horror of this practice(Poligamy) is so painful to the natural feelings of men that even Madhav Singh, the late Raja of Tirhoot (though a Brahman himself), through compassion, took upon himself (I am told) within the last half century, to limit Brahmans of his estate to four wives only."

38. Prof. Hetukar Jha, ed. *Autobiograrhical Notes of Dr. Sir Ganganath Jha*,Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha, Allahabad, 1976. P. 2 - " In the 18th century the Maharaja of Darbhanga brought together all those scattered (Srotriya) families and settled them in villages within a radious of about twenty miles in the district of Darbhanga, Darbhanga itself being the western most limit of this circle. Even since then there has been close relationship between the Maharaja of Darbhanga and these Srotiya families and no family was allowed by the Maharaja to suffer privation. In consideration of this , the Srotriyas acknowledged the Maharaja as the head of their clan and even today no marriage is performed among Srotriyas without the written permission of the Maharajadhiraj of Darbhanga."

39. डा. जटाशंकर झा, मिथिलामे कन्यादानक समस्या, *मिथिला भारती*, अंक 1, भाग 1-2, मार्च-जून 1969 ई.

40. Abu Fazal- Excepting the king, it is not considered right for a man to have more than one wife unless the first wife is sickly or proves barren, or her children die. In these cases he may marry ten wives, but it the tenth proves defective, he may not marry again. If the first wife is unsuitable, and he desires to take another, he must give the first a third part of his estate."- Quoted by Dr. Jata Shankar Jha, *K.P. Jayaswal Commemoration Volume*, P. No. 534.

41. John Beames, *Memoirs of a Bengal Civilian*, Eland, London, Page No. 246 - "On enquiry I learnt that there was an ancient custom, half religious and half traditional, by which the Maharajas of AI were required to marry a new wife every year on a certain festival. The present Maharaja, being nearly seventy and having begun life early, as they do in India, had by degrees amassed all these wives and had forgotten all these children. What was to become of them all, no one seemed to know or care."

42. *मिथिलामोद*, उद्गार 42, वाराणसी, चैत्र, 1317 साल/1910 ई. - नव सूत्री मार्गदर्शन - 1. राजभक्ति, 2. सदाचार, 3. विद्या-प्रचार, 4. कृषि-वाणिज्य, 5. व्यर्थ-विरोध-परिहार, 6.

विवाहादि सामाजिक दोषनिवारण, मितव्यता, 7. शारीरिक उन्नति, 8. मिथिला की सत्त्व-रक्षा, एवं 9. मिथिला, मैथिल, मैथिलीक हित-साधन।

43. 'गत सौराठ सभा' मिथिला मिहिर, 23 जुलाइ, 1927 ई.

44. Dr. Jata Shankar Jha, *Aspects of the History of Modern Bihar*, K.P.Jayaswal Research Institute, Patna, 1988 - 'Besides Sati and Poligamy, there were a number of other evils connected with Hindu marriage in Bihar, such as extravagant expenses in marriages, child marriage, unequal marriages, that is, the practice of marrying girls of tender age to an old, infirm and useless man owing to the proverty of the bride's parents etc.

45.गिरीन्द्रमोहन मिश्र, बाल-विवाह, *मिथिलामिहिर*, प्रकाश1, मण्डल1,1909ई.।

46. Francis Buchanan, *An Account of the District of Purnea* (1809-10). Quoted in *Aspect of the History of Modern Bihar*, by Dr. Jata Shankar Jha, 1988. - "a man of high rank is often hired when toothless or even moribund, to marry a low child, who is afterwards left wodow, incapable of marriage, for the sake of raising her father's family...."

47. Dr. Jata Shankar Jha, *Aspects of the History of Modern Bihar*, P.N.68, K.P.Jayaswal Research Institute, Patna, 1988 - "Its chief proposals were that intercourse with wife under 12 years of age should be made penal and in cases of infant marriage, the bride should be entitled to repudiate the marriage, if she so desired on attaining majority. The Bill provoked strong opposition both in he Council and outside."

48. Minna G. Cowan, *Education of Women of India*, 1912, P. N0.181.- "Since the Sharda Sadan (the abode of wisdom) near Poona was started in 1892, thousands of Indian widows have been given the opportunity of a self-supporting, self-respecting life, and a vision of what self-sacrifice may mean."

49. मैथिली संस्कार गीत, पृ.सं. 196, राष्टभाषा परिषद, पटना

50. मिथिला, अंक 5, 1929, सम्पादकीय, वृद्धविवाह,- 'सूचित करैत अत्यन्त ग्लानि होइछ जे राँटी-मंगरौनीक परम वयोवृद्ध ब्राह्मण जगत विख्यात मदन उपाध्यायक वंशज तथा हजारक हजार मैथिल जनताक कनफुक्का गुरु पण्डित श्रीमोहन झा जी लगभग 70म वर्षक अवस्थामे एहिबेर एक दशवर्षीया कन्याक पाणिग्रहण कैलन्हि अछि। यदि आन व्यक्ति कैने रहैत तँ कदाचित क्षम्य छल, परन्तु मदन उपाध्यायक वंशधर, अपार शिष्य मण्डलीक गुरुवर यदि एहन क्रिया करथि तँ नरको कियै नहि अपन नाक सिकोड़ै? की एहना धर्माध्यक्षसँ केयो चेला अपन सद्गतिक आशा कै सकैछ? कदापि नहि? जो स्वयं अन्ध छथि, पाप-पंकमे लिप्त छथि - आनक उद्धार की करताह? सबसँ नारकीय तँ थिक ओ कन्यादाता जे अपना लोभेँ कन्याक जीवनकेँ एहि

प्रकारेँ नष्ट कैलक अछि, यावत् एहि प्रकारक आततायी समाजमे वर्तमान रहत, तावत् एको बालिकाक जीवन एही निर्दयता रूपेँ नष्ट कैल जाइत रहत, यावत् एहि प्रकार एको विवाहकेँ विवाह कहल जाइत रहत - तावत् केवल विधवे विवाह (आपद्धर्म) नहि विवाहोच्छेदो अनिवार्य थिक।'

51. मिथिलामोद, वर्ष 31, उदगार 3, माघ 1348 साल, 1941 ई.

52. मिथिला, वर्ष 1, अंक 1, 1336 साल, 1929 ई.

53. Dr. K.K. Dutta, *Biography of Kunwar Singh and Amar Singh*, p.37, "Kunwar Singh performed the marriage ceremony of his grandson Birbhajan Singh with great pomp and eclat. He was married in the Gidhaur Raj family(Monghyr district). The Barat procession, which included the Rajas of Tikari and Deo, who came up to Patna, was like a self contained caravan having its own bazar, where everything could be purchased. Ten Hakims(Yunani physicians) and twenty five Vaidyas (Ayurvedic physicians) accompanied the Barat to look after cases of illness on the way. The journey to and from Gidhaur, took ten days each way and and Barat halted for five days. Raja Jaymangal Singh of Gidhaur, the host, entertained the Barat on lavish scale. On return from Gidhaur, Kunwar Singh gave one party at Arrah and another at Patna to the English officials."

54. मैथिल समाजमे बालविवाह ओ तिलक, मिथिला, वर्ष 1,अंक 1, 1336 साल/ 1929 ई.

मैथिल ब्राह्मणमे वृद्धविवाह एवं बहुविवाहक प्रथा जतबा कम भेल अछि ततबा बालविवाह एवं तिलकक प्रथाक वृद्धि भेल अछि। हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक विरुद्ध प्रायः कोनो रूपेँ टाका लेबाक प्रथा नहि छल। किछु दिनसँ जात्यांशक अनादर एवं धनांश तथा अङरेजी विद्याक आदर बढ़ि गेल अछि। जाहि वरमे एहि दूनू गुणक सम्भावना वा अस्तित्व छन्हि तनिक तँ चर्चे नहि। धनीक घरक मूर्खो नेना आब 12-14 वर्षसँ अधिक वयसक भेटब असम्भव भै रहल अछि। एही प्रकारक नेनाक प्रतिएं हजार-हजार रुपैआ गनाओल जाइछ। गत शुद्धमे एकर बजार बहुत गर्म छल। विस्वस्त सूत्रसँ विदित अछि अनेको व्यक्ति हजार-हजार तिलक लेलन्हि। जकर सूचना हम आगामी कोनो अंकमे प्रकाशित करब। एहि दुर्व्यवहारसँ मैथिल ब्राह्मण समाजमे कतेक कन्या बंगीय स्वर्णनता जकाँ आत्महत्या करति तकर निश्चय नहि। की मैथिल समाज एहि संक्रामक रोगकेँ आरम्भहिमे रोकबाक यत्न नहि करत?

55. Dr. Dinesh Chandra Sen, *The Folk Literature of Bengal*, 1920, P.No.62 - "And, if they returned to India, they came with strange outlandish manners imitating the ways of foreigners, and fell upon thier quiet homes like thunder-bolts destroying the Hindu ideas of domestic life. The Brahminical leaders, in the absence of any political power to control the situation, prohibited sea-voyages and enacted social laws

for outcasting those who would be guilty of infringing them."

56. Dr. Jata Shankar Jha, *Biography Of An Indian Patriot Maharaja Lakshmishwar Singh of Darbhanga*, Page No.243, Patna, 1972.

To,

The Secretary of Poona Sarbjanik Sabha,

Dt. 7.3.1882.

Dear Sir,

I casually came across a paragraph in the papers saying that you propose sending a few youngmen out to England every year to study for the bar and the other lucrative profession that are now almost entirely monopolized by foreigners...

In conclusion I have only to say that I hope to be excused for this long letter. I have said all that I really given any offence. It is through the influence of such association as the Sabha of Poona, that we hope for the regeneration of India and every Indian and its inhabitants and I will always be only too glad to do all that I can to carry out any your suggestions. The very name of Poona and Satara calls to our mind the almost superhuman efforts of Shivajee and the grand old Peshawas to free India from the thraldom and tyranny of Mohammadan rules and your Shabha still makes us think that in Poona at least the old spark of patriotism is not extinguished. Hoping to be favoured with an early reply. I remain,

Yours faithfully.

Sd. L. Singh

57. Her Highness the Maharani of Baroda and S.M.Mitra,*The Position of Women in Indian Life*, Preface,1912. " During the course of several visits to the West, both to Europe and to America, I was naturally struck by the difference between the position of woman in English and in Indian public life, as represented by her share in the organizations for human welfare in the two countries. The cooperation which exists between Westen men and women in public affairs is practically unknown in India. Public matters in India are almost entirely in the hands of men, and the reason is not far to seek, because the useful organizations for human welfare, in which women cooperate with men in the West hardly exist in India, and where they do technically exist, their influence is scarcely felt.

58. Amie GAYE and Shreyasi Jha - Measuring Women's Empowerment through Migration, UNESCO, *Diversities*, Vol.13,No.1, page No. 49, 2011 _"Since 1950, the female share of international migrants has been moved as 'accompanying family dependents', however, currently more women are migrating independently in search of jobs. This change is a result of a combination of factors- changes in the demographic structure, increasing demand for cheaper caregivers in rich countries, more visible inequalities in wealth and aggressive policies of private recruitment agencies."

59. Her Highness the Maharani of Baroda and S.M.Mitra, *The Position of Women in Indian Life*, Page No.1, 1912.-"When the final chronicle of the twentieth century comes to be written, probably the most remarkable feature in its annals will be the history of the development of woman."



मिथिला

क

विदुषी महिला

मैथिली

गद्यमय ग्रन्थ

लेखिका—अरुन्धतीदेवी
धर्मपत्नी श्री गणेश्वर झा न्यायाचार्य्य

संवत् १९९३ 1936 ई.

Printed by K. Mitra, at the Indian Press, Ltd., Allahabad

ग्रन्थकर्त्रीक

संक्षिप्त जीवन-चरित

ई म. म. मैथिली-राका-राकेश हर्षनाथ झाक दौहीत्रीपुत्री, स्वनामधन्य म. म. डा. श्री गङ्गानाथ झाक दौहित्री ओ हमर जेठि बहिनि थिकीह। हिनक आदर्श-जीवन-कृत्य मिथिलाक सती रमणी गणक कर्त्तव्य-पथ-प्रदर्शक भय सकैत अछि। हिनक जन्म सन् 1323 साल कार्त्तिक कृष्ण चतुर्दशी शनिकेँ मातृक (पाहीटोल)मे भेल। टुक-टुक तकबाक हेतु हिनक नाम ''अरुन्धती'' राखल गेल। नेना अवस्थामे अधिक काल मातामहीक लग प्रयागमे रहैत छलीहि। ओतहि अक्षरारम्भो भेलैन्हि, ओहि समय स्त्री-शिक्षाक घोर निन्दा छल। अतः चिट्ठी-पत्री लिखबासँ अतिरिक्त योग्यता लाभ नहि कय सकलीहि। सन् 1332 साल माघ शुक्ल 6 पष्ठी शुक्रके ँ लालगंज निवासी पण्डित श्रीशिवेश्वरझाक पुत्र न्यायाचार्य्य श्रीगणेश्वर झासँ हिनक विवाह ओ सन् 1335 सालक अगहनमे द्विरागमन भेल। हिनका शिक्षामे विशेष अनुराग छल, सासुर गेला पर मित्रलाभान्त हितोपदेश, रघुवंश (2 सँ 5 सर्ग) दीपिकासहित तर्कसंग्रह, ओ नारीधर्म-प्रकाश आदि कतिपय उपयुक्त ग्रन्थक अध्ययन कयलैन्हि। हिनका सासुरमे ओहि तरहक सम्प्रदाय नहि छल। प्रत्युत ई नित्य स्नान सप्तशती-पाठ कय स्वामीक पूजाक ओरिआओन करैत छलीहि, तकरो समालोचना उनैसम शताब्दीक स्त्री-समाजमे होइत छल। यद्यपि, ताहि हेतु ई अपन कर्त्तव्य पथसँ एकोरती नहि हटैत छलीहि। किन्तु अपन योग्यताक विकासो नहि कय सकैत छलीहि। आश्रमक कार्यसँ समय बचा केँ सीता, सावित्री, शकुन्तला, मदालसा ओ दमयन्ती, आदि सती शिरोमणिक चरित, तथा चन्दा झा कृत मिथिला भाषारामायण, महाभारत (हिन्दी), सुखसागर आदि कतिपय ग्रन्थक अध्ययन ओ मनन करैत छलीहि। मासिक पत्रिकामे 'मैथिली', 'मिथिला', 'मिथिला-मित्र', 'माधुरी' हिनका पसिन्न छल, एहि सबकेँ यथाऽवसर गवेषक दृष्टिसँ बचैत छलीहि। विद्यापति पदावलीसँ अतिरिक्त अपन मातृमातामह (कविवर हर्षनाथ झा)क बनाओल विवाहादि-अवसरक बहुत रासगीत ई जनैत छलीहि। हिनक शिल्पकला बहुत सुन्दर छल। ऊनक स्वेटर टोपी बुनैत छलीहि। कोट, कमीज, कुरता ओ गंजी बहुत सुन्दर सिबैत छलीहि। हिनक बुनल सूतक सब रंग गलैचा बहुतर सुन्दर होइत छल। कसीदा ओ सिकीक वस्तु हिनक अपूर्व होइत छल। ई एक दिनमे दश जोर जनौ काटि तैयार करैत छलीहि। 3 रु. सेर हिनक चरखाक सूत बिकायल छल। ई

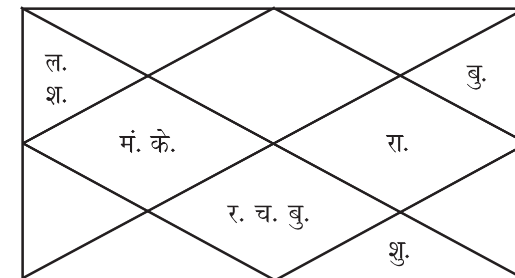
बहुत सुन्दर चित्र सब लिखैत छलीहि। पाकविषयोक विज्ञान हिनका पर्याप्त छल। हिनक रान्हल बस्तु बहुत सुस्वादु होइत छल। हिनक बनाओल मधुर (टिकरी, बालुसाही, रसगुला, पेड़ा आदि) बहुत बढ़िञा होइत छल। ई छोट-छोट बच्चाक रोगक परीक्षा औषध सब जनैत छलीहि। हिनकामे सहनशीलता, सुशीलता, धर्मप्रियता ओ भावविशदता; आदि गुण उपरा-उपरी छलैन्हि। हिनक मुखमण्डलमे अभिमान कखनहु भासित नहि होइत छल, धृतिक तँ ई प्रतिमूर्त्ति छलीहि। हिनका लोभक किञ्चितो लेश नहि छल। ई गुणकेँ नारीभूषण बुझैत छलीहि। ई अधिक काल साधारण वेशमे रहैत छलीहि। हिनका गहनासँ बहुत घृणा छल। पातिव्रत्य-धर्म पालनमे हिनका अपर अरुन्धती कही तँ अत्युक्ति नहि। हिनका तीन गोट सन्तान छन्हि। एहि सभक क्रमिक नाम नीचा अछि -

1. श्री मोहनीदेवी 2. श्री तन्त्रेश्वर झा 3. श्री ललितादेवी

सन् 1343 साल पौष शुक्ल पड़ीव बुधक चारि बजे रातिमे आकस्मिक शोथ ओ श्वास रोगसँ हिनक देहान्त भय गेल। एहि दुर्घटनासँ सम्बन्धिकैकटा नहि, प्रायः जे कियो हिनकासँ परिचित छल, सभक अन्तःकरण दुःख-दहनसँ दग्ध भय गेल। परन्तु कयल की जाय- ''कालो हि दुरतिक्रमः''। अन्ततः हमर ईश्वरसँ यैह प्रार्थना अछि जे हुनक पवित्र आत्माकेँ शान्ति-सुधा-प्लावित कय हुनक मातृ-प्रेम पिपासित तीनू सन्तानकेँ चिरायु करथि।

इति।

जन्मकुण्डली



लेखक

श्री शशिनाथ झा (बेहट)

प्राक्कथन

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या
यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्।
मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्म्मण्डिता या
भूदेवो यत्र भूपो यजनवसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः।।1।।
गङ्गातीरावधिरधिगता यद्भुवो भृङ्ग भुक्तिः
नाम्ना सैव त्रिभुवनतले विश्रुता तीरभुक्तिः।
भूमिं भित्वा समजनि सखे सीरकेतोस्तपस्या
वल्ली यस्याममृतफलदा जानकीकैतवेन।।2।।

किञ्च

कुहचित् कमला कमलालयकोमलपद्म-पराग-लसत्सलिला
कुहचित् कदलीदलचञ्चलताञ्चितकुञ्जसुमञ्जुमही निखिला।
कुहचित् कलनादविहङ्गमसङ्गिरसालविशालवनीविमला
भुवि भव्यपुरातनसभ्यकलाकलिता ललिता जयतान्मिथिला।।

अथवा

गंगा बहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा।
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा।।
कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुरा, वागवती कृतसारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से ''मिथिला'' विद्यागारा।।

श्री 108 जगज्जननी जानकीक बाल्य-काल-मुकुलित कमल-विलास-ललामा, भू-देवदेवभूपविदेह-छत्र-छाया-सुशीतला, यज्ञ-स्थली-मिथिला, केवल, कर्दम, कपिल, याज्ञवल्क्य, जैमिनि, अक्षपाद, कणाद, मण्डन, कुमारिल, वाचस्पति, गङ्गेश, पक्ष-धर, शङ्कर, सचल, गोकुलनाथ आदि दुर्द्धर्ष मनीषीक जन्म-भूमि नहि थीक, दिग्विजयिनी विश्व-विख्यात विदुषी सती रमणीक मनोहर निवास-कुटियो एकरा मुक्तकण्ठसँ कहि सकैत छी। वेद ओ उपनिषदहु मध्य मिथिलास्थ ऋषिगण ओ वल्कल-वसना मुनिकन्या लोकनिक कीर्त्तिगाथाक कथा उपलब्ध होइत अछि। अतः मिथिलाक प्राचीनता सृष्टिक सङ्ग सम्बद्ध अछि, एहिमे लेशमात्र सन्देह नहि। वैदिक-आदिकालमे मिथिलाक रमणी गणक हेतु गीर्वाण-वाणीक

रमणीय मन्दिरक द्वार बन्द नहि छल; तपोवनक शान्ति कुटीमे एक दिश वेद-कला-कुशल ऋषि मुनिक बालक ''तत्त्वमसि'' महावाक्यार्थक यथार्थ मनन करैत छलाह; तँ दोसर दिश वल्कल-वसना, मुनि-कन्या माइक सङ्ग, भाइक सङ्ग, बापक सङ्ग, ओ स्वामीक सङ्ग अध्यात्म-विद्याक अनुशीलन करैत छलीहि। हिंसक जन्तुसमवेत भयानक जंगल केवल बालकैक वेदक तानसँ गुञ्जायमान नहि छल; किन्तु ऋषिवालिकाक हृत्तन्त्रीक कोमल ओ मधुर ऋक्स्वरहुसँ शोभायमान छल। एतवेक नहि - कर्मकाण्ड-प्रकाण्ड पण्डित ऋषिलोकनि, प्रचण्ड अग्नि-ज्वाला-मण्डित कुण्डमे आहुति-प्रदानक सङ्ग-सङ्ग गम्भीर-स्वरसँ जाहि मन्त्रक उच्चारण करैत छलाह, ओहि मन्त्र सभक स्मर्त्ता वा रचयिता ऋषिगणे नहि छलाह, हुनक बहु, बेटी, बहिनि, ओ भतिजियो हुनका लोकनिक सङ्ग भय अनेक ऋचाक चमत्कृत रचना वा स्मरण करैत छलीहि। हमरा एहि सभक पता ऋग्वेदक अनुवाक आदिक पर्य्यालोचनासँ लगैत अछि। ओहि विश्व-विजयिनी राज्यमे प्रेमक अखण्ड-साम्राज्य छल। कलह, द्वेष, मिथ्या, ओ मोह लय स्थान नहि छल। सम्राज्ञी छलीहि शान्ति, तँ विवेक छलाह चक्रवर्त्ती सम्राट्, शान्तिक प्रिय-सहचरी छलीहि श्रद्धा तँ विवेक मन्त्री छलाह प्रबोध। अतएव सिंह, हाथी, भेड़ा, महीसि, साप, सपनौरि, बकरी, बाघ, एकत्र निर्भय विचरण करैत छल। एहि उन्नति-स्रोतक प्रवाहक प्रारम्भमे हम बुद्धि, विद्या, विवेक ओ गौरवसँ विभूषिता ''विश्व-वारा, सूर्य्या, ओ देवहूति आदि'' कतिपय विदुषी रमणीकेँ देखैत छी। हिनकहि लोकनिक प्रतिभारत-भारत गौरवान्वित भय देशान्तरक शिरोमुकुट अछि। हिनका लोकनिक समयमे विश्वक अखिल वस्तुमे ब्रह्मक भावना छल, ताहिसँ समाज बलिष्ठ छल, सरल छल, उदार रूपमे परिणत छल, अतएव ओ लोकनि आनन्दे सँ गान करैत छलीहि- ''शृणवन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः आ ये दिव्यधामानि तस्थुः, वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य-वर्णे तमसः परस्तात्'' ई निर्भ्रान्त सत्य अछि - समय एकरङ्ग नहि रहैत अछि, वास्तविक मे संसारक परिवर्त्तनक समयक हेरफेरहिमे अन्तर्हित अछि। अतएव, आइ जे वृद्ध्युन्मुख अछि, काल्हि पतनोन्मुख भय वैह देखि पड़ैत अछि, रंक राजा, राजा रंकक रूपमे परिवर्त्तित होइत अछि; तखन हमरा मानय पड़ैत अछि - नित्य नवीनताक अवलोकन करबाक समीहे सृष्टिक प्रिय जननी थीक, नव-नव वस्तु, नव-नव भाव, नव-नव दृश्य ओकर अभिलषित सन्तान थीक। येह हेतु जे ''आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यो पृथ्वी''क समय चल गेल, उपस्थित भेल- ''अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्''क समय। एहि कालमे अबला जातिक वेदाधिकार छीनि लेल गेल, आधुनिक जातीय सभाक उचित कर्त्तव्यपथावरोधक नवीन धारा जकाँ शूद्रक सङ्ग द्विज-बधूअहुक हेतु ''न स्त्रीशूद्रौ वेदमधीयाताम्'' नियम निर्मित भेल, सङ्ग-सङ्ग वैदिक युगक इतिश्री ओ औपनिषद, स्मार्त्त ओ दार्शनिक युगक श्रीगणेश भेल। यैह छल धर्मशास्त्र ओ पुराणादिक निर्माण काल। एहि कालमे मैथिल-सभ्यता समुन्नति-शिखरारूढ़ होइत छल, ओ वेदक तत्त्व दार्शनिक सूत्र रूपमे निबद्ध होइत छल। एहू युगमे शक्तिशाली मैथिलक सङ्ग अबला महिला दार्शनिक तत्त्व समीक्षाक हेतु अग्रसर होइति छलीहि। केयो

बलवान् पुरुष विद्वान्, दार्शनिक विज्ञान सम्बन्धमे अबला जातिकेँ परास्त कय उच्चासन-समासीन नहि भय सकलाह; ओहो लोकनि पुरुष सङ्ग समान भाव, समान उत्साह, ओ समान अध्यवसायसँ विद्याविभूषिता भय मिथिलाक रङ्ग-भूमि मध्य अपन-अपन पात्रताक चमत्कार देखबैत छलीहि। एहि युगमे हम योगीन्द्र याज्ञवल्क्य, राजर्षि जनक, महामुनि गौतम प्रभृतिक समान कक्षामे गार्गी, मैत्रेयी आदि कइएक विश्वविख्यात विदुषी रमणीक परिचय उपनिषद गाथासँ पबैत छी। कइएक शताब्दीक बाद इहो साम्राज्य जाइत रहल, उपस्थित भेल बौद्ध-धर्मक विश्वव्यापी आन्दोलन, यादृश सामाजिक व्यवस्था सुगठित छल ओ नहि रहल, सामाजिक व्यवस्था नूतन धारासँ प्रवाहित होमय लागल, पशुवध-सम्बन्ध-यज्ञ निष्ठुराचरणक क्षेत्र कहल जाय लागल, मनुष्य जीवनक अवश्यम्भावी आधि हटयबाक हेतु गौतम बुद्ध मोक्षक अभिनव पथक अनुसन्धान करय लगलाह, अगणित ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व ओ शूद्र बौद्ध धर्मसँ दीक्षित भय गेल, सनातन धर्मावलम्बीक हृदय काँपि उठल, धार्मिकताक अढ़मे बौद्धधर्मावलम्बिनीक व्यभिचार प्रारम्भ भेल, तकर कारण स्त्री-शिक्षैकेँ लोक बुझय लागल, स्त्री-शिक्षामे क्रमिक शिथिलता अभिव्याप्त भेल। परन्तु ओहू दिन मिथिला विदुषी पुत्रीसँ खाली नहि रहलीहि। ओहि समय भारती आदि कतिपय विशिष्ट विदुषीक सत्ता छल, हुनका लोकनिक उज्जवल मुख आइयो इतिहास-दर्पणमे स्पष्ट प्रतीत होइत अछि; ताहिसँ हृत्कमल प्रफुल्लित भय जाइत अछि, मन आनन्दसँ नाचि उठैत अछि तँ आत्मा गौरवगङ्गाक पवित्र प्रवाहमे पुनीत भय जाइत अछि। बौद्ध-धर्मक आतङ्क बहुत दिन नहि टिकल, शरभ रूप शङ्कराचार्य बौद्ध-शार्दूलक चाङ्गुरसँ आर्य्य धर्म ऐरावतक रक्षा कयल, समाजक कलेवर बदलि गेल, अद्वैतवादामृत सिञ्चनसँ सनातनधर्म-द्रुम पल्लवित भेल, पद-दलित हिन्दू अपन मार्ग पकरय लागल। किन्तु खेद! ई सुखद समय बहुत दिन नहि रहि सकल, हिन्दू-धर्म, हिन्दू-कीर्ति, हिन्दू-सभ्यता रूप सुन्दर-सरोजपर बलवान् मुसलमान लोकनिक निःकरुण-दारुण आक्रमण-तुषार वरसि गेल, जाहि राजाक अवलम्ब पर वर्णाश्रमधर्म गर्वित छल ओ राजधर्म दृढ़ छल, ओ स्थिर नहि रहि सकलाह, आततायी बलवान् मोगल पैठानक द्वारा हिन्दूक आदर्श-पुस्तक-माला अग्निक प्रबल ज्वालामे स्वाहा होमय लागल, शिक्षाक बदला प्राण-भिक्षा प्रारम्भ भेल, सतीत्व-रक्षाक हेतु ''पर्दा'' प्रथा आओर प्रबल भय गेल, स्त्रीगणकेँ ककरहुसँ भरिमुह बजबौक सौभाग्य अकस्माते प्राप्त होइत छल। एहन संकटापन्न स्थितिमे उच्चकोटिक शिक्षा लाभ अति दुर्लभ नहि तँ सुलभो नहि छल। तथापि, स्त्री-शिक्षाक बिना भावसँ मिथिलादेश सम्बद्ध नहि भेल। एखनहु विकट स्थितिमे हम लक्ष्मी, लखिमा, चन्द्रकला, चामुण्डा, ओ कादम्बरी आदिकेँ विदुषीक रूपमे पबैत छी। ई मानल बात अछि जे अत्याचारीक अस्तित्व अधिक दिन नहि रहैत अछि; मुसलमान-साम्राज्य-भास्कर कौटिल्यावाद रूप अस्ताचलमे सदाक हेतु लीन भय गेल, समय आयल विदेशी शासकक। एहि समयमे पुरातत्त्वान्वेष्टा

सुधारवादी, नेतालोकनि ''स्त्री-शिक्षा''क घोर आन्दोलन कयल, आन-आन देशमे आन्दोलन सफल भेल, पूर्वक जकाँ दुर्द्धर्ष विद्वानक समकक्षामे पाश्चात्य विद्याक विशिष्ट विदुषी उपस्थित भेलीहि। किन्तु मिथिलामे स्त्री शिक्षाक आन्दोलन युक्तियुक्त नहि बुझल गेल। फल ई भेल जे उन्नैसम शताब्दी मध्य स्त्री-शिक्षामे मिथिला पछुआ गेलि। पछुअयबामे एक हेतु इहो अछि जे प्राचीन आ' अर्वाचीनकालीन मिथिलाक विदुषी महिलाक शिक्षा-सम्बन्धी ज्ञानी और अधिकांश मैथिलानीकेँ नहि छन्हि। ज्ञान हो कोना? प्राचीन कालसँ अर्वाचीन काल तक जे केओ विदुषी भय गेलीह, हुनका लोकनिक पवित्र जीवन- चरित्र चित्रित नहि अछि। चित्रित नहि होयबाक कारण यैह जे - ओहि सुदूर अतीत समयमे जीवन-चरित लिखबाक परिपाटी नहि छल; अतएव अधिकांश विदुषी महिलाक काल अनन्तकालक हेतु विस्मृति-पथमे अन्तर्हित भय गेल, ओहि सभक नाम निशानो धरि शेष नहि रहल। जनिका लोकनिक शेष रहल, से सभ एकत्र संगृहीत नहि अछि, कतोकक कतहु-कतहु परिचय मात्र पबैत छी, ताहिसँ हृदयमे अपरिमित सन्तोष नहि होइत अछि। किछु संगृहीत अछियो तँ भाषान्तरमे, मैथिलीमे नहि। अतः आइ हम ओहि अभावकेँ हटयबाक हेतु ''मिथिलाक विदुषी महिला''क चरित्र-चित्रण करबा लय अपन लेखनी उठाओल अछि; हमरा आशा तथा विश्वास अछि जे मिथिलाक बहिनि लोकनि शिक्षा-सम्बन्धी निबन्धक अवलोकन कय बहुत किछु लाभ उठओतीहि। यदि एहि लेखसँ ककरहु मनमे प्राचीन आदर्श महिलाक सदृश ज्ञान उपार्जन ओ विद्या-लाभ करबाक प्रबल अभिलाषा उत्पन्न होयत तँ हम अपन श्रमकेँ सर्वथा सार्थक बुझब, तथा हमर अन्तरात्मा अति तृप्त भय गौरवान्वित भय जायत। हम जाहि कार्य्यक हेतु उद्यत भेल छी, ओकरा सम्पूर्ण करब सुलभ नहि अछि; सुलभ अछियो तँ ज्ञान ओ योग्यता-साध्य। हमरा दूहूमे एको नहि। अछि केवल उत्साह, ओ साहस। इहो हमरा 'महिला माला'क द्वितीय मणिक अवलोकनसँ भेल। एतबेक नहि, मणिक आलोकमे अनेक लेख सामग्रियो पाओल। तदर्थ श्रीमती कृष्णकुमारी देवीक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत छी। वृहदारण्यक, ओ पुराणादिसँ हमरा बहुत सहायता भेटल। अतः उक्त ग्रन्थ लेखक महोदयक चरण-पङ्कजक हम सादर प्रमाण करैत छी। बहुतोक विदुषी महिलाक चरित्र लिखबाक सामग्री उपनिषदादिमे उपलब्ध होइत अछि; परन्तु कतोकक जीवन-लीला कइएक शताब्दीक किंवदन्तीमे सम्बलित अछि; किंवदन्तीमे कहाँ तक सत्यता सन्निविष्ट अछि - एकरा प्रमाणित करब कठिने नहि, असम्भव अछि। तैं पाठक वा पाठिका लोकनिक ओतय हमर सविनय अनुरोध जे किंवदन्तीक आधार वाला लेखमे जाहि ठाम सर्वमान्य इतिहाससँ विरोध होइक, ताहि ठाम संशोधन करबाक कृपा करथि। इत्यलमतिविस्तरेण-

अरुन्धतीदेवी

समर्पण

हम सबसँ बेशी निःसीम स्नेहक ऋणी अपन मातामही (म.म.डा. श्री गङ्गानाथ झाक धर्मपत्नी इन्दुमतीदेवी)क छी। दौहित्रीवर्गमे सबसँ जेठि होयबाक सौभाग्य हमरहि प्राप्त छल। अतएव, अधिक काल अपनहि लग प्रयागमे रखैत छलीहि। जखन हम गृहिणीत्व-उपाधि-विभूषिता भय सासुर अयलहुँ, तखन समुद्र-यात्राक गेला-गोली-प्रयुक्त नैहर ओ मातृकक मुहो देखय दुर्लभ भय गेल। ई उपजीव्य-उपजीवक वियोगजनित अन्तर्वेदना कुलीना ललनाक अन्तर्मात्रवेद्य भय सकैत अछि। ई समय ग्रन्थ समाप्तिक छल, समर्पण करवाक योग्य पात्र अपन पूज्यपाद मातामहीकेँ बिछने छलहुँ ओ अचानक परलोक-वासिनी भय गेलीह। हम आइ ओही मृतात्माक पुनीत प्रेममे ई ग्रन्थ सादर सस्नेह समर्पित करैत छी।

हमरा पूर्ण विश्वास अछि, जहिना नेना अवस्थामे हमर अधबोलिया सुनि हृष्टहृदया होइति छलीहि, तहिना प्रेमसँ लटपट इहो अटपट ग्रन्थ हुनक प्रसन्नताक कारण होयत।

श्रीदुर्गादेव्यै नमः

मिथिलाक विदुषी महिला

(1) देवहूति

हिनक पिताक नाम छल ''स्वायंभुव मनु''। पुराण-प्रसिद्ध प्रियव्रत ओ उत्तानपाद हिनक सोदर भाय छलथिन्ह। जखन देवहूति अपन प्रिय सहचरी द्वारा अभिप्राय प्रकाश कयल जे मिथिलाक कर्दम ऋषिसँ हम विवाह करब; ओहि समय विद्या ओ ज्ञानमे सर्वश्रेष्ठ ऋषि कर्दम छलाह, हिनक ब्रह्मचर्य्य ओ विद्याध्ययन समाप्तप्राय छल। एक दरिद्र ऋषिक सङ्ग अपन जीवन-सुख सम्बरण करबाक राजकन्याक मुख्य अभिप्राय छल शिक्षा प्राप्त करब। नेनहिसँ देवहूतिकेँ आध्यात्मिक शिक्षाक बहुत अनुराग छल; बाप-भाइसँ बहुत किछु शिक्षा लाभ कइयो चुकलि छलीहि। हिनक आन्तरिक उच्च कोटिक अभिलाषा पर प्रसन्न भय स्वायंभुव विवाहक कथा लय ऋषि कर्दमक आश्रममे राजदूतकेँ पठाओल। ओहि समय ऋषि कर्दम गृहस्थाश्रममे प्रवेश करबाक इच्छुक छलाह। देवहूति सदृशी श्रेष्ठ विदुषीकेँ अर्द्धाङ्गिनी पयबाक हिनका स्वप्नहुमे सम्भव नहि छल। ऋषि सहर्ष विवाह करब स्वीकार कयल। स्वीकृति पाबि राजा स्वायंभुव मनु बहुत धूम-धामसँ ऋषि कर्दमकेँ देवहूति कन्यारत्नक दान देल। ऋषि अननुभूत महिला रत्न पाबि कृतार्थ भेलाह। किछु दिनक बाद देवहूति राज-भोग छाड़ि स्वामीक सङ्ग भयानक जङ्गलक शान्तिकुटीमे रहय लगलीहि। हिनका राजप्रसादक शयन सुखसँ कतेक वेशी स्वामी-कर कमल-रचित कुश-शय्यापर आनन्दानुभव होइत छल, बहुमूल्य रेशमी वसनसँ वल्कल वसन बहुत प्रिय छल। एक दिन देवहूति अवसर बनाय स्वामीसँ चिर अभिलषित शिक्षाक भिक्षा मांगल।

ऋषि अपन धर्मपत्नीक विद्याक प्रगाढ़ प्रेम देखि अत्यानन्दित भय शिक्षा देमय लगलथिन्ह। ओहो एकाग्रचित्त भय स्वामी-प्रदत्त शिक्षाक अभ्यसन करय लगलीह। हिनक अलौकिक प्रतिभा ओ विद्याक प्रबल लालसा पर मुग्ध भय ऋषि कर्दम अपन ज्ञान-कोषक अनुपम अमूल्य रत्न अर्द्धाङ्गिनीक हृदयङ्गम कराओल, थोड़बहि दिनमे देवहूति सर्वश्रेष्ठ विदुषी भय गेलीहि, हिनक सब ठाम चर्चा होमय लागल; हिनक समान स्पर्द्धा कयनिहारि भारतमे केयो विदुषी नहि छलीहि। हिनका गर्भसँ विशिष्ठक पत्नी अरुन्धती, अत्रि मुनिक गृहणी अनसूया ओ सर्वप्राचीन सांख्य दर्शनक जन्मदायक महामुनि कपिलक जन्म भेल; अरुन्धती ओ अनसूयाक ख्याति जतेक पातिव्रतधर्मक हेतु अछि, ओतेक विद्याक हेतु नहि;

किन्तु विद्या-विभूति दुहू बहिनिकेँ थोड़ नहि छल। ऋषि कर्दम भविष्णु पुत्र कपिलदेवक मुह देखि गृहस्थाश्रमसँ हटि गेलाह। देवहूतिक ज्ञान-पिपासित अन्तस्तल शान्त नहि भेल छल, हिनक मन अनवरत निगूढ़ तत्त्वक अन्वेषणमे संलग्न रहैत छल। मानव जातिक आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति कोन तरहेँ होयत, एहि हेतु देवहूतिक चित्त व्यग्र छल। शिक्षा समय प्राप्त भेला पर ई कपिलदेवकेँ प्राथमिक शिक्षा दय सुशिक्षित कयल। तदन्तर पतिक एकान्त आराधनासँ प्राप्त उपनिषद रहस्य-सांख्यदर्शनक सुसिद्ध बीजमनत्रक दीक्षा देल। कपिलदेव जननीप्रदत्त मन्त्रोपासना-प्रसादात् आदि दर्शन सांख्यक रचना कयल। हिनक आश्रम बंगाल डिस्ट्रीक्ट गजेटियरक अनुसार मधुबनीक पश्चिम कमला ओ करैया नदीक सङ्गम पर ककरौड़ गाममे मानल जाइत अछि। ओहि ठाम कपिलमुनिक स्थापित कपिलेश्वर नामक महादेव अद्यापि विद्यमान छथि। एहिठाम वर्तमान महाराजाधिराजक माय एक वृहत् तड़ाग खुनवाय चातुश्चरण यज्ञ कयलिन्ह, एहि कीर्त्ति चन्द्रिकासँ मन्दिरक शोभा विशेष चमत्कृत अछि।[1]

(2) महाविदुषी सूर्य्या

एहि महादेवीक आश्रमादिक कोनो विशेष रूपसँ पता नहि लगैत अछि। हिनक रचित ऋग्वेदक दशम मण्डलक 85म सूक्त थीक। एहि सूक्तक प्रत्येक ऋचा नवविवाहिता वधूक उपहारक हेतु अमूल्य-रत्न अछि, ओकर भावार्थ ई थीक

''ईहि कन्यारूप पवित्र पुष्प पितृकुलवृक्षसँ तोड़ि पतिक करमे समर्पित भेल; हे इन्द्र ई कन्या स्वामीक गृहमे सौभाग्यवती हो।''

''हे कन्ये!! पूषादेवता अहाँक हाथ धयकेँपितृ-निकेतनसँ स्वामीक सदन तक

नोट केयो केयो कहैत छथि

कपिलमुनिक तपश्चर्य्याश्रम ओहि ठाम छल जाहिठाम सगर महाराजक 60,000 सन्तान केँअभिशाप द्वारा भस्म कयने छलाह, अतएव हुनक आश्रम सागरक समीपमे होयब प्रमाणित होइत अछि, मिथिलामे नहि।

परन्तु ई हुनक भ्रान्तिमूलक धारणा तावते तक स्थिर रहि सकैत छन्हि - यावत् निम्नलिखित व्यास-वचन लोचन-पथाश्रित नहि भेल छन्हि - इयाज हिमवत्पार्श्वे सागरस्य समीपतः। उपरोक्त वचन महाराज निमिक यज्ञ-भूमिक प्रसङ्गमे लिखल अछि। एतवेक नहि, व्यासजीक वचनमे इहो सिद्ध होइत अछि जे मिथिला नगरीक समीपवर्ती गङ्गातट छल, यथा-

एवं निमिसुतो राजा प्रथितो जनकोऽभवत्।

नगरी निर्मिता तेन गङ्गातीरे मनोहरा।

मिथिलेति सुविख्याता...

बिना कोनो विघ्न-बाधाक लय जाथु; दुनू अश्विनीकुमार अपना रथपर चढ़ाकेँबापक आङन सँ पतिक आलय लय जाथु। अहाँ स्वामीक गृहमे प्रशंसा पाउ; ओ गृहक अधिष्ठात्री बनू।''

''जे क्यो पति-पत्नीक समीप अनिष्ट करबाक उद्देश्यसँ आबय, से सब विनष्ट हो; ई पति-पत्नी पुण्यपुञ्ज द्वारा विपत्तिकेँ कात करय; एहि दम्पतीक समीपसँ सभ शत्रु भागि जाय।''

''ई नवविवाहिता वधू अति सुलक्षणा अछि; अहाँ सब मिलि केँ एकरा देखू- ई कन्या सौभाग्यवती हो, पति-प्रेयसी हो, ई आशीर्वाद दय अहाँ सब घर केँ फिरि जाउ।''

''हे दम्पते अहाँ दूनू प्राणी सदा एकत्र रहू; अहाँक दुहुक मधुर मिलन कहियो भङ्ग नहि हो।''

''प्रजापकि आशीर्वादसँ पुत्रपौत्रादिक उत्पन्न हो; अर्य्यमा देवता वृद्धावस्था तक एकत्रित कय राखथु; हे नव-विवाहिता वधू! अहाँ कुशलक सङ्ग चिरकाल तक स्वामीक घरमे रहू। नोकर चाकर पशु-पक्षी आदिक उपर दया-दृष्टि राखब; ओहि सबकेँ सन्तानक समान पालन करब।''

''हे कन्ये! अहाँक युगल लोचन दोष शून्य हो; अहाँ पतिक हेतु कल्याणदायिनी बनू; सदत अहाँक हृदय विकसित रहओ, अहाँक शरीर सौन्दर्यमय बनल रहओ; देवतालोकनि पर अहाँक अचलभक्ति बनल रहओ।''

अहा!! एक नारीक हृदयक की सुन्दर उद्गार ओ भाव अछि विशदतापूर्ण की बढ़िञा कहबाक चमत्कार अछि। नवविवाहिता वधूक हेतु केहन अनुपम आशीर्वाद अछि। सूर्य्या महादेवीक अन्तस्तलक आशीर्वादध्वनि आइयो प्रतिध्वनित भय हमरा लोकनिक कर्ण कुहरकेँ स्वर्गीय आनन्द प्रदान करैत अछि।

(3) विश्व-वारा

(4) अपाला

ई दुहू विदुषी रमणी अत्रि-गोत्रमे उत्पन्न भेलीहि; ऋग्वेद-संहिताक पाँचम मण्डलक द्वितीय अनुवादक अट्ठाइसम सूक्त विश्ववारा-सङ्कलित अछि; एहि सूक्तमे 6 अतुलनीय ऋक् अछि। अपाला त्वक् रोग-प्रपीड़िता होयबाक कारणेँ पतित्यक्ता भय पिताक तपोवनमे अपन जीवन बितओलैन्हि। विश्ववाराक तृतीय ऋकक भावार्थ ई अछि - ''हे अग्ने!! अहाँ हमरा पर प्रसन्न होउ; हमरा सौभाग्य प्रदान करू; हमर शत्रु समूहक दमन कय दाम्पत्य प्रेम प्रगाढ़ करू।''

(5) वाक् महादेवी

ई अनृण ऋषिक कन्या छलीहि; महतरी प्रगन्नाक अन्तर्गत नेपाल-तराइमे हिनक आश्रम छल; हिनक रचनाकलासँ अनुभव होइत अछि जे वाक् ज्ञानामृत पानमे अपन जीवन-यापन कयलन्हि; सर्वप्रथम अद्वैतवादक निनाद यैह कयल; ई परम विदुषी तथा संसारविरक्ता छलीहि; सर्व प्राचीन ऋग्वेद संहिताक दशम मण्डलक 125म सूक्तक आठ मन्त्र हिनके स्मरण वा रचल थीक। जे देवी-सूक्तक नामसँ घर-घर प्रसिद्ध अछि। महाराज सुरथ तथा समाधि नामक वैश्य एही आठ मन्त्रक जप कय जगदम्बाकेँ प्रसन्न कयने छलाह। ओहि देवी-सूक्तक भावार्थ ई अछि-

''हम रुद्र, वसु, आदिक अन्तरात्माक स्वरूपमे विचरण करैत छी; हमहीं उभय मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि तथा अश्विनीकुमारकेँ धारण कयने छी; हम सकल हृदय अदृश्य जगतक अधिष्ठात्री छी; हमरामे असंख्य प्राणी प्रविष्ट अछि; जीव जे देखैत छथि; प्राण धारण करैत छथि; ओ अन्न अदन करैत छथि से सब हमरहि द्वारा सम्पादित होइत अछि। हमरे सेवा अमरगण ओ मनुष्यलोकनि करैत छथि, हमहीं सब कामना कयल करैत छी; हमहीं ककरहु स्रष्टा, ऋषि, अथवा बुद्धि-विभूतिशाली कय सकैत छी; स्तोत्रविद्वेषी ओ हिंसा-निरत व्यक्तिक निधनक हेतु हम रुद्रक धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाओल; हमहीं भक्तगणक उपकारक हेतु शत्रुपक्षक विपक्षमे संग्राम कयल, हम स्वर्ग ओ मर्त्यमे अनुप्रविष्ट छी, एहि भू-लोकक उपरस्थित गगन मण्डलक हम सृष्टि करैत छी, पवन जहिना स्वेच्छासँ बहैत अछि, तहिना समस्त भुवन कोशक उत्पन्नकर्त्री हम स्वयं अपन समीहाक अनुसार सर्व कार्य्य करैत छी। हमरा सब अपन माहात्म्यक बलसँ उत्पन्न भेल अछि।''

(6) महाविदुषी मैत्रेयी

ई मित्र ऋषिक कन्या छलीहि; मित्र ऋषि अध्यात्म विधाक धुरन्धर विद्वान छलाह। हिनक आश्रम महतरी प्रगन्नाक अन्तर्गत वाल्मीक्याश्रमक समीपवर्ती वनमे छल; नेनहि अवस्थासँ मैत्रेयीक तीक्ष्ण बुद्धि छल, हिनका बापहिसँ शिक्षा भेटल छल; हिनक पवित्र परिणय महामुनि याज्ञवल्क्यसँ भेल; हिनक आश्रम बी.एन. डब्लू. रेलवेक कमतौल स्टेशनक समीपवर्ती जरैल प्रगन्नाक अन्तर्गत योगीवन (जगिवन)मे एक बड़क गाछ तर मानल जाइत अछि। परन्तु 'मिथिला-तीर्थ प्रकाश'क अनुसार याज्ञवल्क्यक आश्रम कोराही प्रगन्नाक अन्तर्गत कुसुमा गाममे धनुषाक निकट स्थिर होइत अछि। ई कोनो राजा जनकक गुरु छलाह; मैत्रेयीक प्रकाण्ड पाण्डित्यक परिचय वृहदारण्यक उपनिषदसँ होइत अछि। बृहदारण्यकक अनेक पृष्ठ मैत्रेयीक ज्ञान-गगनमण्डलक देदीप्यमान नक्षत्र थीक।

महर्षि याज्ञवल्क्यक संग एक-एक दर्शनशास्त्रक निगूढ़ ओ दुरूह तत्त्वकेँ लय मैत्रेयी जे तर्क-वितर्क द्वारा आलोचना कयल, ओकर अध्ययन वा मननसँ मन प्रफुल्लित भय जाइत अछि। याज्ञवल्क्यकेँ एक आओर स्त्री छलथिन्ह। हुनक नाम छल ''कात्यायनी''। एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य ''आश्रमादाश्रमङ्गच्छेत्'' एहि सिद्धान्तक अनुसार गृहस्थाश्रमक त्याग कय वानप्रस्थ-आश्रम जयबाक इच्छुक भय अपन सब सम्पत्ति दुहू गृहिणीकेँ बाँटि लेबाक हेतु कहलन्हि। मैत्रेयी बजलीहि-''इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात् कथं तेनामृता स्याम्'' (यदि ई धरणी धनधान्य-परिपूर्ण भय हमर हस्तगत भय जाय तँ की हम ओहिसँ मोक्ष-पद पाबि सकब?)। एहि पर याज्ञवल्क्य उत्तर देल ''यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्यादमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेनेति'' (जहिना उपकरणयुत मनुष्यक जीवन बितैत छैक तहिना अहूँक जीवन बितत, निर्वाण-पदक आशा वित्तसँ नहि)। एहि पर मैत्रेयी कहल- ''येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्य्याम्'' (जाहिसँ अमर नहि भय सकब ओ लए केँ की करब?)।

अहा!! केहन ई पाण्डित्यपूर्ण अमूल्य नारीक हृत्तन्त्रीक उक्ति अछि; विषय-वासना-असहयोगक की सुन्दर युक्ति अछि! ई मैत्रेयीक गम्भीर वाणी सभ्य जगत् मे अमर रहत, एहिमे लेशमात्र सन्देह नहि। आगाँ आबि कैँ ब्रह्मवादिनी विदुषी मैत्रेयी ऊर्ध्वमुखभय कल जोरि जे ब्रह्म-प्रार्थना कयल, ओकरा पढ़िकेँ दार्शनिक दिग्गज विद्वान नतमस्तक भय जाइत छथि! ओ प्रार्थना ई अछि - ''असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतङ्गमय- अविरावीर्म एधि रुद्र यत्ते दक्षिणां मुखं तेन मां पाहि नित्यम्।''

'हे सत्यस्वरूप! अहाँ हमरा सब असत्यसँ हटाय अपन सत्य रूपमे पहुँचाउ; हे ज्ञानमय, मोहरूप अन्धकारसँ बहार कय ज्ञानलोकमे लय जाउ; हे आनन्दरूप, मृत्युसँ बचाकेँ हमरा अमृतक समीप पहुँचाउ, हे स्वयंप्रकाश, अहाँ हमरा लग प्रकाशित होउ; हे रुद्ररूप, अहाँक जे प्रसन्न कल्याणमय मुख अछि, ओहि सँ सदत हमर संरक्षण करु।'

(7) महाविदुषी गार्गी

मित्र ऋषिक आत्मीय वचन्कुऋषिक आत्मजा गार्गी छलीह। ई मैत्रेयीसँ बढ़ि-चढ़ि केँ विदुषी छलीहि। एक समय ब्रह्म-विद्या-विशारद राजर्षि जनक एक बहुदक्षिणाक पैघ यज्ञक उपलक्ष्यमे देश-देशान्तरक विदुषी तथा धुरन्धर विद्वान सभकेँ आमन्त्रित कयने छलाह। निमन्त्रण पाबिकैँ समय पर सभ उपस्थित भेल। यज्ञक अन्तमे मिथिलेश विदेह पण्डित-सभा कयल। सभामण्डपक समीपमे दश-दश सुवर्ण-मुद्रा (असर्फी) मण्डित सहस्र गाय बन्हबाय देल। राजर्षि जनक पण्डित मण्डलीकेँ सम्बोधन कय कहल जे - 'हुनकहि लय सुवर्ण-मुद्रा-सहित सहस्र गाय बान्हल अछि जे एहिमे सबसँ बढ़िकेँ ब्रह्मज्ञानी होयब।'

वैदेहक एहि कठिन प्रश्न पर पण्डित मण्डल लज्जित भय गेल। बहुतक मुहमे फुरफरी परि गेल। ककरहु गाय लेबाक सहसा साहस करबामे प्रवृत्ति नहि होइत छल। जखन अगणित विद्वानक बीचमे केयो सबसँ बढ़िकेँ ''ब्रह्मज्ञ'' होयबाक मुह नहि कयल; तखन मैथिल महर्षि याज्ञवल्क्य ओहि सहस्र गायकेँ लेबाक हेतु उद्यत भेलाह। यद्यपि, सभकेँ ज्ञात छल जे ज्ञान ओ विद्यामे महर्षि याज्ञवल्क्य सर्वश्रेष्ठ छथि। परन्तु उपरोक्त साहस सभकेँ असह्य भय गेल। भरल सभामे एहि तरहक अपमान देखि सभक क्रोधाग्नि धधकि उठल। परम्पर कनफुस्की होमय लागल। अन्ततः होता अश्वल, तदनन्तर जारत्कारब आदिक प्रश्नवाण महर्षि याज्ञवल्क्यक उपर अगणित रूपमे खसय लागल। महर्षि शान्तिपूर्वक एक-एक प्रश्नवाणक छेदन कयल। सभ उपरमित भेलाह। गार्गी सभाक एक कोनमे बैसलि सभ सुनैत छलीहि, हुनकासँ नहि रहल गेल, ओ उठिकेँ महर्षि याज्ञवल्क्यसँ प्रश्न कयल- ''हे याज्ञवल्क्य! की एहि सभामे सभसँ बढ़िकेँ ब्रह्मज्ञ अहीं छी?''

याज्ञवल्क्य गौरवपूर्ण शब्दमे उत्तर देल ''हँ''।

गार्गी कहल, 'केवल ''हँ'' कहि देलासँ ब्रह्मज्ञ नहि भय सकब; ओकर परिचय दीअ!'

एहि पर शास्त्रार्थ बजरि गेल; ब्रह्मविषयक प्रश्नोत्तर होमय लागल; मिथिला-कुमारी गार्गीक प्रश्नवाण महर्षिकेँ बेधय लागल; पण्डित-मण्डल गार्गीक युक्ति-युक्त-तर्कशैली सुनि विस्मित छल, बीच-बीचमे धन्य गार्गीक जयध्वनि होइत छल। वृहदारण्यक तृतीय अध्यायक पाँचम ब्राह्मणसँ अष्टम ब्राह्मणतक गार्गीक शास्त्रार्थ उल्लिखित अछि। एहिसँ बढ़ि केँ गार्गीक विद्वतत्ताक प्रसङ्ग दोसर उदाहरण भेटबे की करत? परन्तु हन्त! ते हि नो दिवसा गताः।

(8) विदुषी सुनयना

ई महाराज सीरध्वजक पट्टमहिषी छलीहि, ज्ञान ओ विद्यामे राजर्षि जनकक धर्मपत्नी जेहने होमक चाही, तेहने छलीहि। लक्ष्मणक सहधर्मिणी विदुषी उर्म्मिला हिनकहि गर्भसँ उत्पन्न भेलि छलीहि। जनकक अनुपस्थित दशामे पण्डितसभा मध्य सभापतिक आसन पर समासीना भय विद्वान तथा विदुषीक शास्त्रीय समालोचना पर अपन मन्तव्य प्रकाश करैत छलीहि। हिनक गवेषणापूर्ण निर्णय पर विद्वन्मण्डल विस्मित भय जाइत छल; ई नहि ककरहु बूझि पड़ैत छलैक जे आइ जनक नहि छथि। हिनक चरित्र वर्णन पुराणमे भेटैत अछि।

(9) महासती अरुन्धती

ई ऋषि कर्दमक कन्या छलीहि, जखन हिनक पवित्र परिणय देवहूति महाज्ञानी ऋषि वशिष्ठसँ कराओल, तखन ई स्वामीक आश्रम चलि गेलीहि। वशिष्ठक आश्रम बी. एन.डबलू रेलवेक सहरसा स्टेशनसँ दू कोस पश्चिम बनगाम महिसीमे छल। वशिष्ठ उग्रताराक उपासक छलाह। हिनक आराधिता तारा अद्यापि विद्यमान छथि। ओतय एक कुण्ड अछि जे वशिष्ठकुण्ड कहबैत अछि। अत्रत्य कृत्य समाप्त भेला पर वशिष्ठ कामाख्या चल गेलाह। हिनक अनेको ठाम आश्रम छल। ई मिथिला-इतिहासक प्रथम महाराज निमिक गुरु छलाह; हिनका कामादि षड् रिपु ओ योग-वाधक इन्द्रियादि वशीभूत छल, अतएव हिनक नाम वशिष्ठ राखल गेल। ई अपन अनुरूप धर्मपत्नी अरुन्धतीकेँ पाबि हृष्ट छलाह। अरुन्धती सनि पतिभक्तिपरायणा दोसर केयो नहि भेलीहि। ई अद्यावधि पतिक संग नक्षत्रमण्डलमे विचरण करैत छथि। हिनका जे नहि देखैत छथि से अपनाकेँ अल्पायु बुझैत छथि। विवाह समयमे कन्या हिनक प्रार्थना करैत छथि- ''हे अरुन्धती! हमर प्रार्थना यैह अछि जे हम अहींक समान पति पर अनुरक्ता रही।'' हिनक पाण्डित्य, अध्यवसाय, ओ धैर्य्य ककरहु सँ थोड़ नहि छल; किन्तु ख्याति हिनक विशेषतः पातिव्रत धर्मेक हेतु अछि।

(10) सतीशिरोमणि अनसूया

ई अरुन्धतीक छोटि बहिनि ओ अत्रि ऋषिक सहधर्म्मिणी छलीहि। अत्रिक जन्मभूमि मिथिले छल। किन्तु तपस्या करबाक हेतु ई चित्रकूट नामक पर्वत पर चल गेलाह, अनसूया कोनो विशिष्ट विदुषी नहि छलीहि, परन्तु शास्त्रीय ज्ञान हिनका पर्याप्त छल। ई तीनू पुत्र ओ कन्या आत्रेयीक प्राथमिक शिक्षा अपनहि देलन्हि। हिनक जीवनक मुख्य ध्येय छल पति-पदपद्मक परिचर्या। हिनक जाप्यमन्त्र छल ''पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम्''। जनक-यजन-सम्भवा श्री 108 जगज्जननी जानकी वनवासक समयमे हिनकासँ बहुत उपदेश ग्रहण कयने छलीहि, हिनक कीर्त्ति यावच्चन्द्रदिवाकर स्थायी रहत।

(11) महाविदुषी आत्रेयी

त्रेतायुगक अन्तमे आत्रेयीक विद्वताक सत्ता पाओल जाइत अछि। ई अत्रि ऋषिक पुत्री छलीहि। हिनक अद्भुत विद्या-स्पृहा ओ ज्ञान-पिपासा एतेक प्रबल छल जे ई अपन मातृ-प्रदत्त शिक्षासँ यथेच्छ सन्तोष नहि कय सकलीहि, ई नेपाल राज्यक महत्तरी प्रगन्नाक अन्तर्गत महावनस्थ वाल्मीक्याश्रम पहुँचलीहि, महर्षिक चौपाड़ि पर वेदवेदाङ्गक

अध्ययन करय लगलीहि। हिनक हार्दिक शास्त्रीय अनुराग ओ अथक व्यवसाय देखि महर्षि वाल्मीकि अपन शिष्यमण्डलीमे आत्रेयीकेँ सबसँ वेशी मानैत छलाह। परन्तु ई अवस्था बहुत काल तक स्थायी नहि रहल; महर्षि तपस्याक हेतु देश छाड़ि ब्रह्मावर्त्त चल गेलाह, आत्रेयी केँ आन अध्यापकक पाठसँ सन्तोष नहि भेटैत छल, कतोक दिनक बाद, ई पुनः वाल्मीकिक शरणमे उपस्थित भेलीह। परन्तु ओतय जाय हिनक ओ आदर नहि रहल; जानकीक यमज बालक (लव-कुश) अपन नैसर्गिक प्रतिभासँ शिष्य-मण्डलीकेँ अप्रतिभ कय महर्षिक हृदय अधिकृत कयने छलाह। आत्रेयीकेँ मनोभिलषित पाठमे बाधा होमय लागल। अन्ततः ई भग्नमनोरथा भय गुरुक प्रणाम कय आश्रम छोड़ि देल, ओ सद्गुरुक जिज्ञासामे देश-देशान्तर घुमय लगलीहि। ओहि समय वेद-वेदाङ्गपारङ्गम महामुनि अगस्ति दाक्षिणात्य देशकेँ समलंकृत कयने छलाह। अगस्तिक आश्रम जयबाक मार्ग दुर्ग छल, ओहि समय दस्युगणक उपद्रवक हेतु आतङ्कवाद छल; घोर जङ्गल रहबाक कारणेँ हिंसक जन्तुक आक्रमण पथिकक उपर अत्यधिक होइत छल; परन्तु एहिसभक एको रत्ती तारतम्य आत्रेयी नहि कयल, ओ भयानक जङ्गलक उल्लंघन कय अपन ज्ञान-पिपासा शान्त करवाक उद्देश्यसँ मुनिक शान्तिनिकेतनमे पहुँचलीहि। हिनक सकल वृत्तान्त सुनि अगस्ति मुनि मुग्ध भय गेलाह; आत्रेयीकेँ पुत्री जकाँ पवित्र आश्रममे राखि पढ़ाबय लगलाह, थोड़बहि दिनमे आत्रेयी विश्वविख्यात विदुषी भय गेलीह।

(12) महासती अहल्या

ई गायत्रीनिष्ठ, न्याय-सूत्रप्रणेता, महामुनि गौतमक धर्मपत्नी छलीहि। कमतौलक दक्षिण-पूव कोनमे सिमरीक सड़कक किनार मध्य अहियारी गाम अछि, ओतहि गौतमक आश्रम छल। अहल्या पतिभक्ति-परायणा ओ अध्यात्म-विद्याविदुषी छलीहि। एक समय अनावृष्टि प्रयुक्त मिथिला मध्य दुर्भिक्ष भय गेल, जलक हेतु हाहाकार मचि गेल। ई दशा देखि गौतम वरुणदेवक उग्र तपस्या कयल। वरुण प्रसन्न भय प्रत्यक्ष भेलथिन्ह। गौतम निवेदन कयल जे ''हे वरुण! जलदान दय मिथिलाक रक्षा करु''। एहि पर वरुणदेव उत्तर देल जे हमर साध्य ई नहि अछि। ताहिपर गौतम चिन्तित भय पुनः पूछल जे 'हम एक कुण्ड खुनैत छी ताहिमे कहियो जल नहि घटय से भय सकैत अछि?'

वरुण कहल जे 'से भय सकैत अछि।' ई कहि वरुण अन्तर्धान भय गेलाह। मुनि एक कुण्ड खुनल। ओहिसँ कतबोक जल खर्च होइत छल, तथापि ओतबेक रहैत छल। ई सुनि समस्त मिथिलाक ऋषि मुनि जलक हेतु गौतमक समीपमे कुटी बनाय रहय लगलाह। ऋषिपत्नी लोकनि अहल्याक पातिव्रत धर्म देखि मनहि मन जरय लगलीहि। ऋषियो लोकनि गौतमक तपोबल ओ विद्या-विभूतिसँ हार्दिक द्वेष रखैत छलाह। इन्द्रकेँ

तँ ककरो उग्र तप पसिन्न नहिये होइत छन्हि। यैह सुअवसर पाबि गौतमक रूपमे इन्द्र अहल्याकेँ ठकल। एहि अज्ञात अपराध पर असन्तुष्ट भय गौतम अहल्याकेँ अभिशाप देल 'जे पाषाण मूर्ति भय जाउ।' पतिक कठोर अभिशाप सुनि अहल्या गौतमक पैर पर कनैत लोटाया लगलीहि। गौतम ध्यानस्थ भय देखलन्हि तँ वास्तविकमे अहल्याक अपराध नहि पओलन्हि, परन्तु आब कैल की जाय,''मृषा न होहि देव ऋषि वाणी''। गौतम पत्नीकेँ सान्त्वना दैत कहल जे रामचन्द्रक दर्शनसँ अहाँ अभिशाप-विमुक्ता होयब। अहल्या रघुकुलतिलक रामचन्द्रक दर्शनक प्रबल लालसामे अहियारीमे रहय लगलीहि। किन्तु पतिव्रता पत्नीकेँ दारुण अभिशाप देबाक हेतु गौतमक हृदयमे अत्यधिक वेदना छल, पश्चत्ताताप छल। ओ अधिक दिन अहियारीमे नहि रहि किछु दूर हटिकेँ विरजा नदीक निकटवर्ती ब्रह्मपुर गाममे रहय लगलाह। एहू आश्रममे गौतम कुण्ड अछि, अहल्यास्थानमे अहल्या-ह्रद अछि। एहि दुहूमे स्नान करबाक फल बृहद्विष्णुपुराणमे एहि तरहेँ लिखल अछि -

''गौतमस्याश्रमे याम्ये पातालोत्थितपाथसि।
स्नात्वा कुण्डे नमेद् भक्त्या यजुःपाठ फलं लभेत्।
ततो गच्छेत् ब्रह्मऋषेर्गौतमस्य वनं नृप।
अहल्याया ह्रदे स्नात्वा लभते परमां गतिम्।।''

राजर्षि सीरध्वजक पुरोहित ''शतानन्द'' एही महासती अहल्याक पुत्ररत्न छलाह। शाप-विमुक्तिक उत्तर अहल्या पतिक संग ब्रह्मपुरहिमे रहय लगलीहि; एहि प्रसंग स्कन्दपुराणमे लिखल अछि -

''आसीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता।
तस्यां लसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः।।
अहल्या नाम तत्पत्नी पतिभक्ता प्रियंवदा।
सर्वलक्षणसम्पन्ना सासीत् सर्वाङ्गसुन्दरी।।''

(13) महासती सीता

हिनक जन्म वर्त्तमान जनकपुरसँ 26 मील दक्षिण-पश्चिम लखनौतीक उत्तर तट पर यज्ञभूमिमे भेल; अतएव हिनक नाम देव-यजनसम्भवा सेहो थीक। जाहिठाम हिनक जन्म भेल ओ आइकाल्हि सीतामढ़ी नामसँ प्रसिद्ध अछि। सीताक जन्मतिथि वैशाख शुक्ल नवमी थिक। 'अद्भुतरामायण'क अनुसार सीताक जन्म कुरुक्षेत्रमे मानल जाइत अछि, ओकरो नाम देव-यजन थीक। शतपथमे लिखल अछि -''देवा ह वै सत्रं निषेदुः तेषां कुरुक्षेत्रं देवयजनमास'' (देवता लोकनि एतय यज्ञ कयलन्हि। हुनक यज्ञस्थल कुरुक्षेत्र छल)।

परन्तु मिथिला राजधानीक निकटवर्ती होयबाक कारणेँ हम सीतामढ़ीकेँ सीताक जन्मभूमि मानब। आन-राजधानीक अन्तर्गत कुरुक्षेत्रमे जनक यज्ञ कहने होयताह वा हिनक हर बहल होयत तकर सम्भव कपोलकल्पना कहाओत। सीतामढ़ीक यज्ञ-स्थान मध्य एक कुण्ड जनकक हरक रूपमे एक नाला ओ जानकीक एक सुन्दर मन्दिर अछि। एहिठाम रामनवमीक प्रकरणमे बहुत पैघ मेला लगैत अछि। यज्ञभूमिसँ सीताक आविर्भाव भेला पर राजर्षि जनक प्रसन्नापूर्वक अपना राजधानी सीताकेँ लय गेलाह, जनकक पटरानी सुनयना उर्म्मिलहुसँ बढ़िकेँ हिनक लालन पालन करय लगलीहि; अन्तःपुरमे हिनक नाम राखल गेल ''जानकी''। हिनक शिक्षा सुनयना अपनहि दैत छलीहि, एक तँ लक्ष्मीरूपा जानकीक बहुमुखी प्रतिभा छले; ताहि पर परम विदुषी सुनयनाक शिक्षा- मानू सोनहुमे सुगन्धि भेल; थोड़वहि दिनमे सीता महाविदुषी भय गेलीह। परन्तु हिनक जीवनवृत्तान्त दुःखान्त अछि; यैह हेतु जे हिनक विद्योत्कर्षक विशेष ख्याति नहि भेल। हम ई ऊर्ध्ववाहु भय कहैत छी जे यदि सीता सन सहधर्म्मिणी श्री रामचन्द्र नहि पबितथि तँ आइ देवताक रूपमे हुनका केयो नहि देखितहुँ, जेना, अज, रघु, दशरथक नाम इतिहासमे अछि? तहिना रामचन्द्रहुक नाम रहैत।

(14) महावेदी उर्म्मिला

ई महाराज सीरध्वजक कन्या ओ श्रीसीताक प्रिय वहिनि छलीहि। हिनका सीतैक सङ्ग शिक्षा भेटल छल। हिनक चरित्र-चन्द्रिकासँ संसार आहूलादित अछि। हिनक विवाह लक्ष्मणक सङ्ग भेल। ई परम सुशीला तथा पण्डिता छलीह।

(15) माण्डवी (16) श्रुतकीर्त्ति

ई दुहू बहिनि राजर्षि सीरध्वजक सोदर सांकाश्याधिप कुशध्वजक आत्मजा छलीहि। हिनक शिक्षा संकाश्यमे भेल छल। सीता तथा उर्म्मिलाक विवाहक उपलक्ष्यमे लेआओन कयला पर जखन सपरिवार कुशध्वज अयलाह तखन सीता तथा उर्म्मिलाक दानक बाद विश्वामित्रक प्रस्ताव पर एहू दुहू बहिनिक विवाह भरत तथा शत्रुघ्नक सङ्ग भेल। ई दुहू गोटय विशेष विदुषी तथा सुशीला छलीहि। हिनकहि लोकनिकेँ पाबि भरत ओ शत्रुघ्न भातृ-प्रेमक परीक्षामे सर्वोत्कृष्ट भेलाह।

(17) सुलभा

ई प्रधान नामक राजर्षि कुलक विदुषी कन्या छलीहि। सुलभा अपन मनोभिलषित वर नहि पयबाक हेतु आजीवन ब्रह्मचारिणी रहलीहि। अध्यात्मविद्याक विद्वानक श्रेणीमे

हिनक विशेष स्थान छल। हिनक अन्तःकरण भोग-वासनासँ विरक्त छल। स्वभाव शान्त छल। एक समय राजर्षि जनकक सभामे उपस्थित भय प्रश्न कयल जे 'राज्य-भोग करैत मोक्ष-पद पाबि सकैत अछि की नहि?' प्रश्न छल गूढ़ ताहि पर व्यङ्गपूर्ण।

एहि प्रश्न पर अनेक दिन शास्त्रार्थ होइत रहल। अन्तमे व्यास पुत्र शुक जकाँ ''जनक''क मोक्षधर्म-प्रवीणता पर विश्वास भेल। राजर्षि जनको हिनक विद्वत्ता पर बहुत प्रसन्न भेलाह।

(18) वैशालिनी

ई इतिहास प्रसिद्ध महाराज विशालक विदुषी बालिका छलीहि। करन्धम महाराजक पुत्र अविक्षितसँ हिनक विवाह भेल। हिनक पतिव्रतधर्म नितान्त प्रशंसनीय ओ अनुकरणीय अछि। हिनकर रचित कोनो ग्रन्थ वा कविता उपलब्ध नहि भेल अछि।

(19) भारती (उभयभारती)

मैत्रेयीक समान एक आओर विदुषी रमणी भेलीहि; हुनक नाम छल ''भारती''। बाल्यावस्थहिमे हिनक नैसर्गिक प्रतिभा सर्वतोमुखी छल। 22 वर्षहिक अवस्थामे चारू वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, सांख्य, न्याय, मीमांसा, पातञ्जल, वेदान्त, वैशेषिक धर्मशास्त्र ओ साहित्य पढ़िकेँ मिथिला मध्य आदर्श विदुषीक स्थान प्राप्त कयने छलीहि। हिनक विद्वत्ता देखि विद्वन्मण्डल विस्मित भय जाइत छल। भारतीकेँ लोक साक्षात् सरस्वतीक अवतार कहैत छल। हिनक कण्ठ-स्वर बहुत कोमल ओ मधुर छल। अतएव, हिनक नाम ''सरसवाणी'' सेहो छल। श्लोक-वार्तिककर्त्ता प्रसिद्ध मीमांसक कुमारिल मिश्र भारतीक सोदर भाय छलथिन्ह। ओ अपना बहिनिक अनुरूप वर विधिविवेक, ब्रह्म-सिद्धि आदिक ग्रन्थक रचयिता म.म. मण्डन मिश्रकेँ टेबल। मण्डन मिश्र प्रसन्न भय भारतीक पाणिग्रहण कयल। ई मुख्यतः मीमांसक छलाह, किन्तु हिनकासँ कोनो शास्त्र छुटल नहि छल। सातम आठम शताब्दीक मध्यकालमे मण्डन मिश्रक अस्तित्व ग्रन्थ-पर्य्यलोचनासँ सिद्ध होइत अछि; ई अपना समयमे अद्वितीय विद्वाने छलाह। एहि समयमे बौद्ध-धर्म रूप महाग्राहसँ हिन्दू-धर्म ऐरावत ग्रसित छल, शङ्कराचार्य बौद्ध-धर्मक ग्राससँ आर्य्य-धर्म्मकेँ बचयवाक हेतु जखन सिन्धु उपकुलसँ हिमालय तक शिष्य सहित घुमैत छलाह; तखन म. म. मण्डन मिश्रसँ शास्त्रार्थ करबा लय मिथिला अयलाह। मण्डन मिश्रक घरक समीप आबिकेँ एक पनिभरनीसँ पूछल, ''मण्डन मिश्रक घर कोन थीक?''

पनिभरनी उत्तर देल-

''स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं शुकाङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति।
शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम।''

शङ्कराचार्य मिथिलाक एक पनिभरनीक मुहसँ पद्यमय मार्मिक उत्तर सूनि विस्मित भय गेलाह; हिनक हृदय-दहलि गेल, ओ अपन दिग्विजयमे मण्डन मिश्रकेँ प्रतिबन्धक बूझल। हिनक ध्येय छल अद्वैत-स्थापन, दार्शनिक मिथिलासँ फिरि जायबो उचित नहि बुझना गेल; किछु काल तक इतस्ततः कय शङ्कराचार्य मण्डन मिश्रक घर पहुँचलाह। मण्डन मिश्र एकोद्दिष्ट करैत छलाह। शङ्कराचार्यक आतिथ्य सत्कार भारती कयल। भारतीक सङ्ग संस्कृतमे शङ्कराचार्यकेँ वार्तालाप होमय लागल। थोड़बहि समयमे भारतीक योग्यताक परिचय हुनका भय गेल। सरसवाणी भारतीक मधुर वाणी सूनि मनहि मन भगवान शङ्कराचार्य मिथिलाकेँ धन्यवाद देल। एतवामे मण्डन मिश्र एकोदिष्ट कृत्य समाप्त कय बहरयलाह; सशिष्य शङ्कराचार्यकेँ अभिवादन कय पूछल जे कतय आयल छी? शङ्कराचार्य उत्तर देल जे ''शास्त्रार्थ''क हेतु। एहि पर मण्डन मिश्र कहलथिन जे अहाँ मिथिला आयल छी, अतः पूर्वपक्ष अहींकेँ कर्त्तव्य होयत, हम उत्तर पक्षक हेतु तैयार छी; ताहि पर शङ्कराचार्य कहलथिन जे प्रश्न हम पश्चात् करब शास्त्रार्थसँ पूर्व ई प्रतिज्ञा होमक चाही जे- जे पराजित होयब से विजयी मतावलम्बी भय जायब, अर्थात् हम हारि जाइ तँ गृहस्थाश्रम प्रवेश करी, अहाँ हारि जाइ तँ संन्यास ग्रहण करी; मण्डन मिश्रकेँ उपरोक्त प्रतिज्ञा स्वीकार भेल; शास्त्रार्थ छल मत द्वयक, पण्डिल छलाह दुहू अगाध, ताहिपर प्रतिज्ञा छल विचित्र, एहन शास्त्रार्थमे जय पराजय-निर्णायक असाधारण पण्डित होमक चाही, परन्तु एहन मध्यस्थ भेटय के? थोड़ेक काल एहि हेतु वादविवाद भेल, अन्ततः मध्यस्थक हेतु शास्त्रार्थ बन्द नहि भेल; मण्डन मिश्रक स्त्री भारती देवी मध्यस्थता स्वीकार कयल; शास्त्रार्थ होमय लागल, ओहि दिन किछु निर्णय नहि भेल, प्रातःकाल भारती शङ्कराचार्यसँ कहल जे एक-दुइ दिनमे शास्त्रार्थ सम्पन्नक क्रम नहि देखना जाइत अछि, हम आदिसँ अन्तधरि बैसलि रहब तँ गृहकार्य के करत? अतः प्रत्यह एक एक माला दुहू गोटाक गरामे हम पहिराय देब, जनिक माला मौला जाय से अपनाकेँ पराजित बुझब। शङ्कराचार्य स्वीकार कयल। शास्त्रार्थ होमय लागल। भारती माला पहिरा देल। अनेक दिन शास्त्रार्थ होइत रहल। भारती कखनहु आङनहुक कार्य्य सँभारि आबथि कखनहु शास्त्रार्थो सुनथि। एक दिन अपन पतिक मालाकेँ मलिन देखि भारती शङ्कराचार्यसँ कहल जे अहाँ सँ हमर पति अवश्य हारि गेलाह, किन्तु हुनक हम अर्द्धांगिनी थिकिऐन्हि, हमरासँ शास्त्रार्थमे जितिए केँ सर्वथा विजयी भय सकब; समस्त भारतमे रमणीक मुखसँ एहि तरहक गर्वोक्ति नहि सुनने छलाह; दिग्विजयी शङ्करसँ एक मिथिलाक विदुषी शास्त्रार्थ करय चाहैत छथि एहि हेतु शङ्कराचार्य थोड़ेक काल किंकर्त्तव्यविमूढ़ भय गेलाह किन्तु अन्ततः भारतीसँ शास्त्रार्थ स्वीकार कयलन्हि; शास्त्रार्थ प्रारम्भ भेल। भारती नाना तरहक गूढ़ प्रश्न कय शङ्कराचार्यक परीक्षा करय लगलीहि; ब्रह्म सम्बन्धमे अनेको कूट तर्क उठाओल; एहि तरहेँ एक मास सात दिन बीत गेल, भारती कोनो रूपसँ शङ्कराचार्यकेँ पराजित नहि कय सकलीहि; अन्ततः

कामकलानभिज्ञ आवाल ब्रह्मचारी शङ्कराचार्यकेँ काम-कला-सम्बन्धी प्रश्न कय चुप कयल। शङ्कराचार्यकेँ ई स्थिति कतहु नहि भेल छल, ओ मनहि मन भारतीक कोटि कल्पना ओ गूढ़तर्क-शैली पर धन्यवाद दय भारतीकेँ पूछल जे 'प्रश्नोत्तरक हेतु किछु समय भेटि सकैत अछि?' भारती कहल- 'एक वर्षक।' शङ्कराचार्य योग-बलसँ परकाय प्रवेश कय काम-कला-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कयल। तखन पुनः मिथिला आबि भारतीक प्रश्नक समुचित उत्तर दय पूर्व प्रतिज्ञाक अनुसार मण्डनमिश्रकेँ संन्यास-ग्रहण करबाओल। पति-प्राणा भारती देविओ असार संसारकेँ त्याग कय पतिक अनुगामिनी भेलीहि। ई विषय निर्भ्रान्त सत्य अछि जे यदि शङ्कराचार्य भारती, ओ मण्डन मिश्रकेँ नहि पबितथि तँ जाहि कार्यक हेतु अवतरित भेल छलाह, ओ अपूर्णे रहि जाइत, शास्त्रार्थक चर्चा ''शङ्कर दिग्विजय''मे कयल गेल अछि।

(20) विद्या

ई कोनो राजाक कन्या छलीहि। हिनका अनेक शास्त्रक अनुशीलन छल; तर्कमे हिनक बुद्धि अधिक दौड़ैत छल। ई सोरह वर्षक अवस्थहिमे विदुषीक स्थानमे पहुँचि गेलीह। हिनक प्रतिज्ञा छल जे ''जे हमरासँ शास्त्रार्थमे जितताह, हम तनिकहिसँ विवाह करब।'' ई अचल प्रतिज्ञा विद्याक प्रियसखी द्वारा राजाक कान तक पहुँचल। राजा एहि विषयक सब ठाम सूचना देल। एक-एक पण्डित आबय लगलाह। परन्तु विद्याकेँ केयो तर्कमे परास्त नहि कय सकलाह। अपदस्त पण्डित लोकनि अपमानक बदला लेबाक हेतु परामर्श कयल जे विद्याक विवाह कोनो महामूर्खसँ करयबाक चाही; दू-चारि पण्डित मूर्खक अन्वेषणमे गाम-गाम घूमय लगलाह। अबैत-अबैत बेनीपट्टी थानासँ एक कोश वायव्यकोणमे स्थित ''उच्चैठ'' नामक गाम पहुँचलाह। ओतय नानाशास्त्रक चतुःपाठी (चौपाड़ि) ओ कालीक एक मन्दिर छल। ओहि चौपाड़िक विद्यार्थी सभक भानस करवाक हेतु ''कालिदास मिश्र'' मैथिल रहैत छलाह, ओ जारनक हेतु एक आम्र-वृक्षक ओहि डारिकेँ कटैत छलाह, जाहि पर अपने ठाढ़ छलाह। मूर्खान्वेषणमे घुमनिहार पण्डित लोकनिक दृष्टि कालिदास मिश्रक उपर पड़ल। ओ लोकनि हिनकासँ बढ़िकेँ दोसर मूर्ख भेटब असम्भव बूझि कालिदास मिश्रकेँ नीचा उतरबाओल, ओ राज-दरवारमे लय जयबाक हेतु बहुत प्रलोभन देल। ई प्रसन्न भय पण्डित लोकनि हिनका बुझाय देल जे अहाँ केँ जे किछु पूछल जाय ओकर उत्तरमे एतबेक कहब- ''वारि''। सभ राजाक ओतय जाय निवेदन कयल जे 'मिथिलाक एक धुरन्धर विद्वान आयल छथि।' राजा सभकेँ दरबारमे बजवाओल। राजकुमारी विद्या कालिदास मिश्रक ओतय प्रश्न कयल जे ''अजीर्णस्य किमौषधम्?''

कालिदास मिश्रकेँ पण्डितक सिखाओल उत्तर ''वारि'' बिसरि गेल छल, ओहि स्थानमे ओ कहि देल ''चारि''।

राजकुमारी उत्तर सूनि हँसि देल, ताहि पर पण्डित लोकनि विद्याकेँ कहल जे मैथिल पण्डित बढ़िञा उत्तर कहलन्हि, 'वैद्यकमे अजीर्णक औषधि चारि गोट अछि - हरीर, पन्था, निद्रा, वारि।'

एहि अद्‌भुत व्याख्यान पर प्रसन्न भय विद्या कालिदास मिश्रसँ विवाह करब स्वीकार कयल, पण्डितक षड्‌यन्त्र सफल भेल, बहुत धूमधामसँ विद्याक विवाह सम्पन्न भेल। चतुर्थी कर्मक बाद कालिदास मिश्र कौतुकागार मध्य प्रवेश कयल। राजकुमारी हिनका संग शास्त्रीय आलोचनाक हेतु नाना तरहक प्रश्न करैत गेलीहि। ई सभक उत्तरमे पण्डितक सिखाओल ''वारि''क स्थानापन्न ''चारि'' एतबेक कहैत छलाह। विद्याक हृदय खटकि गेल। ओ बहुत दुःखी भय गेलीहि। ओ मूर्ख-पतिक संसर्गसँ वैधव्य-जीवन कतेक नीक बूझि खिरकी खोलि कालिदास मिश्रकेँ बेगवती नदीक शोभा देखबाक हेतु आग्रह कयल। कालिदास मिश्र नव-वधूक आदेश शिरोधार्य कय नदीक दृश्य देखबामे लीन भय गेलाह। यैह अवसर पाबि हिनका नदीमे धकेलि विद्या चिरवांछित विजयी पतिक सङ्ग केलि-गृहक केलिक अन्त बूझि मूर्छिता भय गेलीह।

ओम्हर कालिदास मिश्र एक दू घोंट पानि पीबि हेलय लगलाह। कोनहुना पार भय अपन मार्ग पकड़ि उच्चैठ अयलाह। विद्यार्थी सभ हिनका पर वाग्वर्षण करय लगलाह। ई समय बचाकेँ खिन्न मनहि उच्चैठक महामाया भगवतीक आराधना करय लगलाह। हिनका हृदयमे राज-कन्याक पाशविक अत्याचारसँ भारी चोट छल। अपन मूर्खता पर पश्चात्ताप छल। निशा रातिमे भगवतीक मन्दिर मध्य व्याघ्रादिक जन्तु अबैत छल; अतएव तत्रत्य लोक रातिकेँ नहि बहराइत छल। एक अमावस्याक रातिमे विद्यार्थी सभ अपनामे गप्प करय लगलाह। गपक प्रसंगमे एक विद्यार्थी बजलाह जे एखन 'जे भगवतीक मन्दिरमे जायत, तकरा दश टाका पारितोषिक देबैक।'

कालिदास मिश्रक भाग्योदयक समय आबि गेल छल। ओ कहल जे 'हम जाय सकैत छी।' ताहि पर एक विद्यार्थी पूछल जे 'यदि अहाँ बाटहिसँ फिरि आबी तँ तकर कोन उपाय?' कालिदास मिश्र उत्तर देल जे 'कारी ओ चूनक थप्पा मन्दिरमे दय देबैक। अपने लोकनि भिनसरे देखि लेब।' ताहि पर सब सहमत भय अनुमति देल। कालिदास मिश्र एक हाथमे कारी ओ दोसर हाथमे चून लगाय मन्दिर मध्य प्रवेश कयल। मन्दिरमे घोर अन्धकार छल; कालिदास मिश्र भगवतीक दुहू गालमे कारी चूनक थप्पा दय देल। आद्या अत्यन्त प्रसन्ना भय प्रत्यक्ष भय गेलथिन्ह। मन्दिरमे इजोत भय गेल। जगदम्बा कालिदास मिश्रकेँ कहल जे ''जे मङ्गबय से माङ्ग''। कालिदास मिश्रक मुहसँ बहार भय गेल, ''विद्या''।

ताहि पर महामाया कहलथिन्ह जे 'आइ राति भरिमे जाहि-जाहि शास्त्रक पोथी तोँ उनटेबह, ताहि शास्त्रक पण्डित होयबह।' ई कहि देवी अन्तर्धान भय गेलीहि।

कालिदास मिश्रकेँ बहुत देरी भय गेल छल; ताहि हेतु विद्यार्थी लोकनि यैह अनुमान कयल जे कालिदासकेँ आइ बाघ खयलक। अछता-पछताकेँ सब सूति रहल। कालिदास मिश्र चौपाड़ि पर आवि पुस्तक सभ उनटाबय लगलाह। हिनक ज्ञान बढ़ैत गेल। साहित्य ओ व्याकरणादिक पुस्तक तकैत-तकैत भोर भय गेल। सूर्यदेवक नियत समयमे उदय भय गेल। अध्यापक ओ विद्यार्थीक निद्राच्युत भेल। हिनका देखि एक विद्यार्थी कहल जे ''अरे अहाँ बाँचि गेलहुँ? हमरा लोकनि तँ यैह बुझल जे कोनो हिंसक जन्तु अहाँकेँ खयलक।''

कालिदास मिश्र कहल जे ''जगदम्बाशरणे भीतिर्भवत्येय दुरात्मनाम्।''

संस्कृत पद्यमय उत्तर सूनि सभ विद्यार्थी चकित भय गेल। परस्पर कानाफूसी होमय लागल पण्डितक कान तक ई बात पहुँचल। अध्यापक लोकनि कालिदास मिश्रकेँ बजाय गप्प कयल। हिनक बहुमुखी प्रतिभापन्न शास्त्रीय विचार पर पण्डित लोकनि मुग्ध भय यैह निश्चय कयल जे ई जगदम्बाक प्रसादक फल थीक। ताहि दिनसँ कालिदास मिश्र अध्यापक श्रेणीमे रहि जगदम्बाक आराधना करय लगलाह। दिनानुदिन हिनक विद्योन्नति वृद्ध्युन्मुख होमय लागल। एक दिन हिनका राजकुमारीक स्मरण भय गेल। ई तुरत प्रस्थान कयल। प्रभात समयमे राजधानी पहुँचलाह। एक पोखरि पर सखीक संग विद्या टहलैत तड़ाग शोभा देखैत छलीह। कालिदास मिश्र समीप पहुँचि ठाढ़ भय गेलाह। विद्या तड़ागस्थित कमलकेँ हिलैत देखि बाजि उठलीहि-

''अनिलस्यागमो नास्ति द्विपदो नैव दृश्यते।
वारिमध्ये स्थितं पद्मं कम्पते केन हेतुना?।''

कालिदास उत्तर देल

''पावकोच्छिष्टवर्णानां शर्वरीकृतबन्धनम्।
मोक्षं न लभते कान्ते! कम्पते तेन हेतुना।।''

चमत्कृत उत्तर सूनि राज-कन्या पुनः पूछल

''काष्ठस्य भेदने शक्तिस्था वंशगणस्य च।
अत्यन्तकोमलं पद्मं कथं वा नहि भिद्यते।।''

एकर उत्तरमे कालिदास मिश्र ई कहल

''पद्मेन बन्धितः प्रीत्या भ्रमरः प्रेमरक्षकः।
तस्मान्न भिद्यते कान्ते! भवत्याः सदृशो नहि।''

एहि उत्तरसँ विद्या चौंकि उठलीहि। ओ एकबेरि कालिदास मिश्रक उपर दृष्टिपात कयल। हुनका निश्चय भय गेल जे ''यैह हमर स्वामी थिकाह''। परन्तु एहि भावकेँ दाबि विद्या पूछल जे

''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः''।

कालिदास मिश्र एकर उत्तरमे ''अस्ति, कश्चित्, वाक्''- एहि तीन शब्दकेँ आदिमे

राखि ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा'',''कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः'', ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ'' इत्यादि तीनि गोट श्लोक रचल।

एहिपर विद्या विशेष सन्तुष्ट भय हिनका आदरपूर्वक राज-महल लय गेलीहि। कालिदास मिश्र विद्याक आग्रहसँ उपरोक्त तिनू श्लोकके‍ँ आदिमे राखि 'कुमारसम्भव', 'मेघदूत', 'रघुवंश' - एहि तीनि अमर काव्यक क्रमिक रचना कय विश्वकेँ अपन विद्याक परिचय देल। हिनका पाबिकेँ विद्याक विद्या आओर बढ़ि गेल। कालिदास मिश्र जाहि मन्दिरमे सिद्ध भेल छलाह, ओ मन्दिर तँ कहिया ने नष्ट भय गेल; परन्तु कालीक मूर्ति अद्यापि विद्यमान छथि। उच्चैठ मिथिलाक एक विशेष सिद्धपीठ स्थान अछि। कालिदास मिश्र जाहि पाठशालामे रहैत छलाह, ओहि पाठशालाक उच्चभूमि आइयो देखबामे अबैत अछि। विद्या-विरचित कोनो पुस्तक उपलब्ध नहि अछि, किन्तु एहिमे लेशमात्र सन्देह नहि जे विद्या विशेष विदुषी भेलीहि।

(21) विजया

ई महाराज हरि-सिंहदेवक युद्धक प्रधानमन्त्री महामहत्तक चण्डेश्वर महताक कन्या छलीहि। हिनक जन्म बारहम शताब्दीक अन्त ओ तेरहम शताब्दीक आदिमे मानल जाइत अछि। ई साहित्यिक शिक्षा अपन पूज्य-पाद पितासँ प्राप्त कय कविता स्रोत बहबैत छलीहि। शाके 1245मे जखन दिल्लीवल्लभ गयासुद्दीन तुगलकसँ परास्त भय महाराज हरिसिंहदेव पड़यलाह; तखन पण्डिताग्रगण्य चण्डेश्वर महता उदस्त भय मिथिला त्यागि कर्णाटक महाराजक ओतय गेलाह, ओतय राजमन्त्रीक एहि श्लोकसँ अभिनन्दन कयल

फूत्कारोपहता फणीन्द्रशिरसि कोलानने दंष्ट्रया
विद्धा कूर्मकठोरपृष्ठकषणैः पीडामुपेता चिरम्
कार्णाटाधिपमन्त्रिणि प्रविलसत्कीर्त्तिप्रताने महा
दानौघव्यसने नयैकसुहृदि क्षोणी सुखं तिष्ठति।। 1।।

एहि पर प्रसन्न भय हिनका राजपण्डितक स्थानमे नियुक्त कयल। ओहि दिनसँ बराबरि सपरिवार कर्णाट महाराजक आश्रित भय रहय लगलाह। विदुषी विजयाक कवितामे भावक विशदता, पद-सौष्ठव, ओ अर्थ-विलक्षणता देखयबाक हेतु किछु उदाहरणार्थ श्लोक लिखैत छी

(1)

वक्रतां विभ्रतो यस्य गुह्यमेव प्रकाशते।
कथन्न स समानः स्यात् पुच्छेन पिशुनः शुनः।।

भावार्थ - जकरा टेढ़ भेला पर गुह्य-स्थान (पक्षान्तरमे गुह्य-विषय)टा प्रकाशित होइत अछि, ओ पिशुन (चुगलाह) कुकुरक नाङरिक समान कियेक नहि होएत।।1।।

(2)

सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि सन्।
सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः।।

भावार्थ - काँट (पक्षान्तरमे शत्रु) सुन्दर मुह, गोल (पक्षान्तरमे सच्चरित्र) उत्तम मार्गमे खसल ओ सज्जनक पैरमे लागल रहलहु सन्ता व्यथे (पीड़े) दैत अछि।

(3)

तप्ता मही विरहिणामिव चित्तवृत्तिः,
तृष्णाध्वगेषु कृपणेष्विव वृद्धिमेति।
सूर्य्यः करैर्दहति दुर्वचनैः खलो नः
छाया सतीव न विमुञ्चति पादमूलम्।।

भावार्थ - विरहीक चित्त-वृत्तिक सदृश धीपल चित्त-वृत्तिक सदृश धीपल धरणी अछि, वाटमे पथिक (बटोही)क प्यास कृपणक तृष्णाक समान बढ़ले जाइत अछि। दुष्ट मनुष्यक दुर्वचनसँ जेना पीड़ा पहुँचैत अछि, तेना सूर्य्य प्रखर रौदसँ दग्ध करैत छथि; सतीरमणी जकाँ छाया पादमूलक त्याग नहि करैत अछि; अर्थात् छाया सतीक समान चरणमे लपटाइलि रहैत अछि।

(4)

ग्रावाणो मणयो हरिर्जलचरो लक्ष्मीः पयो मानुषी
मुक्तौघाः सिकताप्रवाल-लतिकाशैवालमम्भः सुधा।।
तीरे कल्पमहीरुहः किमपरं नाम्नापि रत्नाकरः
दूरे कर्ण-रसायनं निकटतस्तृष्णापि नो शाम्यति।।

भावार्थ - हे सागर! अहाँक पाथर-मणिगण थीक। जलचर जीव हरिक अवतार थीक। जल मानुषी कमला थिकीहि। वालुका मोतीक ढेर थीक। सेमार प्रवाल-लतिका थीक। तटक वृक्ष कल्पद्रुम थीक। जल सुधा थीक। अओर की कहू नामो ''रत्नाकर''। परन्तु दूरमे कानक हेतु रसायन, लग अयला पर तृष्णो धरि शान्त नहि होइत अछि। अर्थात् दूरक ढोल सोहाओन होइति अछि, परन्तु समीप अयला सन्ता अप्रिय भय जाइत अछि जेना तहिना दूरसँ अहाँक गुणानुवाद सूनि प्राणी जखन लग जाइत अछि, तखन क्षार पानीक हेतु प्यास ले घूमि जाइत अछि।

बाह रे अन्योक्ति! की सुन्दर भाव अछि? एक कटुभाषी विभवशाली राजाक हेतु केहन सुन्दर युक्ति-युक्त आक्षेप अछि। विदुषी विजयाक विषयमे एक कविक उक्ति अछि

सरस्वतीक कार्णाटी विजयाङ्का जयत्यसौ।
या वैदर्भगिरां वासः कालिदासादनन्तरम्।।

एहि श्लोकक आधार पर विजयाकेँ कर्णाट देशक होयब स्थिर कयनिहार भारी भ्रममे छथि। विजया एही तीरभुक्तिक सुपुत्री छलीहि, एहिमे लेशमात्र सन्देह नहि? जहिना वेदवेदाङ्गपारङ्गम पण्डित मधुसूदन झाकेँ जयपुरक सम्बन्ध अछि, तहिना विजयकेँ कर्णाट देशक सम्बन्ध छल।।

(22) विदुषी लक्ष्मी (लखिमा)

ओइनवार ओइनीवंशक पण्डित कामेश्वर झाक प्रपौत्र राजा शिवसिंहक धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवी छलीहि। हिनका विद्या-विनोदमे विशेष अनुराग छल। 'पुरुष-परीक्षा', 'कीर्तिलता', 'लिखनावली' आदि अनेकानेक ग्रन्थ-लेखक म.म. विद्यापति ठाकुर हिनक आश्रित भय बहुत प्रतिष्ठा लाभ कयल। राजा शिवसिंहकेँ स्वर्गीय भेलाक बाद लक्ष्मीदेवी खीष्टाब्द 1460 तक मिथिलादेशक शासन कयल। ई राजनीति निपुणा छलीहि। हिनका विद्यापतिक मैथिली कविताक मधुर रसास्वादनमे अत्यधिक आनन्द होइत छल। अतएव, पदावलीमे अनेक ठाम देखैत छी-''राजा शिवसिंह रूपनारायण लखिमादेइ प्रतिभाने''। हिनका आनक कविता कल्पद्रुमक फल चखबैक चाह छल से नहि, ई स्वयं कविता करैत छलीहि। हिनका एक सखी छलथिन्ह। हुनक जमाय विद्या व्यवसायमे लागल रहबाक हेतु नहि अबैत छलथिन्ह। कन्याक युवावस्थाक अवलोकन कय हुनक सखी विकल रहैत छलथिन्ह। एक दिन सखीकेँ कनैत देखि विदुषी लक्ष्मी पूछल जे 'तोँ कियेक कनैत छह?'

ओ सब समाचार हृदय खोलिकेँ निवेदन कयल जाहि पर ओ एक श्लोक बनाय हुनका जमायक ओतय पठाय देलथिन्ह। श्लोक पढ़ि ओ तुरत सासुर चल अयलाह। ओ श्लोक ई थीक

''सन्तप्ता दशमध्वजातिगतिना सम्मूर्छिता निर्जले;
तूर्य्यद्वादशवद्द्वितीयमतिमन्नेकादशाभस्तनी।
सा पष्ठी कटिपञ्चमी च नवभ्रूः (नववधूः)सा सप्तमी वर्जिता;
प्राप्ता चाष्टमवेदना प्रथम हे तूर्णं तृतीयो भव।। 1।।''

ई विद्वानक बहुत आदर करैत छलीहि; नीक कविता कयनिहारकेँ ई पूर्ण पारितोषिक दैत छलीहि। हिनक सभा नेतृत्वमे समस्यापूर्ति अधिक काल होइत छल। हिनक भूरिदानक प्रशंसा सूनि केयो अन्यदेशीय कवि विद्यार्थीक संग मिथिला पहुँचलाह। राजधानीक समीपमे डेरा कय राज-दरवारक रङ्गरुखि देखबाक हेतु विद्यार्थीकेँ पठओलन्हि। ओहि दिनुक सभामे समस्या छल ''शंखमापूरयन्निव''। विद्यार्थी समस्या लय गुरुक निकट डेरा पर पहुँचलाह। कवि समस्या पूर्ति कय प्रातः काल विद्यार्थीक द्वारा सभामे पठाओल।

श्लोक पढ़ल गेल। विदुषी लखिमा भावार्थ बूझि बजलीहि जे रचना उत्तम अछि। किन्तु अनुभव होइत अछि जे रचयिता जन्मान्ध छथि। विद्यार्थीकेँ एहि कथापर बहुत विस्मय भेल। ओ गुरुक समीपमे सभ निवेदन कयल। कवि मनहि मन जन्मान्धक अनुभव कयनिहारि लखिमाक भूरि-भूरि प्रशंसा कय बजलाह जे काल्हुक सभामे कहबन्हि - ''गुरु हमर जन्मान्ध ठीके छथि, किन्तु ओ कहलन्हि जे जन्मान्ध कएनिहारि वाल-विधवा थिकीहि।'' विद्यार्थी गुरुक आदेशानुसार दोसर दिनुक सभामे निवेदन कयल। ताहि पर विदुषी लक्ष्मी प्रसन्ना भय पूर्ण पुरस्कार जन्मान्ध कविकेँ पठाओल। ओ श्लोक ई थीक

''मालतीमुकुले भाति गुञ्जन्मत्तमधुव्रतः।
प्रयाणे कामदेवस्य शंखमापूरयन्निव।।''
''तन्वी बाला कृशतनुरियं त्यज्यतामत्र शङ्का
दृष्टा काचिद्भ्रमरभरतो मञ्जरी भज्यमाना।
तस्मादेषा रहसि भवता निर्दयं पीडनीया
मन्दाक्रान्तो बहुतररसं नो ददातीक्षुदण्डः।।''
''सत्यं ब्रवीषि मकरध्वज-वाणपीड
नाहं तदर्थमनसा परिचिन्तयामि।
दासोऽद्य मे विघटितस्तवतुल्यरूपी
सोऽयम्भवेन्नहि भवेदिति मे वितर्कः।''

इहो श्लोकद्वय विदुषी लखिमाक रचल थीक। एकर रचना कियेक भेल एहि प्रसङ्ग मिथिला-दर्पणक[1] 171-72 पृष्ठमे हेतु लिखल अछि, ओकर उल्लेख पिष्ट-पेषण बुझना गेल।

(23) विदुषी चामुण्डा

बी. एन. डब्लू रेलवेक स्टेशन झंझारपूरसँ दू कोश पूव-दक्षिण पचही नामक गाममे न्यायदर्शनक टीकाकार ''वर्द्धमान'' उपाध्याय (झा) रहैत छलाह। ई महाशक्तिक उपासक तथा सदाचार निष्णात छलाह। हिनका पुत्र नहि भेलथिन्ह। ताहि हेतु चिन्तित भय उत्कट तपस्या कयल। स्वप्नमे भगवती कहलथिन्ह, 'तोरा पुत्र नहि लिखल छह, एक पुत्री शीघ्र जन्म लेथुन्ह।' ओही कन्याक नाम छल ''चामुण्डा''।

प्रथा ई अछि जे महासरस्वतीक अंश छलीहि। हिनका उपाध्याय पुत्रवत् शिक्षा

1. रासबिहारी लाल दास, मिथिला दर्पण,1915 / द्वितीय संस्करण 2005 ई.

देल। चामुण्डा देखबामे, बुद्धिमे, ओ मातृ-पितृ-भक्तिमे एक छलीहि; हिनक अवस्था लगभग 17 छल। ई विशिष्ट विदुषीक श्रेणीमे पहुँचि गेलि छलीहि। परन्तु हा हन्त!!! हिनक जीवन-वृत्तान्त करुणापूर्ण ओ आदर्श भय गेल। ई बापक पूजाक हेतु फुल तोड़वा लय कुटीक समीपवर्ती फुलवारीमे गेलीहि। ओहि समय ओम्हर दय मोगल सेना बंगाल विजय लय जाइत छल। सेना-नायक अत्याचारी दृष्टिपातसँ चामुण्डाक रूपलावण्य बाँचि नहि सकल। समय छल प्रभातक, चारु दिश पक्षीक कलरवसँ शोभायमान छल। मन्द-मन्द मलयानिल पुष्पवाटिकाक सुरभिलय पथिकक हृदय आकर्षित करैत छल। सेनापति सेनाक गति रोकि अपन घृणित अभिप्राय चामुण्डाक ओतय प्रकाश कयल। बुद्धिमती चामुण्डा सङ्कटापन्न स्थितिक अनुभव कय वीर क्षत्रिय रमणी जकाँ प्राण दय सतीत्व रक्षाक प्रण कय चुकल छलीहि। तथापि, किछु काल तक सेनापतिक अनुनय विनय कयल। परन्तु कामान्ध दुराचारी पतित यवनक हेतु सब अरण्यरोदन भेल। जखन बलात्कार लय जयबाक शङ्का हिनका हृदयमे उत्पन्न भेल, तखन चामुण्डाक स्वरूप बदलि गेल। हिनक आँखि लाल भय गेल। ओठ फरकय लागल। सम्पूर्ण शरीरमे रोमाञ्च भय गेल। हिनक अद्‌भुत रूप देखि सेनापति डरि गेल। ई कल जोरि पृथ्वीसँ प्रार्थना कयल, ''वसुन्धरे! शीघ्र अपना गर्भमे शरण दय अबलाक लाज राखि लिय।'' एहि प्रार्थना पर रत्नगर्भाक हृदय विदीर्ण भय गेल। भयानक शब्दक सङ्ग पृथ्वीतल फाटि गेल। ससैन्य सेनापति मूर्च्छित भय गेलाह। चामुण्डा पृथ्वीमे समाय सदाक हेतु जीवन-लीला समाप्त कय, मिथिलाक मुख उज्जवल कयल। जाहिठाम पृथ्वीमे चामुण्डा अन्तर्हित भेलीहि, ओ स्थान चामुण्डा देवी स्थान नामसँ अतिप्रसिद्ध अछि।

(24) विदुषी विश्वास देवी

ई राजा शिवसिंहक द्वितीय प्रियतमा विदुषी रानी छलीहि। हिनक राजत्वकाल लक्ष्मी महादेवीक बाद छल, हिनका संस्कृत विद्यामे विशेष पटुता छल। ई बहुत यत्नसँ मिथिलाक शासन करैत छलीहि। हिनक बाद पद्मसिंह राजा भेलाह। पद्मसिंह हिनक दिअर छलथिन्ह। 'मिथिलादर्पण' मे हिनका पद्मसिंहक स्त्री सिद्ध कयलन्हि। परन्तु हमरा कोनो तकर प्रमाण नहि भेटैत अछि। हिनक एक नाम छल ''प्राणवती''। एकर पता हमरा कवि विद्यापतिक कवितासँ लगैत अछि, विद्यापतिक भणितांश भाग ई अछि

''कवि विद्यापति सुनहु मधुर-पति राजा चरित्र अपारे;
राजा शिवसिंह रूपनारायण ''प्राणवती'' कण्ठहारे।।''

हिनक राजत्वकाल खीष्टाब्द 1472 तक सिद्ध होइत अछि। विश्वासदेवीक कोनो रचना उपलब्ध नहि भय सकल। हिनक (विश्वासदेवीक) प्रतिष्ठा लखिमादेवीसँ कम नहि छल।[1]

(25) विदुषी लखिमा

ई भवसिंह देवक चतुर्थस्त्रीगर्भजात हरिसिंह देवक पुत्र नरसिंह देव (दर्पनारायण)क पुत्रवधू छलीहि। हिनका न्याय ओ धर्मशास्त्रमे विशेष पाण्डित्य छल। हिनक पतिक नाम छल- ''चन्द्रसिंह देव''। ई सौन्दर्यमे अभिनव मदन, दानमे कर्ण, विद्यामे वाचस्पति, मानल जाइत छलाह। खी. 1500क बाद तीन वर्ष मिथिला-राज्य सिंहासन पर उपविष्ट भय निःसन्तान चन्द्रसिंह देव स्वर्गीय भय गेलाह। तदुत्तर खीष्टा. 1513 तक विदुषी लखिमा मिथिलाक शासन कयल। हिनका विद्याविनोदमे विशेष अनुराग छल। ई विद्वानक बहुत आदर करैत छलीहि। 'विवादचन्द्र' रचयिता मैथिल मिसरू मिश्र प्रभृति अनेक विशिष्ट विद्वान हिनक आश्रित छलाह। विदुषी लखिमा कखनहु-कखनहु कोनो कठिन प्रश्नक मीमांसा करबाक हेतु पण्डित सभा करैत छलीहि। ओहि सभामे जाहि-जाहि कूट प्रश्नक शान्तिपूर्वक समालोचना होइत छल, ओहिमे अपनो मन्तव्य प्रकाश करैत छलीहि। हिनक निर्णय बहुत सुन्दर होइत छल। ई अपना पतिक नाम पर 'पदार्थ चन्द्र', 'विचार-चन्द्र' तथा

---

1. विश्वासदेवीक रचना उपलब्ध अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ 1936 इ. मे छपल। तदुपरान्त, 1940 ई. मे The Contribution of Women to Sanskrit Literature सीरीजक अन्तर्गत जतीन्द्र विमल चौधरीक सम्पादनमे कलकत्तासँ विश्वासदेवीकृत गङ्गावाक्यावलीक प्रकाशन बीनाबाइक 'द्वारका पत्तल'क सङ्ग भेल अछि। एकर मङ्गलाचरणक दोसर श्लोकमे विश्वास देवीक नाम अछि -

यावद् गङ्गा विभाति त्रिपुर हर जटामण्डलं मण्डयन्ती
मल्लीमाला सुमेरोः शिरसि सितमहा वैजयन्ती जयन्ती।
यावत्पातालमूलं स्फुरदमलरुचिः शेष निर्मोकवल्ली
तावद्विश्वास देव्यां जगति विजयतां गाङ्गवाक्यवलीयम्।।

एकर अन्तिम श्लोक एहि प्रकारेँ अछि -

कियन्निबन्धमालोक्य श्रीविद्यापति सूरिणा
गङ्गावाक्यवली देव्याः प्रमाणैर्विमलीकृता।।

एहि दूनू श्लोकसँ स्पष्ट होइत अछि जे गङ्गावाक्यावली विश्वास देवीक रचना थिक, किन्तु महाकवि विद्यापति द्वारा एकर संशोधन आ' प्रमाण सभ जोड़ि केँ संवर्द्धन कएल गेल। - सम्पादक

'मिताक्षरा-व्याखान', नामक मिताक्षरा-टीकाक रचना कय अपन नाम अमर कयलन्हि। मिथिलाक दार्शनिक विदुषीक इतिश्री हिनकहिसँ भेल, एहिमे किंचितो सन्देह नहि। पण्डित मिसरू मिश्र अपन 'विवादचन्द्र' नामक ग्रन्थमे हिनक परिचय एहि रूपसँ देने छथि

"दर्प्पनारायणनृपतेरासीद्धीराममहादेवी
अलभत सनयं तनयं नरपति गुणराशिपूरितं शूरम्।
श्री मा लखिमा देवी तस्य चन्द्र-सिंहनृपदयितस्य
नाम्ना मिसरूमिश्र द्वारा रचयति विवादचन्द्रमभिरामम्"।

(26) विदुषी चन्द्रकला

ई मैथिल कविकोकिल कविता-राका-कान्त राजपण्डित महामहोपाध्याय विद्यापति ठाकुरक पुत्रवधू छलीहि। हिनक स्वामीक नाम छल "म.म. हरपति ठाकुर"। ई भैरवसिंह (हरिनारायण)क माझिल भाय चन्द्र सिंहदेव नृपतिक पटरानी विदुषी लखिमाक ओतय अधिक सम्मानिता छलीहि। विद्यापतिक बाद मैथिली साहित्य भण्डारकेँ अनुपम कविता-रत्न सँ भरनिहार कविवर चन्दा झा हिनका महामहोपाध्यायक उपाधिसँ विभूषित कयल अछि। हिनक निवासस्थान विसपीमे छल। हिनक संस्कृत रचना अधिक चमत्कृत होइत छल। किंवदन्ती अछि - एक दिन विदुषी लखिमा "भृशं युवा" समस्यापूर्ति करबाक हेतु हिनका कहल। ई पाँच मिनटमे समस्यापूर्ति कय सुनाय देल। विदुषी लखिमा प्रसन्ना भय दस सुवर्णमुद्रा चन्द्रकलादेवीकेँ पुरस्कार देल। ओ श्लोक ई थीक

पदशब्द-लीनहृदयो रूपालङ्कार-भावना निपुणः।

कविरिव वञ्चितनिद्रस्तरुणी तवार्थे भृशं युवा।।"

हिनक रचित ग्रन्थ कोनो उपलब्ध नहि होइत अछि। जन-रव अछि, ई मिथिला भाषाहुमे कविता करैत छलीहि, परन्तु अन्वेषण कयलहु पर हुनक मैथिली कविताक कतहु पता नहि लागल।

(27) कादम्बरी

ई मैथिल-कुल-कमल पद-वाक्य-रत्नाकर रचयिता म.म. गोकुलनाथ उपाध्याय(झा)क विदुषी बालिका छलीहि। ई बुद्धिमती ओ विदुषी होयबाक कारणेँ बापक दुलारु छलीहि। हिनक अस्तित्व अठारहम शताब्दीक अन्तमे मानल जाइत अछि। ई एकजटा महादेवीक

सार्द्ध चतुरक्षरी महामन्त्रक उपासना कय बहुमुखी प्रतिभा लाभ कयने छलीहि। ईअल्प वयसहिमे कराल कालक गाल मध्य-पड़ि गेलीहि। एहि हेतु उपाध्याय बहुत दुःखी भेलाह, ओ हिनका नाम पर प्रबोधकादम्बरी, कुण्डकादम्बरी, ओ कादम्बरी कीर्त्ति-श्लोक नामक ग्रन्थ-रचना कयल। केयो इहो कहैत अछि जे प्रबोधकादम्बरीक अधिकांश भाग विदुषी कादम्बरीक रचना थीक। ओ अपूर्ण रहि गेल तकरा उपाध्याय पूर्ण कयलन्हि। परन्तु ई कथा हम तखनहि सत्य मानल जखन उक्त ग्रन्थक पर्य्यालोचना करबाक हमरा अवसर भेटत।

(28) कवीश्वरी हरिलता

ई लालगंज ग्राम निवासी श्रोत्रिय श्रीविकल झाक जेठि कन्या ओ राघवपुरक बाबू यदुनन्दनसिंहक पुत्रवधू थिकीहि। हिनक जन्म सन 1310 सालक भादवकेँ भेल। ई सात वर्षक व्यवस्थहिमे परिणीता भय सासुर चलि गेलीहि। हिनक पति हरिनन्दन जी उन्माद रोगसँ पीड़ित भेलथिन्ह। ओहि दिन हिनक अवस्था लगभग 16 छल। एक सन्तान (श्री कृष्णनन्दन जी) भेल छलथिन्ह। ई स्वामीक शुश्रूषा बहुत तत्परतासँ करैत ग्रन्थक अध्यवसायमे अपन जीवन बितबैत छलीहि। स्वामी ओ श्वसुरक स्वर्गवासक बाद जमीन्दारीक कार्य्य सम्पादन बहुत चतुरतासँ कय रहल छथि। हिनक कविता बहुत सुन्दर होइत अछि। श्रुति-मधुरता ओ रस-प्रचुरता हिनक कविताकेँ भेटैत अछि। विश्वस्तसूत्रसँ पता लागल अछि जे हिनक बनाओल गीतसभ शीघ्र काशीसँ प्रकाशित होयत, अतएव उल्लेख नहि कयल।[1]

(29) श्रीमती शाम्भवी देवी

ई म.म. डा. श्री गङ्गानाथ झाक छोटि कन्या ओ महावैयाकरण जनार्दन झाक पुत्रवधू थिकीहि। हिनक जन्म सन् 1321 सालमे भेल। हिनक पवित्र परिणय सन् 1331 सालक जेठ मासमे लोहना विद्यापीठक वर्तमान न्यायाध्यापक पं. श्री दुर्गाधर झा(1907 -07 दिसम्बर, 1987 ई.- सं.), न्यायाचार्य्यसँ भेल। ई सात वर्ष बराबरि अङरेजी हिन्दी

1. कवीश्वरी हरिलता/मोदवतीक भजन संग्रह 'भजनावली' एवं 'भजनमालिका' प्रकाशित अछि। पतिक स्मृतिमे हरिनन्दन सिंहक स्मारक ट्रस्टक स्थापना कएल जाहिसँ मैथिलीक अनेकहु महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक प्रकाशन भेल अछि। *भजनमालिकाक* पुस्तक समीक्षा 'भारती'(मइ1937 ई.) मे अछि। हिनक देहान्त 12 सितम्बर, 1985 ई.केँ भए गेल। विशेष उत्सुक सुधीजन डा.रमानन्द झा 'रमण' लिखित एवं मैथिली अकादमी, पटनासँ छपल 'मैथिली नवीन साहित्य'(1982 ई.) देखि सकैत छथि। - सम्पादक

ओ बंगलाक शिक्षा प्रयागमे प्राप्त कयल। हिनक सङ्गीत ओ शिल्पकला विलक्षण अछि। ई गद्यक सिद्धहस्त लेखिका छथि। हिनक ''सोदरस्नेह'' शीर्षक लेख भूतपूर्व 'मिथिला'[1] नामक पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

(30) श्रीमती आद्या देवी

ई दिनाजपुर जिलान्तर्गत ''रजौर'' ग्राम निवासी पं. श्री बदरीनारायण राय मुनसिफक कन्या ओ म.म.म. डा. श्री गङ्गानाथ झाक छोटि पुतोहु थिकीहि। हिनक विवाह सन् 1341 सालमे पं. श्री आदित्यनाथ झा (18 अगस्त, 1911-18 जनवरी, 1972 ई. - सम्पादक), आई.सी.एस.क सङ्ग भेल। ई ओहि समय थर्ड क्लासक कोर्स पढ़ि चुकल छलीहि। सम्प्रति ई माइट्रिक ग्रन्थ पढ़ि रहल छथि। हिनक शील स्वभाव बहुत सुन्दर अछि। ई बंगला, हिन्दी, मैथिली ओ अङरेजी धुरझार बजैत छथि। एहि तरहक पति-पत्नी हमरा दृष्टिमे बहुत शोभित होइत अछि। हमर शुभाकांक्षा यैह अछि जे एहि तरहक दम्पति मिथिला मध्य सहस्र संख्यामे दृष्टिगोचर हो।[2]

(31) श्रीमती इन्द्रमाया देवी

हिनक विशेष परिचय हमरा नहि उपलब्ध भय सकल। सन् 1337 सालक ''मिथिला''क सातम अंकमे हिनक रचित एक पद्य पढ़ल। ताहिसँ अनुभव भेल जे हिनक हृदय-सरोवरमे साहित्य-सरोजक विकास भय रहल अछि। ओ पद्य ई थीक

श्याम! पुनि बंसी आबि बजाउ।
श्रवण सुखद ओ स्वरक न्याससँ मनमे मोद बढ़ाउ।
पीत वसनसँ निर्गत आभा चयमे देह नुकाउ
माय यशोदा केर वचन सुनि असमय हास देखाउ।
चोरी कय निजबन्धु सभक घर ऊखरि बन्धन पाउ।
''माया'' भय निज कपट खेलसँ प्रेमक सोत बहाउ।।[3]

(32) श्रीमती श्यामकुमारी देवी (लीला)

ई स्वनामधन्य श्री जयनारायण मल्लिक बी.ए. (आनर्स)क धर्मपत्नी थिकीहि।

1. शाम्भवी देवीक कथा - 'सोदर स्नेह', मिथिला, अंक 7, कार्त्तिक सन 1337 साल एवं 'आशा परम्परा',मिथिला, अंक4, श्रावण सन1337 साल। हिनक देहावसान 17अप्रैल,1987केँ भए गेलनि।
2. आद्या झाक मैथिलीमे अनेक पोथी प्रकाशित अछि। सामाजिक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अवदानक लेल भारत सरकार द्वारा पद्मश्रीसँ अलंकृत छलीह। 23 अगस्त, 1991केँ देहान्त भए गेलनि।
3. प्रार्थना, मिथिला,अंक 7, कार्त्तिक सन 1337 साल - सम्पादक

हिनक पद्य ई थीक

शोभाधाम महाललाम मिथिला श्रीस्वर्गतुल्या पुरी
विद्यावैभव कीर्त्तिज्ञान निपुणा प्राचीनमे जे छली।
भै गेली अतिदीन हीन मलिना दारिद्र-सम्पीडिता
ईर्ष्या द्वेष विलासिता रघुपते! अज्ञानता नष्ट हो।।[1]

(33) श्रीमती पञ्चदेवी देवी

ई उक्त मल्लिकजीक कनिष्ठ भगिनी थिकीहि। हिनक कविता ई थीक

हो शिक्षाक प्रचार सर्व महिलामे प्रेम-सञ्चार हो
हो- आदर्श पवित्र जीवन सदा संस्कार सम्पन्न हो।
हो सन्तान सदैव हृष्ट बलवान् हो अन्नदा मेदिनी
स्वामी हो पुनरेव प्राप्त भगवन्! कीर्त्तिध्वजा व्योममे।[2]

समाप्त

1. मिथिला, अंक 11, कार्त्तिक सन 1337 साल
2. मिथिला, अंक 11, कार्त्तिक सन 1337 साल - सम्पादक

[illegible] लिखित तीन मैथिली पुस्तकों का हुआ लोकार्पण

साहित्य में महिलाओं का सफल हस्तक्षेप

[illegible]

लोकार्पण समारोह

- [illegible] ने आयोजित किया लोकार्पण समारोह
- मैथिली साहित्य में महिलाओं का सफल हस्तक्षेप
- सभी तीन पुस्तकों की रचयिताएं महिलाएं
- मैथिली साहित्य में पुस्तकें साबित होंगी उपादेय व कालजयी
- नयी पीढ़ी को प्रेरणा ग्रहण करने की सलाह
- समारोह में महिलाओं की भागीदारी सराहनीय

[illegible]

[illegible] कहा कि मिथिला आदि काल से [illegible] रहा है। वर्तमान भी उसी [illegible] पर चलने का प्रयास कर रहा है। इस मौके पर डा. जगदीश मिश्र, डा. [illegible] झा, डा. फूलचंद्र मिश्र 'रमण', डा. [illegible] कुमार चौधरी, अशोक झा, कर्नल [illegible] पराशर, रामनरेश साहु, अशोक कुमार चौधरी आदि ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी पुस्तकें मैथिली साहित्य के लिये उपादेय एवं कालजयी साबित होंगी। सब ने महिलाओं के साहित्यिक क्षेत्र में इस सफल हस्तक्षेप की सराहना करते हुए मैथिली साहित्य के भविष्य को उज्जवल बताया। डा. वीणा ठाकुर ने अध्यक्षीय भाषण में पूर्व पीढ़ी की लेखिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आगे की पीढ़ी को इससे प्रेरणा लेने की अपेक्षा व्यक्त की। अतिथियों का स्वागत श्रीमती [illegible] झा ने किया। कार्यक्रम का संचालन [illegible] झा तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. [illegible] चौधरी ने किया।

07 • मुजफ्फरपुर • सोमवार • 07 अक्टूबर 2013



पुस्तकों का लोकार्पण करतीं वीणा ठाकुर व अन्य

लोकार्पण
06/10/2013

सम्पादन :

डा. रमानन्द झा 'र

अखियासल प्रकाश

मुजफ्फरपुर, सोमवार, 7 अक्तूबर, 2013
www.prabhatkhabar.com

समारोह में तीन मैथिली पुस्तकों का किया गया लोकार्पण



पुस्तक का लोकार्पण करते अतिथि .

प्रतिनिधि, दरभंगा .

सामाजिक -संस्कृति संस्था साक्षर दरभंगा द्वारा सीतायन सभागार में आयोजित समारोह में तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया. चित्रलेखा देवी रचित पुस्तक 'अबोधनाथ जीवनी' एवं काठक महादेव का लोकार्पण वीणा ठाकुर एवं मोहनी ने किया. जबकि अरूंधती देवी रचित मिथिलाक विदुषी महिला का लोकार्पण चित्रलेखा देवी ने किया. आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए गौरी झा ने काठक उपन्यास की ऐतिहासिक एवं तत्कालिन सामाजिक परिवेश का चित्रण किया. डॉ नीरजा रेणु ने अपने संबोधन में महिलाओं के आत्मबल का विश्लेषण करते हुए कहा कि स्त्री सदैव सबला रही है. मिथिलाक विदुषी महिला पर बोलते हुए डॉ रमानंद झा रमण ने मिथिला को विदूषियों का गढ़ कहा है. इस मौके पर डॉ जगदीश मिश्र, डॉ भीमनाथ झा, डॉ फुलचंद्र मिश्र रमण, डॉ श्रवण कुमार चौधरी, अशोक झा, कर्नल अरूण पराशर, राम नरेश साहु, अशोक कुमार सहनी, डॉ शुभचंद्र झा, डॉ मित्रनाथ झा आदि ने विचार व्यक्त किया. मंच संचालन कमलेश झा एवं धन्यवाद ज्ञापन उषा चौधरी ने किया.

विदुषीक गढ़ रहल अछि मिथिला

तीन गोट पोथीक भेल लोकार्पण

सोम • 7 अक्टूबर • 2013 2



दरभंगा, 6 अक्टूबर (मिआसं)। सामाजिक सांस्कृतिक संस्था साक्षर केर तत्वावधानमे रविकेँ लोकार्पण समारोहक आयोजन कयल गेल। नवरात्रिक अवसरपर भेल एहि कार्यक्रमक विशेषता रहल जे एकर अध्यक्षता आ लोकार्पणमे महिला लोकनिक सहभागिता रहलनि। अध्यक्षता केलनि साहित्य अकादमी दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि डॉ. वीणा ठाकुर। ओतहि चित्रलेखा देवीक जीवनी पोथी 'अबोधनाथ' आ 'काठक महादेव' उपन्यास केर लोकार्पण डॉ. वीणा ठाकुर आ मोहिनी झा केलनि। अरुन्धती राय द्वारा रचित 'मिथिलाक विदुषि महिला' केर लोकार्पण चित्रलेखा देवी केलनि। आगत अतिथिक स्वागत गौरी झा केलनि। एहि अवसरपर डॉ. पुतुल सिंह काठक महादेव उपन्यासक समीक्षा करैत ओकर ऐतिहासिक एवं वर्तमान सामाजिक परिवेशक चित्रण केलनि।

डॉ. नीरजा रेणु अबोधनाथ केर जीवनीमे लेखिका द्वारा महिलाक आत्मबलक विश्लेषण करैत कहलनि जे महिला सदैवसँ अबला रहली अछि। मिथिलाक विदुषी महिलापर अपन समीक्षात्मक विश्लेषणमे डॉ. रमानन्द झा रमण कहलनि जे मिथिला आदि कालसँ विदुषीक गढ़ रहल अछि। एहि अवसरपर डॉ. जगदीश मिश्र, डॉ. भीमनाथ झा, डॉ. फूलचन्द्र मिश्र रमण, डॉ. श्रवण कुमार चौधरी, अशोक झा, कर्नल अरुण परासर, रामनरेश साहु, अशोक कुमार चौधरी, डॉ. शम्भुनाथ झा, डॉ. मित्रनाथ झा आदि एहि पुस्तकक कालजयी रचना मानलनि। ओतहि अपन अध्यक्षीय भाषणमे डॉ. वीणा ठाकुर पूर्व पीढ़ी द्वारा रचित पोथि पुस्तक लेल लेखिकाक प्रति आभार प्रकट केलनि। संयोजक कमलेश झाक सञ्चालनमे भेल कार्यक्रमक समापन उमा चौधरीक धन्यवाद ज्ञापनसँ सम्पन्न भेल।